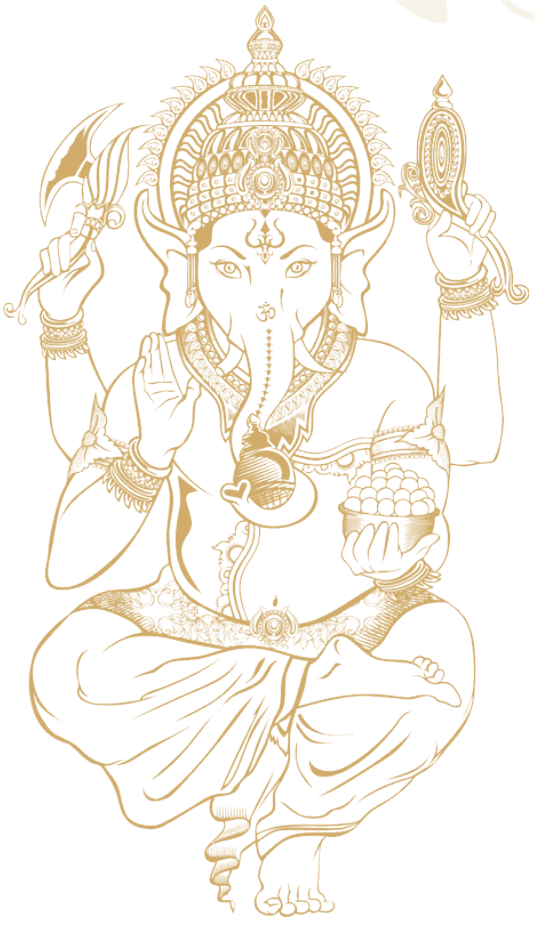

Mr. Vikrant Sankle

14 Dec 1989

12:30 PM

Khandwa

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 119610201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**14/12/1989**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**12:30:00 घंटे**
इष्ट	13:57:59 घटी
स्थान	**Khandwa**
राज्य	Madhya Pradesh
देश	India

अक्षांश	21:49:00 उत्तर
रेखांश	76:23:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:24:28 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	12:05:32 घंटे
वेलान्तर	00:05:23 घंटे
साम्पातिक काल	17:37:15 घंटे
सूर्योदय	06:54:48 घंटे
सूर्यास्त	17:43:28 घंटे
दिनमान	10:48:40 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	28:32:50 वृश्चिक
लग्न के अंश	28:47:37 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी	**मिथुन - बुध**
नक्षत्र-चरण	**पुनर्वसु - 1**
नक्षत्र स्वामी	गुरु
योग	शुक्ल
करण	गर
गण	देव
योनि	मार्जार
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	के-केवल
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1911	मार्गशीर्ष	23
पंजाबी	संवत : 2046	मार्गशीर्ष	29
बंगाली	सन् : 1396	मार्गशीर्ष	28
तमिल	संवत : 2046	कार्तिगई	29
केरल	कोल्लम : 1165	वृश्चिकम	29
नेपाली	संवत : 2046	मार्गशीर्ष	29
चैत्रादि	संवत : 2046	पौष	कृष्ण 2
कार्तिकादि	संवत : 2046	मार्गशीर्ष	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 2
तिथि समाप्ति काल _____: 16:48:28
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: आर्द्रा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 12:11:01 घंटे
जन्म योग _____: पुनर्वसु
सूर्योदय कालीन योग ____: शुक्ल
योग समाप्ति काल _____: 14:29:53 घंटे
जन्म योग _____: शुक्ल
सूर्योदय कालीन करण ____: गर
करण समाप्ति काल _____: 16:48:28 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 00:47:25
भभोग _____: 57:08:25
भोग्य दशा काल _____: गुरु 15 वर्ष 9 मा 9 दि

घात चक्र

मास _____: आषाढ़
तिथि _____: 2-7-12
दिन _____: सोमवार
नक्षत्र _____: स्वाति
योग _____: परिघ
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: मूषक
लग्न _____: कर्क
सूर्य _____: मीन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: मेष
बुध _____: मकर
गुरु _____: वृष
शुक्र _____: मिथुन
शनि _____: कुम्भ
राहु _____: कर्क

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

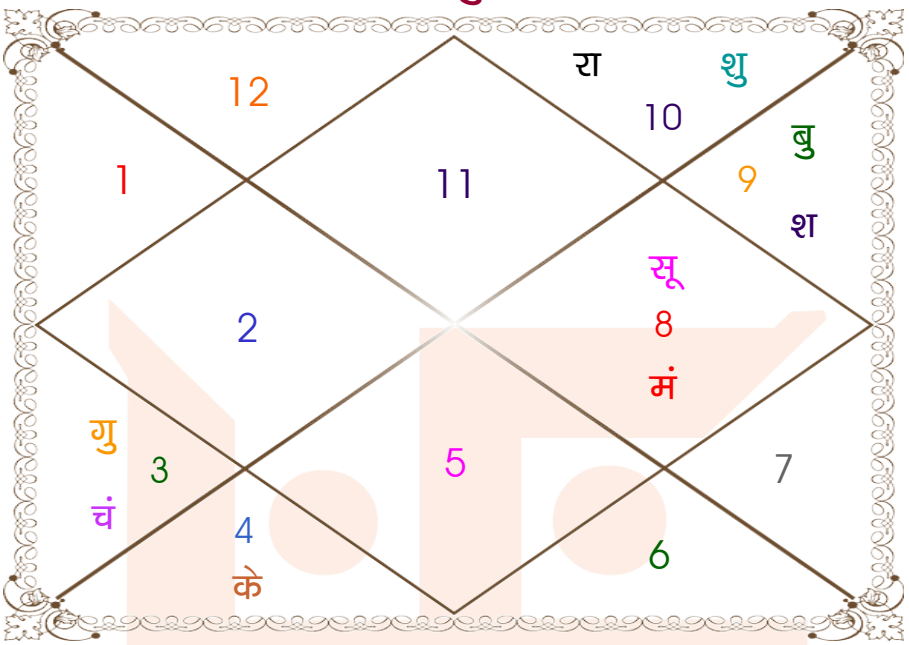

चन्द्र कुंडली

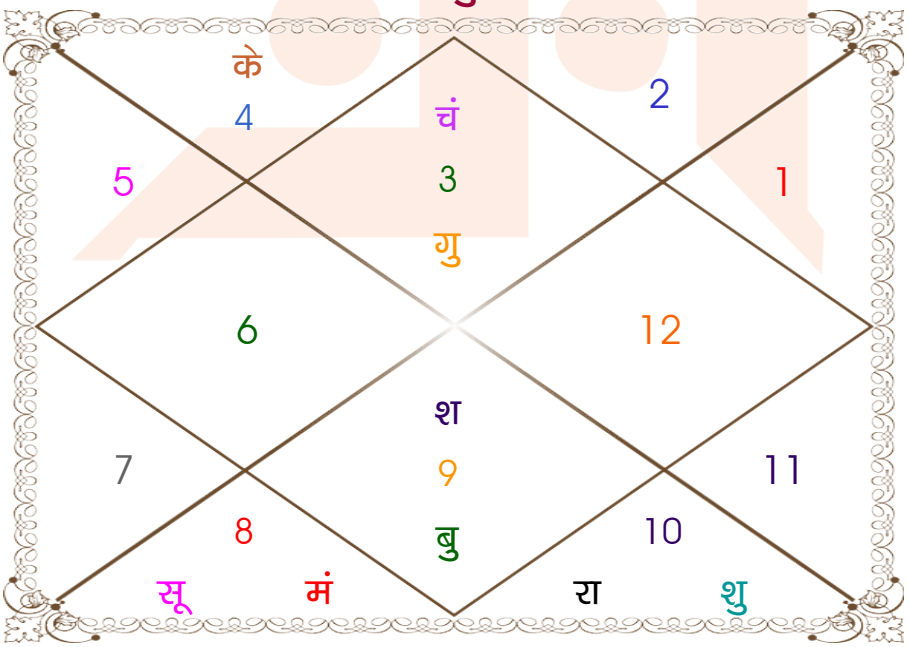

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

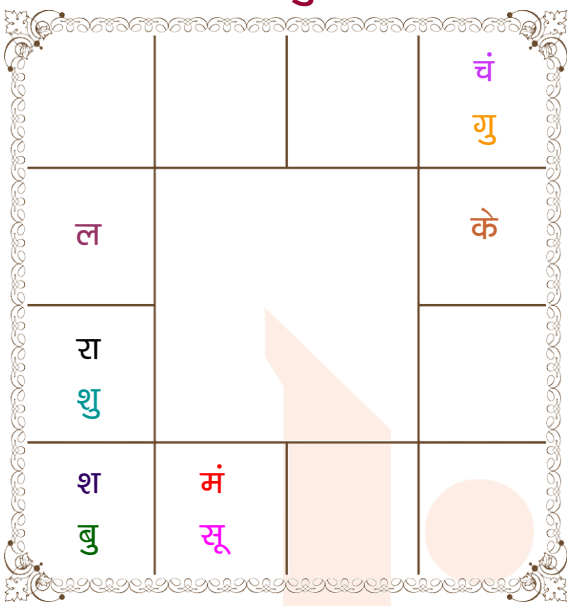

लग्न कुंडली

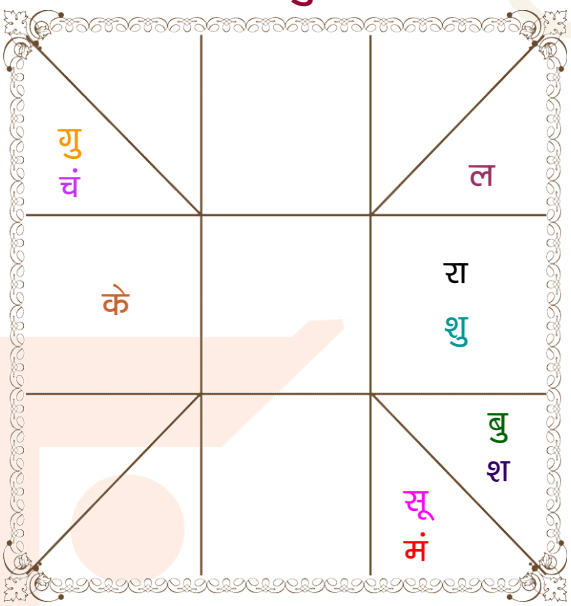

विंशोत्तरी
गुरु 15वर्ष 9मा 9दि

गुरु

14/12/1989

24/09/2109

गुरु	23/09/2005
शनि	23/09/2024
बुध	23/09/2041
केतु	23/09/2048
शुक्र	23/09/2068
सूर्य	23/09/2074
चन्द्र	23/09/2084
मंगल	23/09/2091
राहु	24/09/2109

योगिनी
पिंगला 1वर्ष 11मा 20दि

मंगला

04/12/2024

04/12/2025

मंगला	14/12/2024
पिंगला	03/01/2025
धान्या	02/02/2025
भ्रामरी	15/03/2025
भद्रिका	05/05/2025
उल्का	05/07/2025
सिद्धा	14/09/2025
संकटा	04/12/2025

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	28:47:37	474:15:07	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	सूर्य	---
सूर्य			वृश्चि	28:32:50	01:01:00	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	मित्र राशि
चंद्र			मिथु	20:11:14	14:12:12	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	मित्र राशि
मंगल			वृश्चि	03:33:50	00:41:34	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	स्वराशि
बुध			धनु	16:09:36	01:25:52	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	सम राशि
गुरु	व		मिथु	13:51:39	00:07:37	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			मक	08:34:22	00:30:36	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
शनि			धनु	19:49:17	00:06:47	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
राहु	व		मक	24:09:39	00:05:39	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	24:09:39	00:05:39	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	मित्र राशि
हर्ष			धनु	10:58:29	00:03:33	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	---
नेप			धनु	17:38:21	00:02:10	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	मंगल	---
प्लूटो			तुला	22:48:24	00:02:04	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	---
दशम भाव			धनु	01:03:45	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:43:11

लग्न-चलित

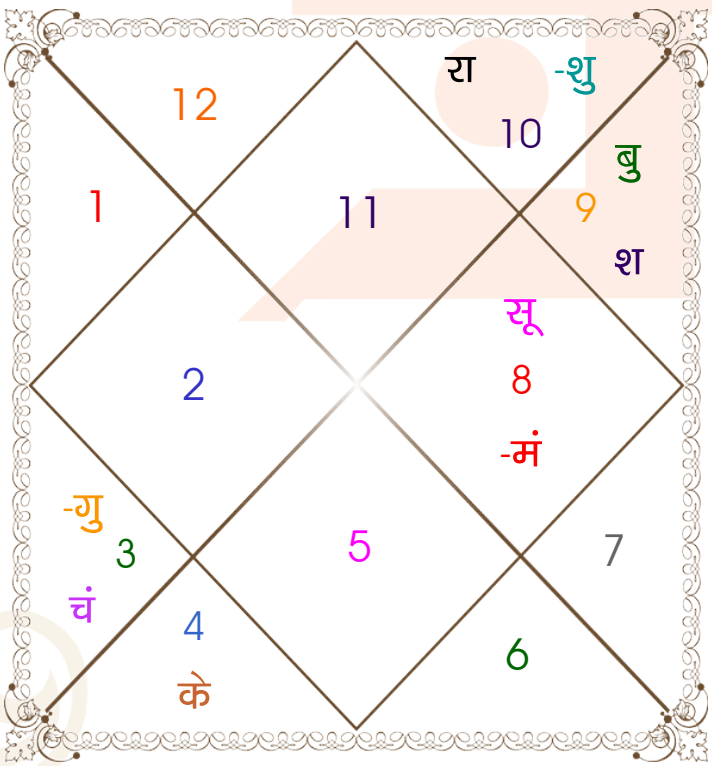

चन्द्र कुंडली

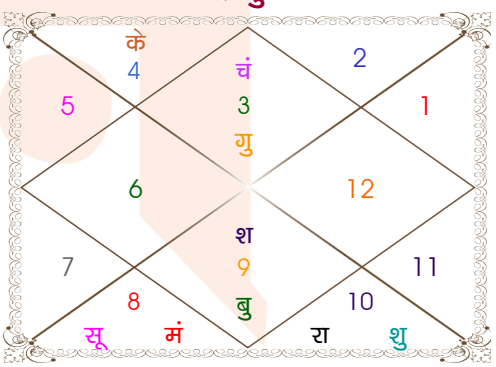

नवमांश कुंडली

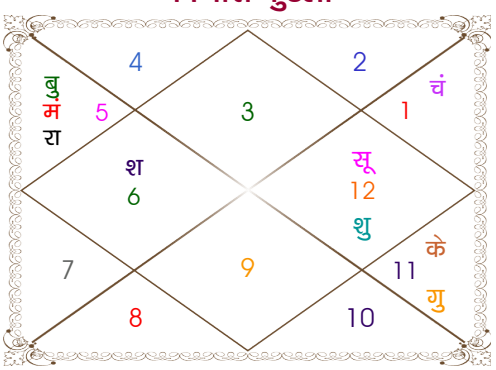

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	14:10:18	कुम्भ	28:47:37
2	मीन	14:10:18	मीन	29:32:59
3	मेष	14:55:41	वृष	00:18:22
4	वृष	15:41:03	मिथुन	01:03:45
5	मिथुन	15:41:03	कर्क	00:18:22
6	कर्क	14:55:41	कर्क	29:32:59
7	सिंह	14:10:18	सिंह	28:47:37
8	कन्या	14:10:18	कन्या	29:32:59
9	तुला	14:55:41	वृश्चिक	00:18:22
10	वृश्चिक	15:41:03	धनु	01:03:45
11	धनु	15:41:03	मकर	00:18:22
12	मकर	14:55:41	मकर	29:32:59

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	28:47:37
2	मेष	05:42:41
3	वृष	05:35:54
4	मिथुन	01:03:45
5	मिथुन	25:52:46
6	कर्क	23:52:59
7	सिंह	28:47:37
8	तुला	05:42:41
9	वृश्चिक	05:35:54
10	धनु	01:03:45
11	धनु	25:52:46
12	मकर	23:52:59

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली

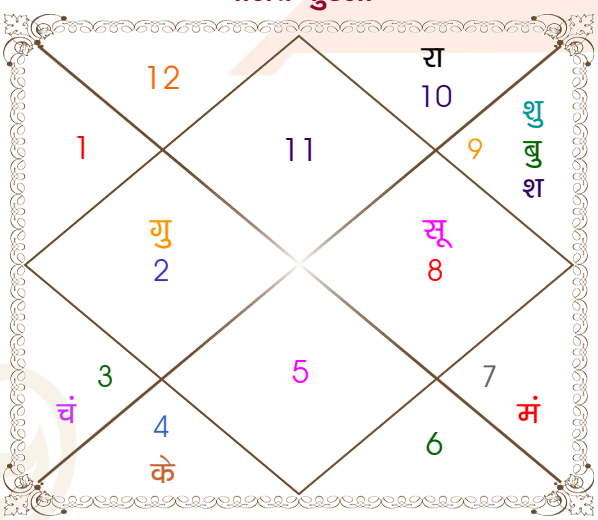

भाव कुंडली

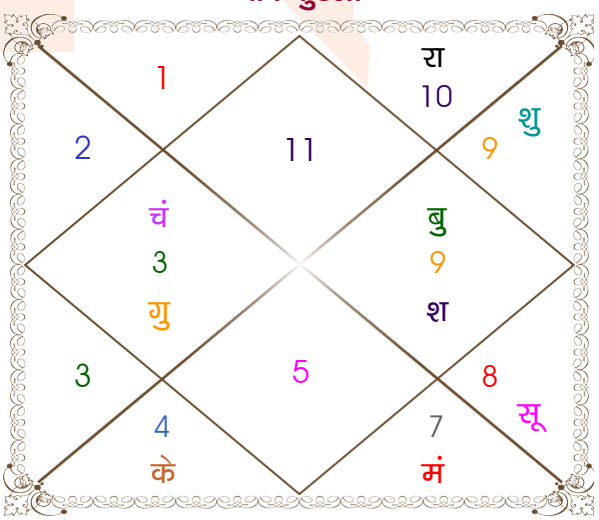

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	बाल	मुदित	शयन	2.70	31 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	वृद्ध	मुदित	भोजन	6.64	52 %
मंगल	कलत्र	भ्रातृ	मृत	स्वस्थ	शयन	3.98	52 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	युवा	निपीदित	कौतुक	1.23	74 %
गुरु	पुत्र	धन	युवा	खल	शयन	2.47	43 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	वृद्ध	मुदित	शयन	6.02	49 %
शनि	भ्रातृ	आयु	वृद्ध	निपीदित	सभा	1.67	43 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	मुदित	नेत्रपाणि	0.00	36 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	मुदित	सभा	0.00	36 %
कुल						24.71	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली

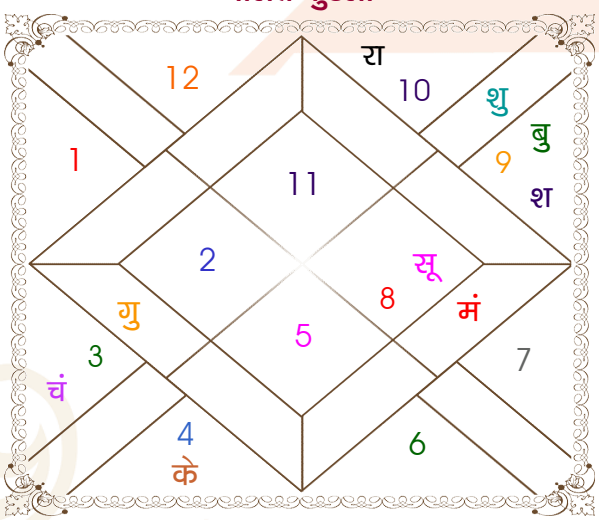

लग्न-चलित

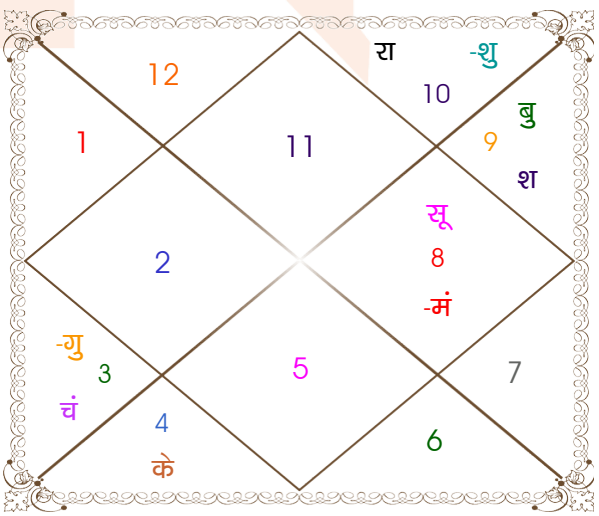

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

सुदर्शन चक्र

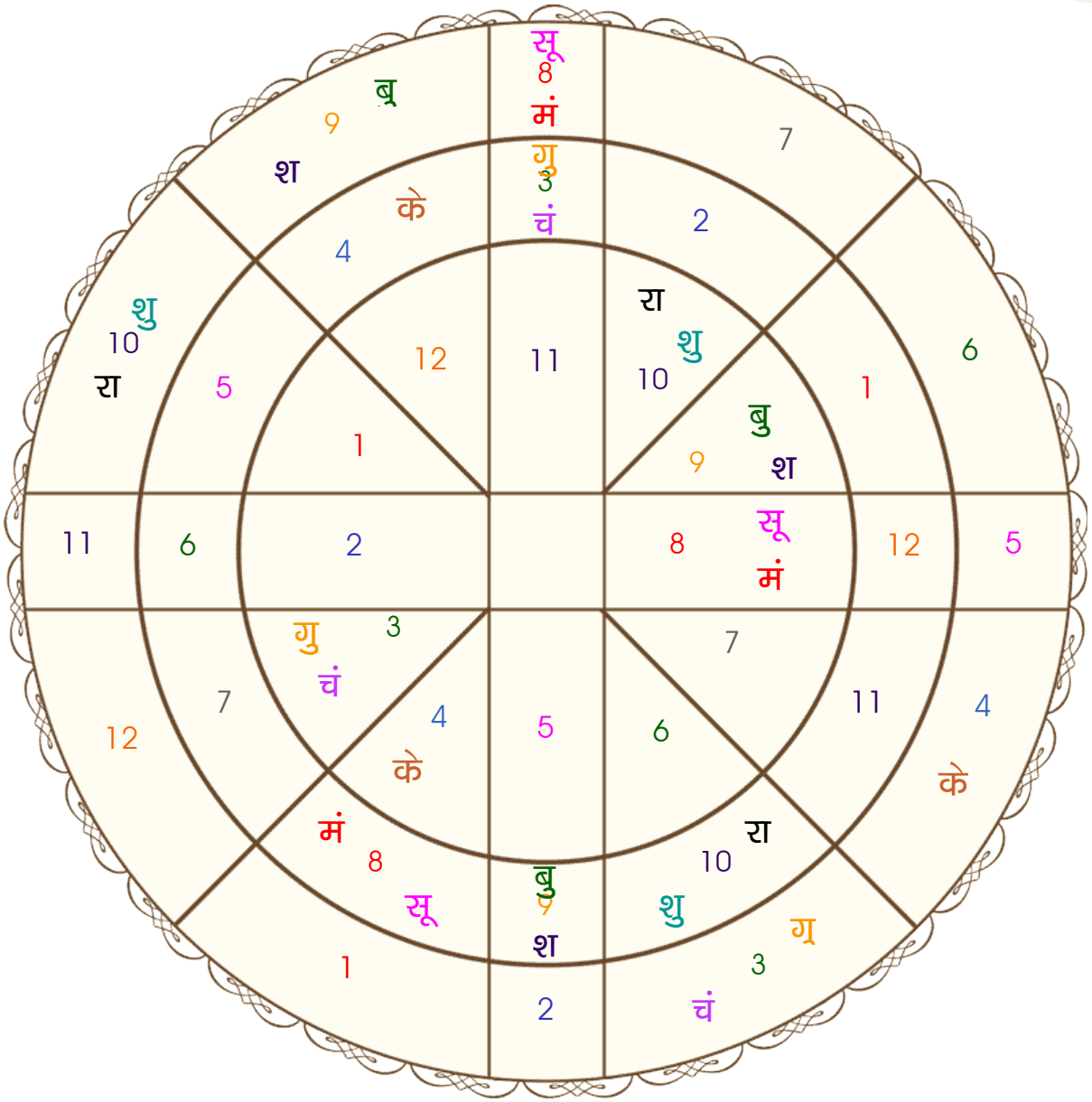

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : गुरु 15 वर्ष 7 मास 23 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		वृश्चि	28:39:13	मंगल	बुध	शनि	शुक्र
चंद्र		मिथु	20:17:37	बुध	गुरु	गुरु	शनि
मंगल		वृश्चि	03:40:13	मंगल	शनि	शनि	बुध
बुध		धनु	16:15:59	गुरु	शुक्र	चंद्र	चंद्र
गुरु	व	मिथु	13:58:02	बुध	राहु	बुध	गुरु
शुक्र		मक	08:40:45	शनि	सूर्य	शुक्र	राहु
शनि		धनु	19:55:40	गुरु	शुक्र	राहु	चंद्र
राहु	व	मक	24:16:03	शनि	मंगल	राहु	राहु
केतु	व	कर्क	24:16:03	चंद्र	बुध	राहु	राहु
हर्ष		धनु	11:04:53	गुरु	केतु	शनि	राहु
नेप		धनु	17:44:44	गुरु	शुक्र	मंगल	बुध
प्लूटो		तुला	22:54:47	शुक्र	गुरु	शनि	सूर्य

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कुंभ	28:54:00	शनि	गुरु	सूर्य	मंगल
2	मेष	05:49:04	मंगल	केतु	राहु	राहु
3	वृष	05:42:17	शुक्र	सूर्य	बुध	शुक्र
4	मिथु	01:10:08	बुध	मंगल	बुध	राहु
5	मिथु	25:59:09	बुध	गुरु	केतु	सूर्य
6	कर्क	23:59:23	चंद्र	बुध	मंगल	शुक्र
7	सिंह	28:54:00	सूर्य	सूर्य	मंगल	बुध
8	तुला	05:49:04	शुक्र	मंगल	चंद्र	राहु
9	वृश्चि	05:42:17	मंगल	शनि	बुध	बुध
10	धनु	01:10:08	गुरु	केतु	शुक्र	सूर्य
11	धनु	25:59:09	गुरु	शुक्र	केतु	शुक्र
12	मक	23:59:23	शनि	मंगल	मंगल	शुक्र

के.पी. अयनांश : 23:36:48

फॉरच्युना : कन्या 20:32:24

लग्न कुंडली

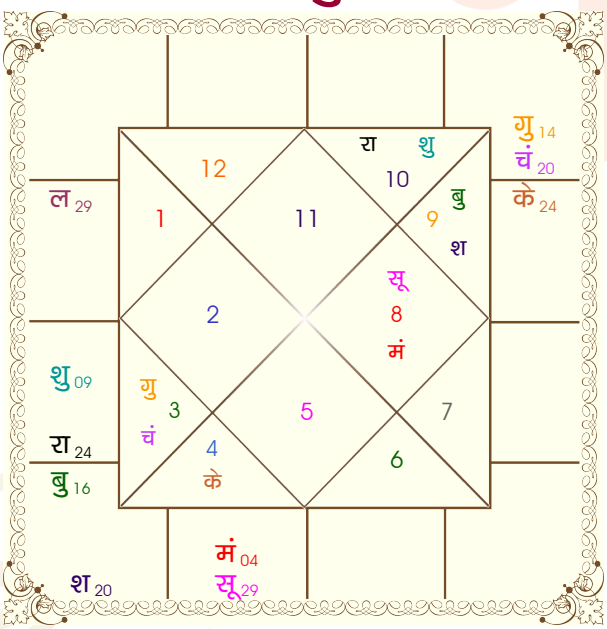

भाव कुंडली

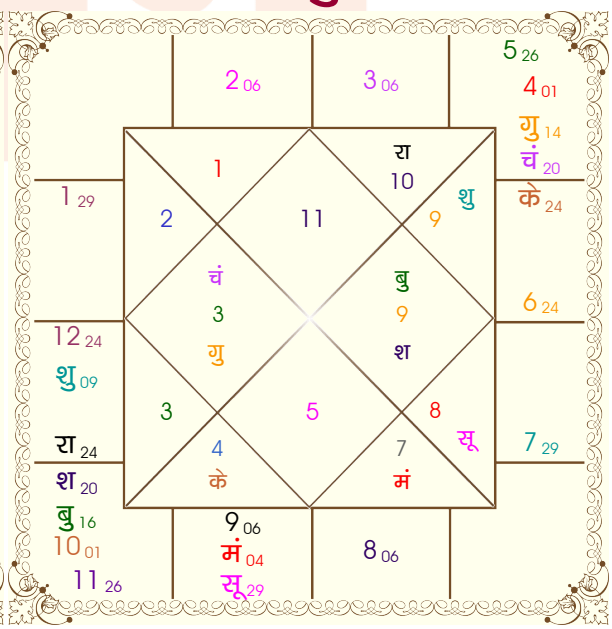

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- शनि-
2	मंगल- राहु-
3	बुध- शुक्र- शनि-
4	सूर्य- चंद्र+ बुध- गुरु, केतु-
5	सूर्य- बुध- केतु-
6	चंद्र- केतु,
7	सूर्य- शुक्र-
8	मंगल, बुध- शुक्र- शनि- राहु,
9	सूर्य, मंगल- शुक्र, राहु-
10	सूर्य, चंद्र- मंगल, बुध, गुरु- शनि, केतु,
11	चंद्र- बुध, गुरु- शुक्र, शनि,
12	मंगल- गुरु, शनि- राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 5- 7- 9, 10,
चंद्र	4+ 6- 10- 11-
मंगल	1- 2- 8, 9- 10, 12-
बुध	3- 4- 5- 8- 10, 11,
गुरु	4, 10- 11- 12,
शुक्र	3- 7- 8- 9, 11,
शनि	1- 3- 8- 10, 11, 12-
राहु	2- 8, 9- 12,
केतु	4- 5- 6, 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	सूर्य
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	मं	श
2	--	--	रा	मं
3	--	--	बु श	शु
4	चं	चं गु	सू के	बु
5	--	--	सू के	बु
6	--	के	--	चं
7	--	--	शु	सू
8	रा	मं	बु श	शु
9	शु	सू	रा	मं
10	सू मं के	बु श	चं	गु
11	बु श	शु	चं	गु
12	गु	रा	मं	श

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	7	3,7	वृश्चिक	9
चंद्र	6	---	मिथुन	4
मंगल	2,9	4,8,12	वृश्चिक	8
बुध	4,5	6	धनु	10
गुरु	10,11	1,5	मिथुन	4
शुक्र	3,8	11	मकर	11
शनि	1,12	9	धनु	10
राहु	---	---	मकर	12
केतु	---	2,10	कर्क	6

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	4,5	6	10	1,12	9	10
चंद्र	10,11	1,5	4	10,11	1,5	4
मंगल	1,12	9	10	1,12	9	10
बुध	3,8	11	11	6	---	4
गुरु	---	---	12	4,5	6	10
शुक्र	7	3,7	9	3,8	11	11
शनि	3,8	11	11	---	---	12
राहु	2,9	4,8,12	8	---	---	12
केतु	4,5	6	10	---	---	12

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	238.55	80.19	213.56	256.16	73.86	278.57	259.82	294.16	114.16	250.97	257.64	202.81
सूर्य	--	--	--	--	--	नवां	--	तृती	--	युति	--	--
238.55	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.00	0.00	1.23	0.00	2.66	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	सप्त	युति	--	सप्त	--	--	सप्त	सप्त	पंच
80.19	0.00	0.00	0.00	9.12	7.88	0.00	9.99	0.00	0.00	5.70	9.65	2.32
मंगल	--	--	--	--	8वां	तृती	--	4था	--	--	अष्ट	युति
213.56	0.00	0.00	0.00	0.00	4.73	0.77	0.00	5.53	0.00	0.00	0.12	4.30
बुध	--	सप्त	--	--	सप्त	--	युति	--	--	युति	युति	--
256.16	0.00	9.12	0.00	0.00	9.71	0.00	9.27	0.00	0.00	8.56	9.88	0.00
गुरु	--	युति	--	सप्त	--	--	सप्त	--	नवां	सप्त	सप्त	5वां
73.86	0.00	7.88	0.00	9.71	0.00	0.00	8.11	0.00	0.89	9.55	9.23	5.92
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
278.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	सप्त	--	युति	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	--
259.82	0.00	9.99	0.00	9.27	8.11	0.00	0.00	0.00	0.00	6.01	9.74	0.00
राहु	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
294.16	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	पंच	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	चतु
114.16	1.23	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	2.81
हर्ष	युति	सप्त	--	युति	सप्त	--	युति	--	--	--	युति	--
250.97	2.66	5.70	0.00	8.56	9.55	0.00	6.01	0.00	0.00	0.00	7.66	0.00
नेप	--	सप्त	--	युति	सप्त	--	युति	--	--	युति	--	--
257.64	0.00	9.65	0.00	9.88	9.23	0.00	9.74	0.00	0.00	7.66	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	--	--	तृती	चतु	--	--	तृती	--
202.81	0.00	0.00	4.30	0.00	0.00	0.00	2.13	2.81	0.00	0.00	0.65	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	328.79	359.55	30.31	61.06	90.31	119.55	148.79	179.55	210.31	241.06	270.31	299.55
सूर्य	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
238.55	0.00	2.90	0.00	9.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.66	0.00	2.90
चंद्र	--	--	--	--	युति	नवां	--	--	--	--	सप्त	--
80.19	0.00	0.00	0.00	0.00	4.89	0.54	0.00	0.00	0.00	0.00	4.89	0.00
मंगल	पंच	--	--	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती	4था
213.56	0.95	0.00	0.00	9.66	0.00	0.00	0.00	0.00	9.42	0.00	1.97	9.13
बुध	पंचा	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
256.16	0.54	0.00	0.23	0.00	0.89	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.89	0.00
गुरु	9वां	--	--	युति	--	अष्ट	--	5वां	--	सप्त	--	9वां
73.86	0.07	0.00	0.00	2.29	0.00	0.47	0.00	0.72	0.00	2.29	0.00	0.72
शुक्र	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
278.57	0.00	0.00	0.00	0.00	6.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.48	0.00
शनि	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	नवां
259.82	5.90	0.00	0.00	0.00	4.55	0.00	0.00	5.24	0.00	0.00	4.55	0.91
राहु	--	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
294.16	0.00	0.48	0.00	0.00	0.00	8.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.45
केतु	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	सप्त
114.16	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.45	0.00	0.48	0.00	0.00	0.00	8.45
हर्ष	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--
250.97	0.00	0.00	0.00	5.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--
257.64	0.24	0.00	0.00	0.00	2.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
202.81	0.01	0.00	7.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.07	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	328.79	5.71	35.60	61.06	85.88	113.88	148.79	185.71	215.60	241.06	265.88	293.88
सूर्य	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
238.55	0.00	0.00	0.00	9.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.66	0.00	1.03
चंद्र	--	--	--	--	युति	--	--	--	अष्टां	--	सप्त	--
80.19	0.00	0.00	0.00	0.00	8.28	0.00	0.00	0.00	0.80	0.00	8.28	0.00
मंगल	पंच	--	--	8वां	--	--	--	--	युति	--	--	4था
213.56	0.95	0.00	0.00	9.66	0.00	0.00	0.00	0.00	9.77	0.00	0.00	5.29
बुध	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
256.16	0.54	0.00	0.00	0.00	5.25	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.25	0.00
गुरु	9वां	--	--	युति	--	नवां	--	5वां	--	सप्त	सप्त	--
73.86	0.07	0.00	0.00	2.29	0.00	1.00	0.00	6.57	0.00	2.29	3.07	0.00
शुक्र	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
278.57	0.00	2.20	2.14	0.00	2.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.39	0.00
शनि	3रा	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
259.82	5.90	0.00	0.34	0.00	8.05	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.05	0.00
राहु	--	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
294.16	0.00	0.76	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00
केतु	--	--	--	--	--	युति	--	पंचा	--	--	--	सप्त
114.16	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.76	0.00	0.00	0.00	10.00
हर्ष	--	पंच	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
250.97	0.00	0.57	0.00	5.08	0.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.10	0.00
नेप	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--
257.64	0.24	0.00	0.00	0.00	6.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--
202.81	0.01	0.00	2.29	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.29	0.00	2.08	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

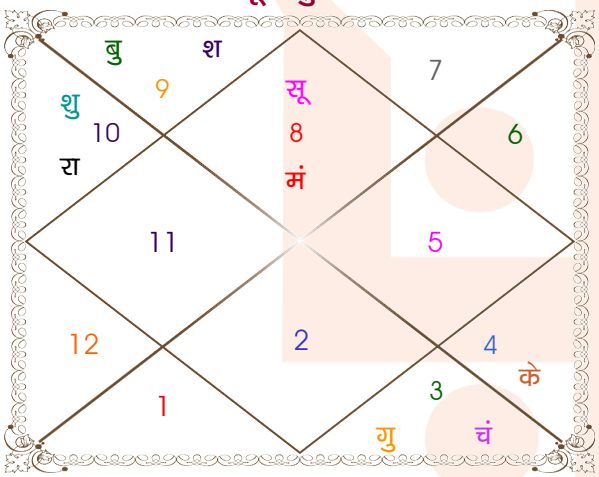

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

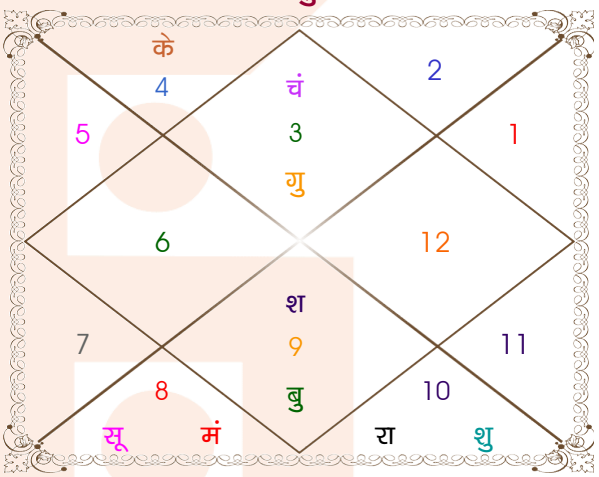

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

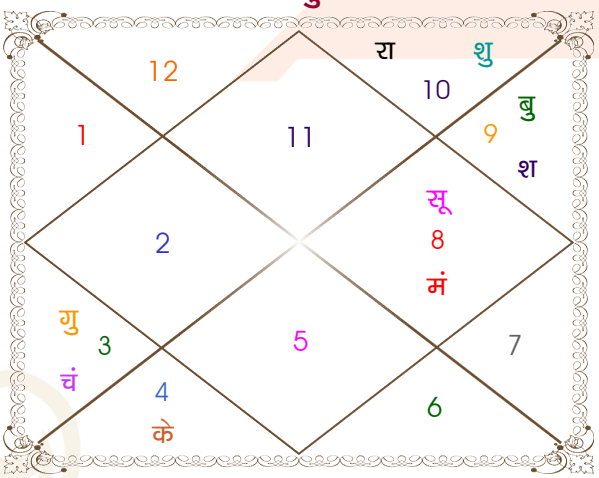

देह विचारः

होरा कुंडली

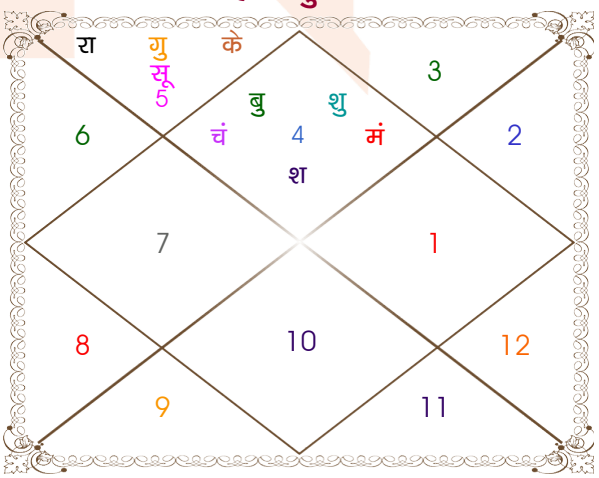

सम्पदाविचारः

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

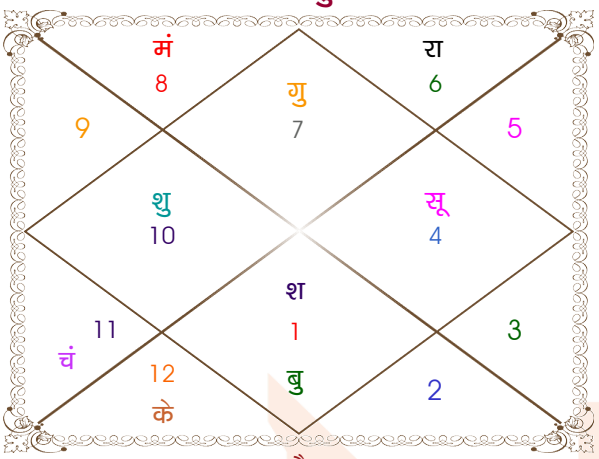

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

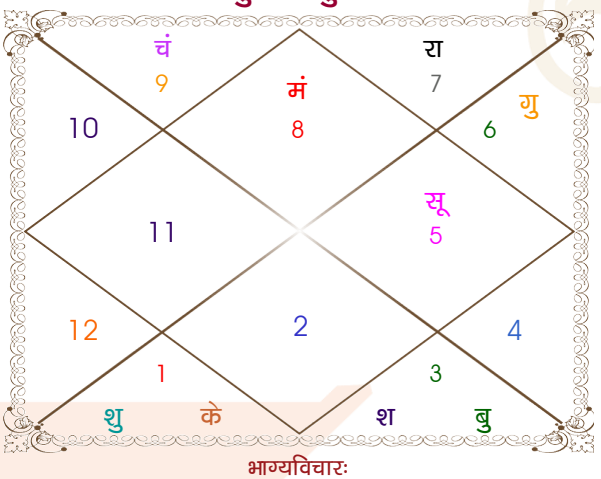

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

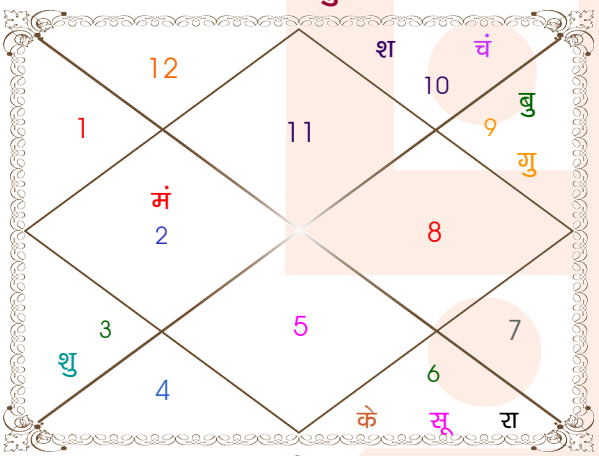

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

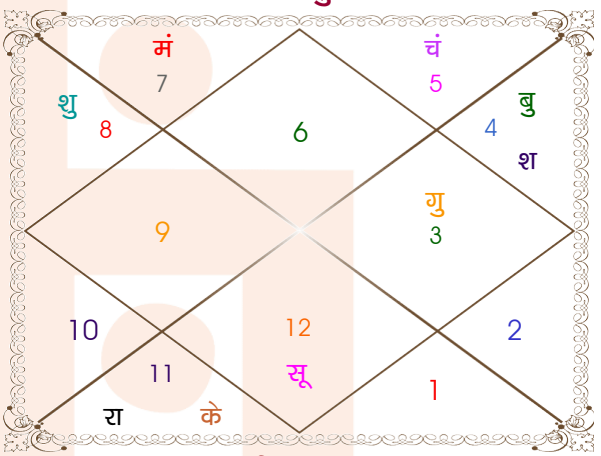

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

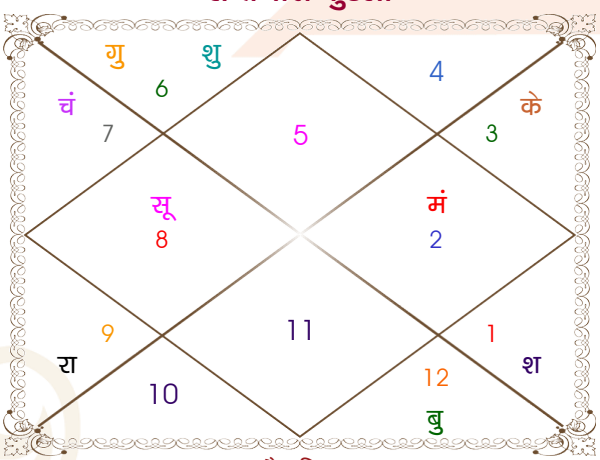

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

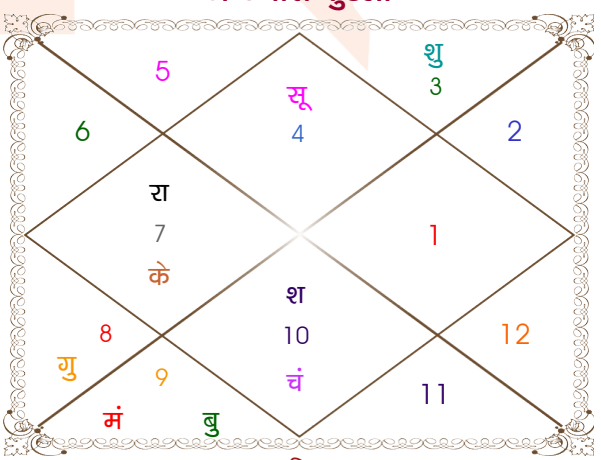

आयुविचारः

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

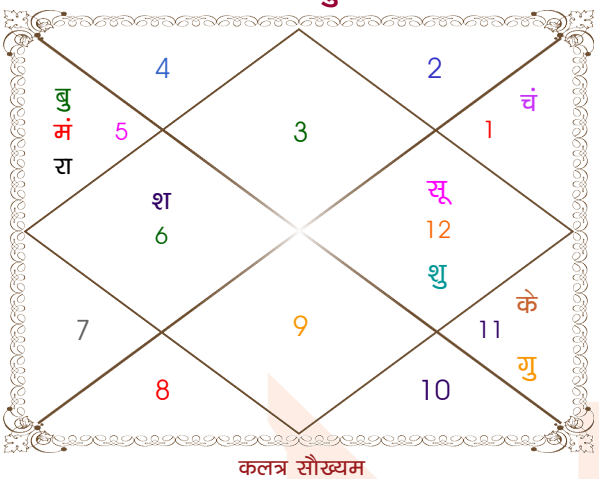

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

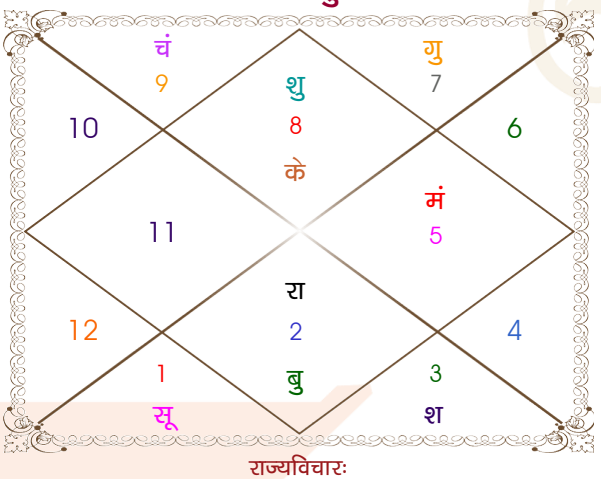

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

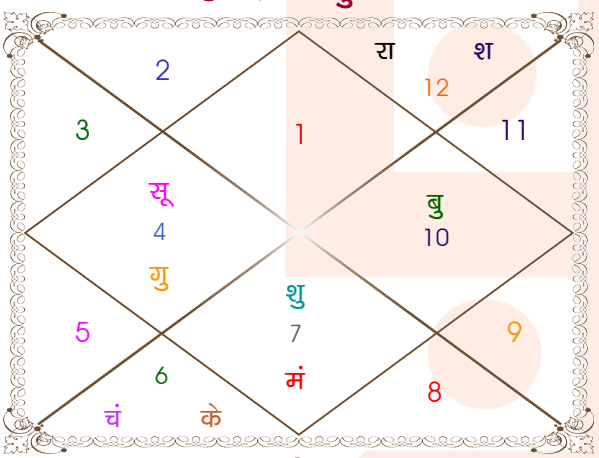

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

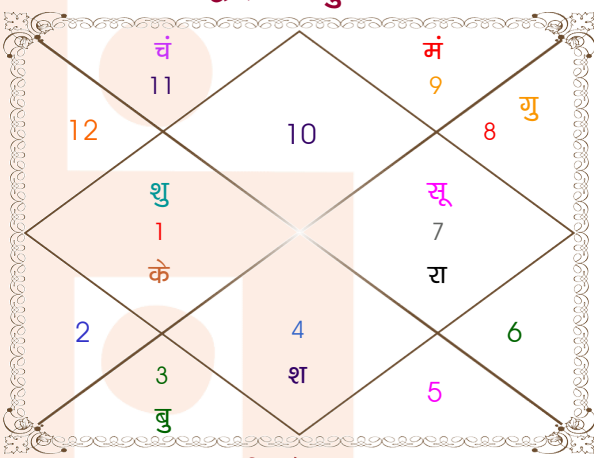

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

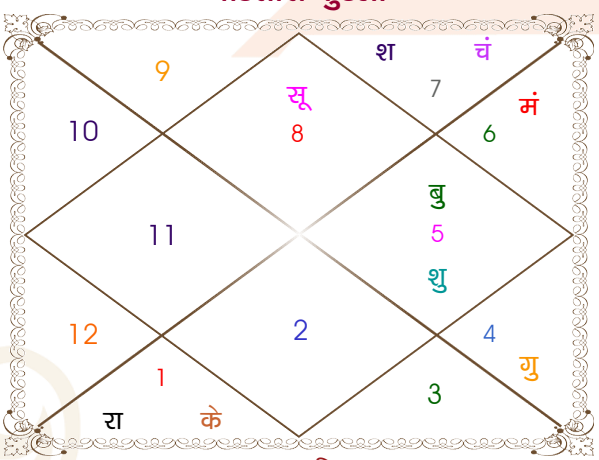

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

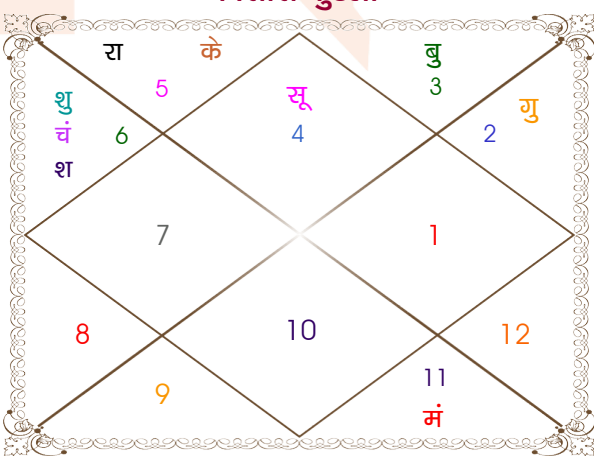

उपासनाज्ञानम्

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

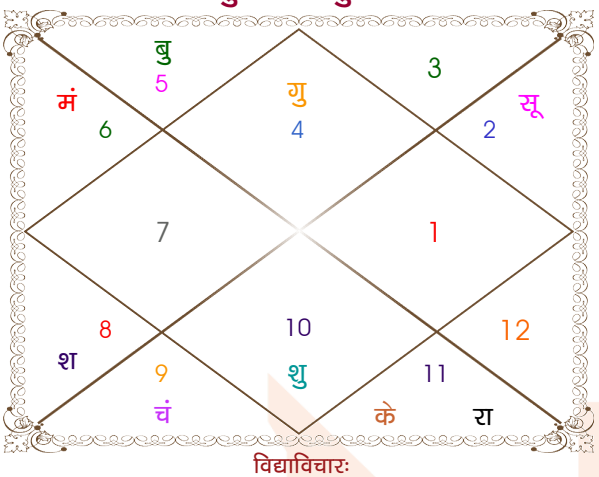

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

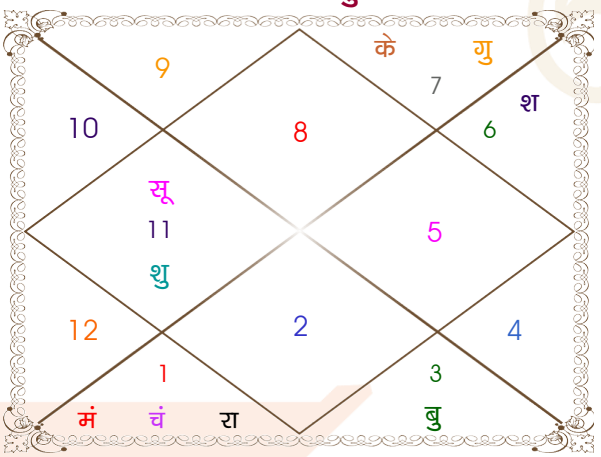

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

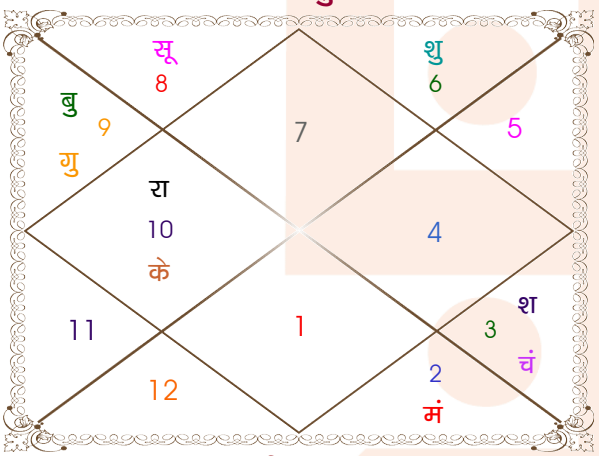

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

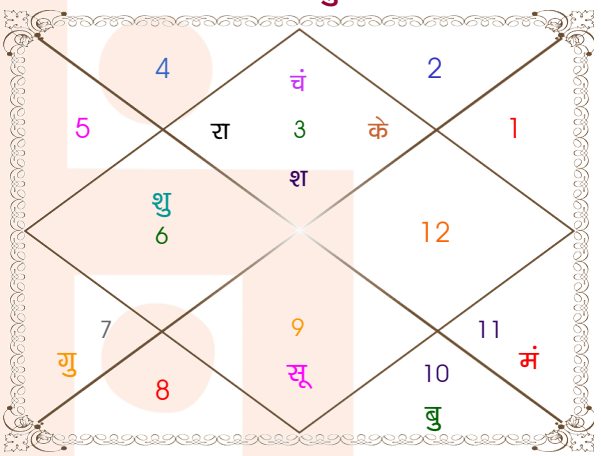

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

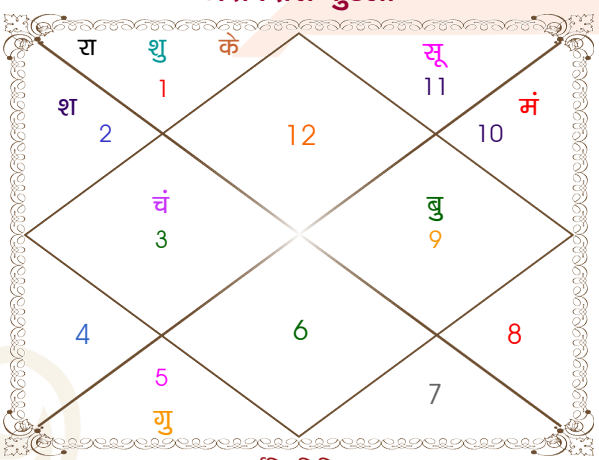

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

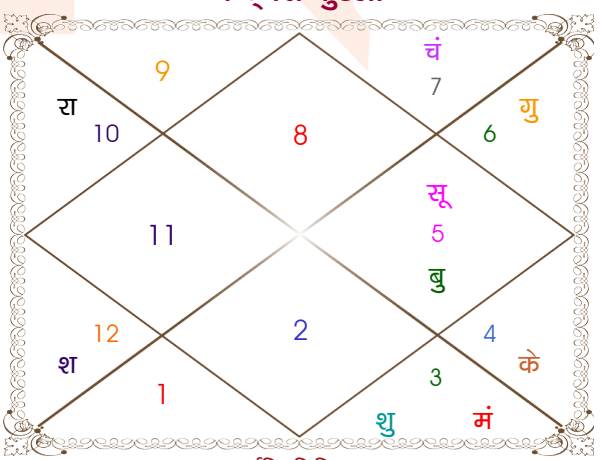

सर्वास्थितिविचारः

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कुंभ	वृश्चि	मिथु	वृश्चि	धनु	मिथु	मक	धनु	मक	कर्क
होरा	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	तुला	कर्क	कुंभ	वृश्चि	मेष	तुला	मक	मेष	कन्या	मीन
चतुर्थांश	वृश्चि	सिंह	धनु	वृश्चि	मिथु	कन्या	मेष	मिथु	तुला	मेष
सप्तमांश	सिंह	वृश्चि	तुला	वृष	मीन	कन्या	कन्या	मेष	धनु	मिथु
नवमांश	मिथु	मीन	मेष	सिंह	सिंह	कुंभ	मीन	कन्या	सिंह	कुंभ
दशमांश	वृश्चि	मेष	धनु	सिंह	वृष	तुला	वृश्चि	मिथु	वृष	वृश्चि
द्वादशांश	मक	तुला	कुंभ	धनु	मिथु	वृश्चि	मेष	कर्क	तुला	मेष
षोडशांश	वृश्चि	वृश्चि	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	सिंह	तुला	मेष	मेष
विंशांश	कर्क	कर्क	कन्या	कुंभ	मिथु	वृष	कन्या	कन्या	सिंह	सिंह
चतुर्विंशांश	कर्क	वृष	धनु	कन्या	सिंह	कर्क	मक	वृश्चि	कुंभ	कुंभ
सप्तविंशांश	वृश्चि	कुंभ	मेष	मेष	मिथु	तुला	कुंभ	कन्या	मेष	तुला
त्रिंशांश	तुला	वृश्चि	मिथु	वृष	धनु	धनु	कन्या	मिथु	मक	मक
खवेदांश	मिथु	धनु	मिथु	कुंभ	मक	तुला	कन्या	मिथु	मिथु	मिथु
अक्षवेदांश	मीन	कुंभ	मिथु	मक	धनु	सिंह	मेष	वृष	मेष	मेष
षष्ट्यंश	वृश्चि	सिंह	तुला	मिथु	सिंह	कन्या	मिथु	मीन	मक	कर्क

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	3 उत्तम	4 नागपुष्प
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	5 कन्दुक
बुध	1 ---	1 ---	1 ---	4 नागपुष्प
गुरु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
शुक्र	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
शनि	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
राहु	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
केतु	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	11.00	9.35	15.25	12.45	7.25	13.65	8.10	13.80	9.00
सप्तवर्ग	11.00	9.20	14.88	11.78	7.20	13.93	8.25	12.78	8.50
दशवर्ग	13.25	8.65	13.00	13.65	7.40	15.15	8.65	13.95	9.03
षोडशवर्ग	12.75	8.55	13.50	14.10	7.18	14.60	9.50	13.90	8.60

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	मित्र	सम	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	सम	सम	---	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	16	44	32	30	53	34	40
सप्तवर्गज बल	75	60	113	81	54	111	38
ओजयुग्मक बल	0	0	15	30	30	30	15
केन्द्र बल	60	30	60	30	30	15	30
द्रेष्काण बल	0	15	15	15	0	0	15
कुल स्थान बल	151	149	234	185	167	189	138
कुल दिग्बल	59	54	51	36	25	13	23
नतोन्नत बल	59	1	1	60	59	59	1
पक्ष बल	7	106	7	7	53	53	7
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	15	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	1	1	5	60	60	5	59
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	127	167	13	127	277	132	97
कुल चेष्टाबल	0	0	10	32	56	47	7
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	12	-49	15	26	-50	18	27
कुल षट्बल	409	373	340	431	510	442	300
रूप षट्बल	6.8	6.2	5.7	7.2	8.5	7.4	5.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.0	1.1	1.0	1.3	1.3	1.0
संबंधित पद	1	5	4	6	3	2	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	6.46	48.34	17.69	30.64	54.63	39.95	16.66
कष्ट फल	50.16	10.65	37.58	29.32	5.06	18.34	32.53

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	300	510	442	431	373	373	409	431	340	510	300	300
भावदिग्बल	60	40	10	30	50	40	30	10	40	30	50	20
भावदृष्टि बल	49	39	5	0	27	38	58	47	50	40	62	38
कुल भाव बल	409	588	457	461	450	451	496	488	429	579	412	359
रूप भाव बल	6.8	9.8	7.6	7.7	7.5	7.5	8.3	8.1	7.2	9.7	6.9	6.0
संबंधित पद	11	1	6	5	8	7	3	4	9	2	10	12

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

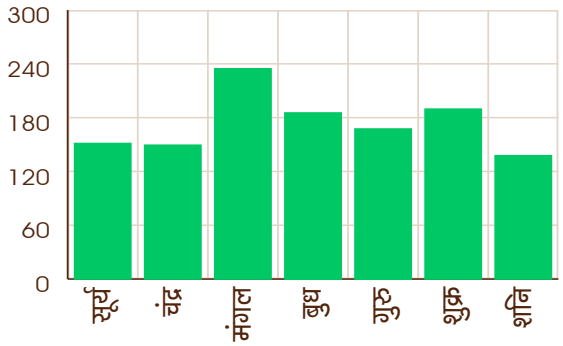

दिग्बल

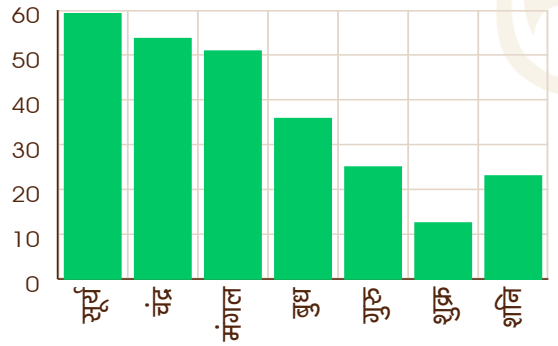

कालबल

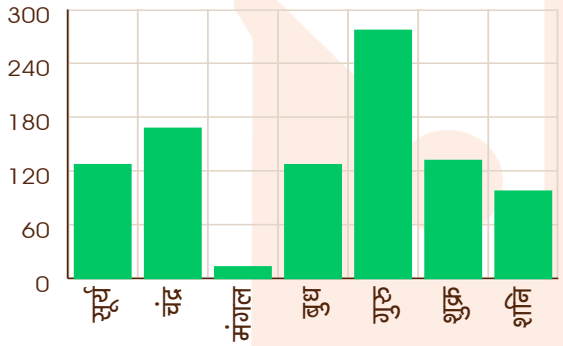

चेष्टाबल

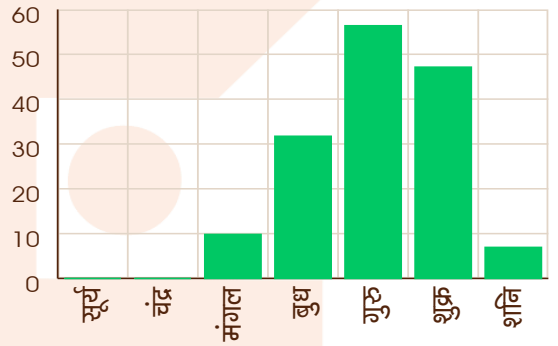

नैसर्गिक बल

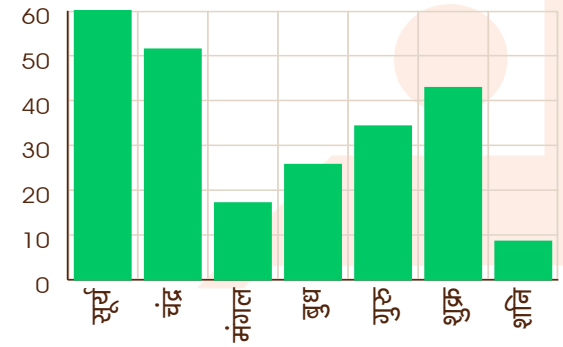

दृग्बल

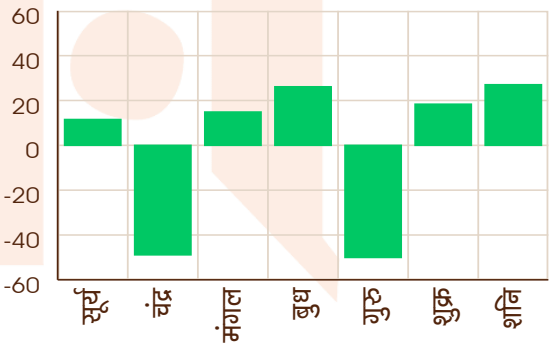

रूप षट्बल

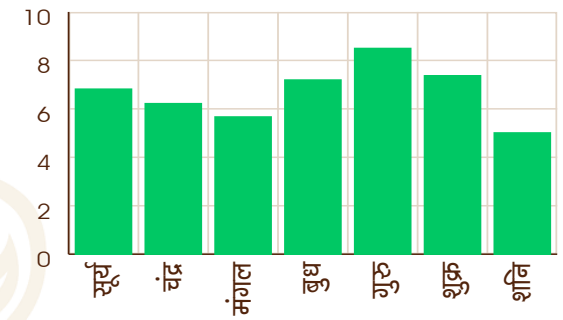

न्यूनतम षट्बल

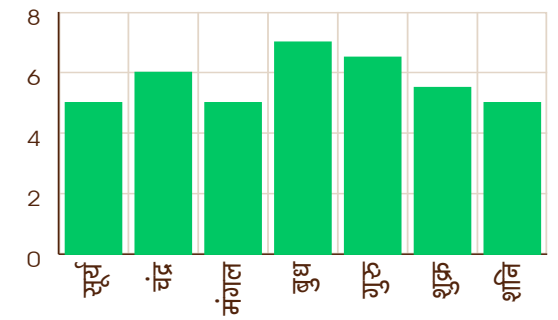

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

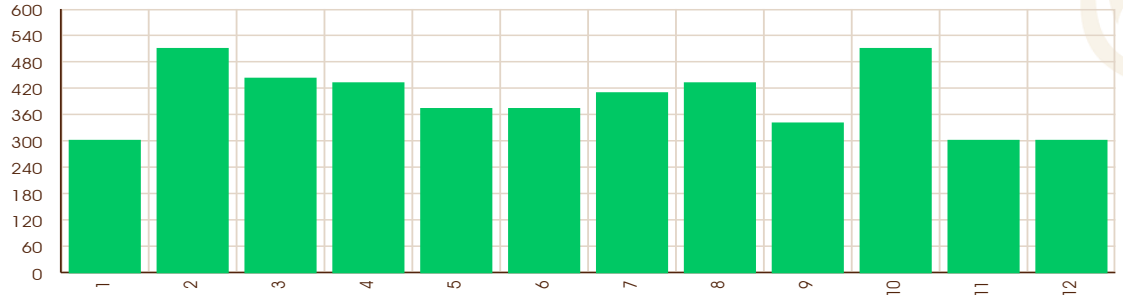

भावदिग्बल

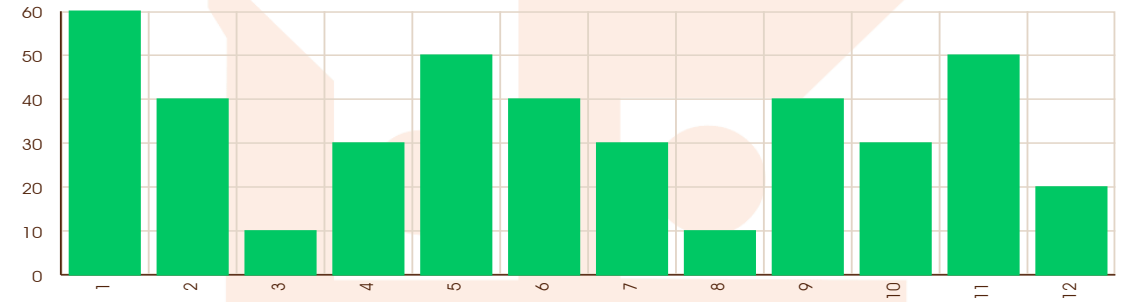

भावदृष्टि बल

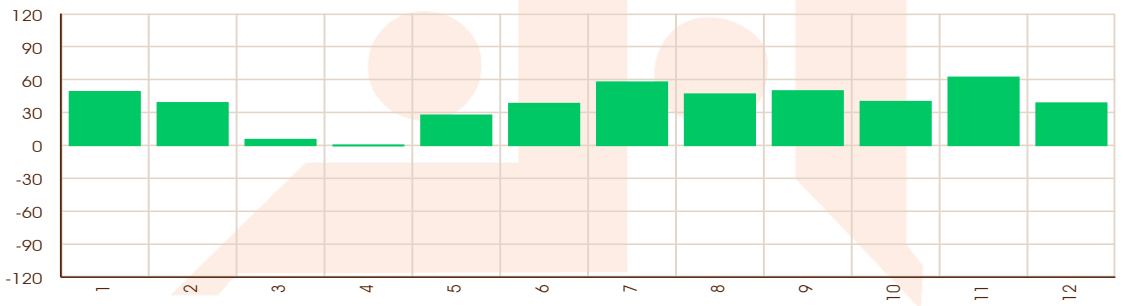

भाव बल

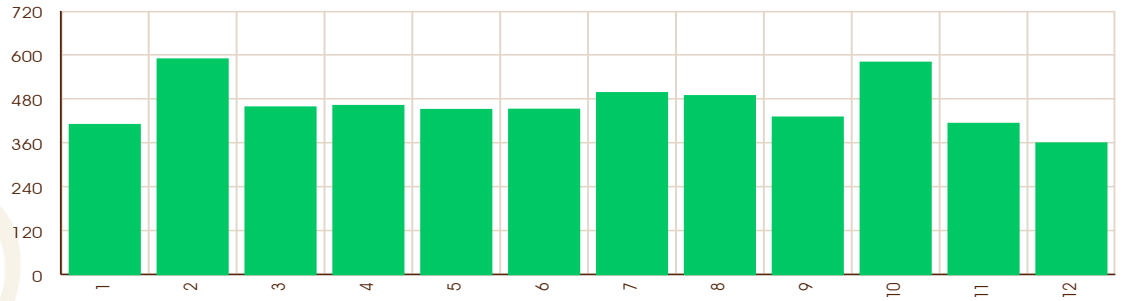

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

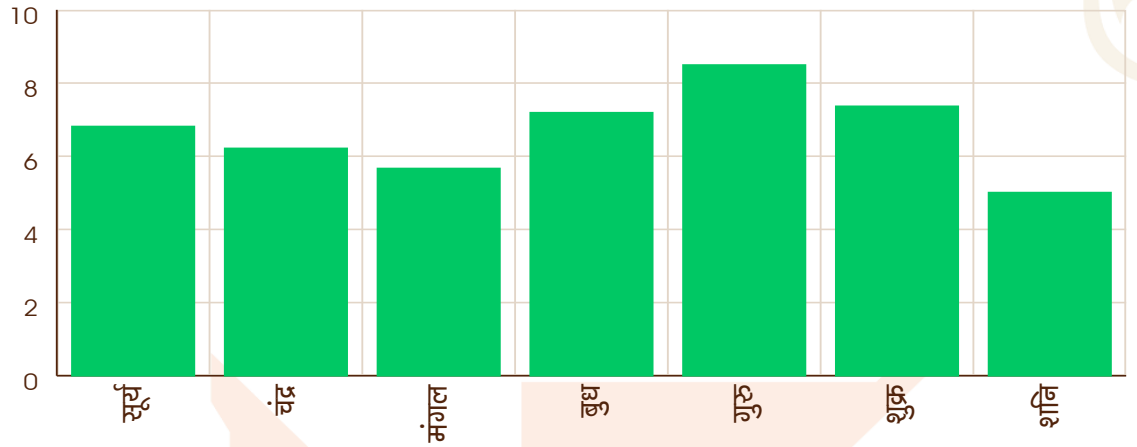

इष्ट - कष्ट फल

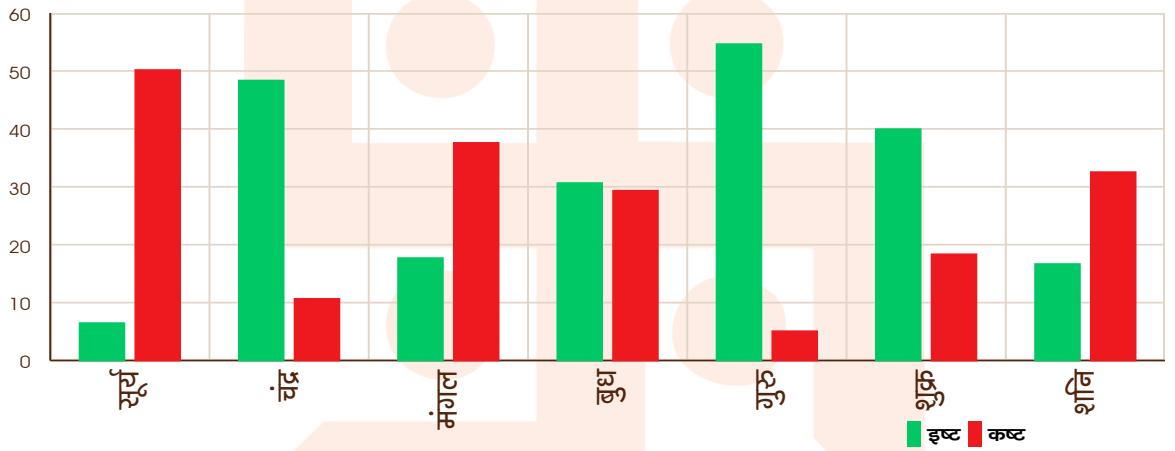

रूप भाव बल

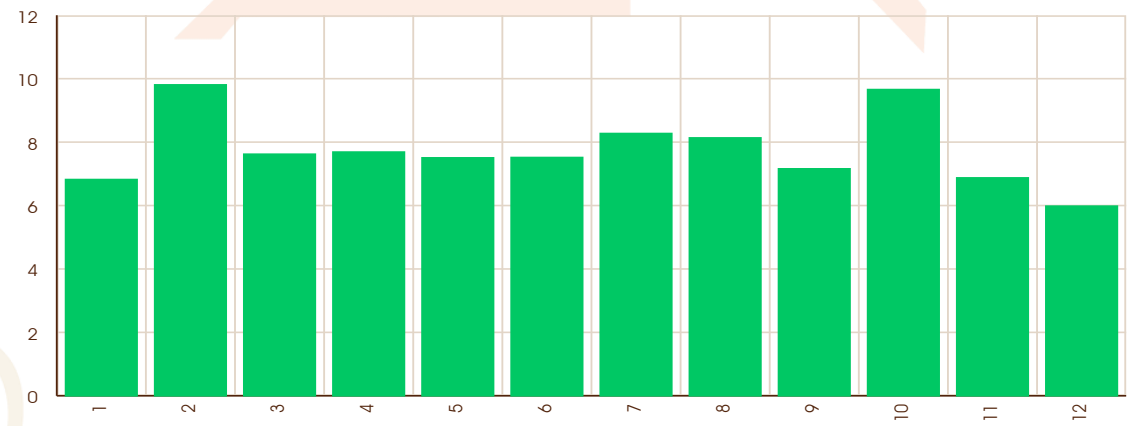

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कुंभ	28:47:37	--	--	पू०भाद्रपद	3	25
गुलिक	गु	मक	29:35:26	--	--	धनिष्ठा	2	23
काल	का	कुंभ	25:13:25	--	--	पू०भाद्रपद	2	25
मृत्यु	मृ	मेष	17:08:37	--	--	भरणी	2	2
यमघंटक	यम	धनु	16:26:32	--	मूल	पूर्वाषाढ़ा	1	20
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	वृष	09:38:22	--	--	कृतिका	4	3
धूम	धू	मेष	11:52:50	--	--	अश्विनी	4	1
व्यतिपात	व्य	मीन	18:07:10	--	--	रेवती	1	27
परिवेश	परि	कन्या	18:07:10	--	--	हस्त	3	13
इन्द्रचाप	इ	तुला	11:52:50	--	--	स्वाति	2	15
उपकेतु	उप	तुला	28:32:50	--	--	विशाखा	3	16

प्राणपद	:	मीन	24:29:51	कारकाँश लग्न	:	मीन	16:55:27
भाव लग्न	:	कुंभ	22:20:41	होरा लग्न	:	वृष	16:08:32
घटी लग्न	:	मक	27:32:05	वर्णद लग्न	:	मेष	14:56:08

उपग्रह कुंडली

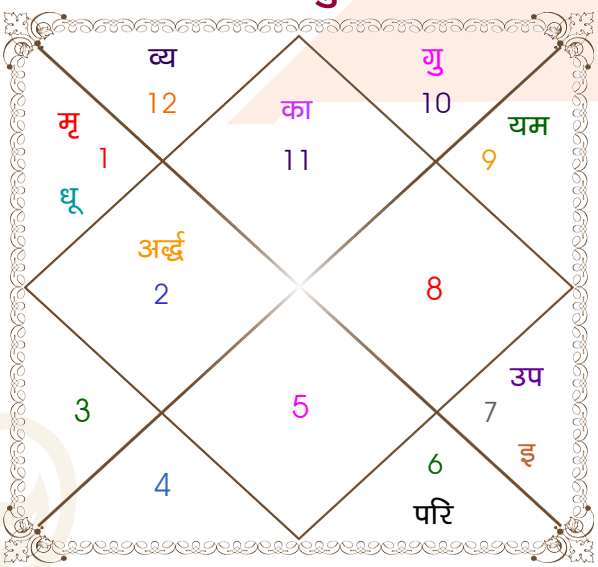

आरूढ़ कुंडली

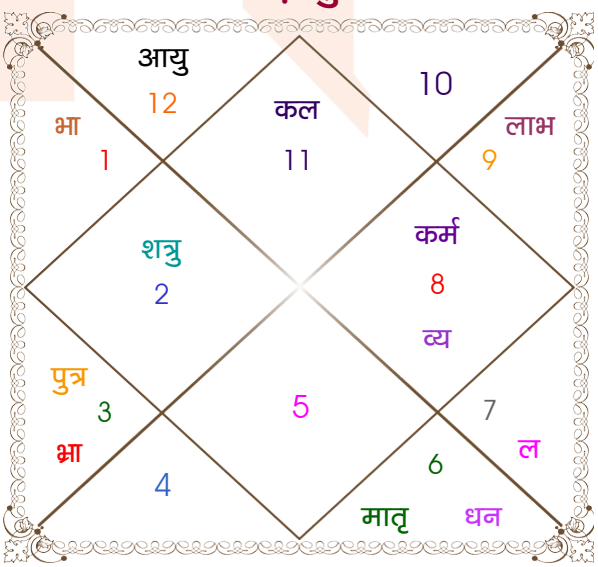

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षन्नाडी चक्र

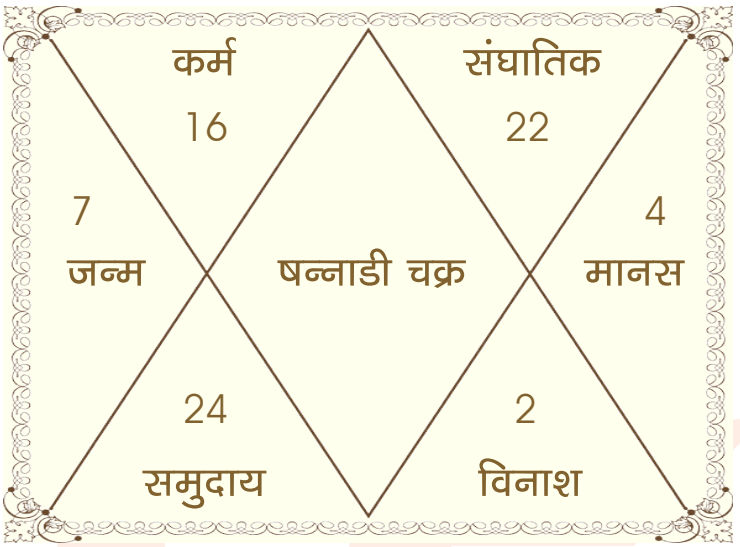

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
गुरु	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
कुल	6	5	2	4	2	4	4	4	5	5	4	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
मंगल	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	6
शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
कुल	4	4	3	5	3	3	5	3	3	5	8	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	5	4	1	3	3	5	3	3	2	5	3	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	4	4	4	5	5	5	2	5	4	7	3	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
सूर्य	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	9
शुक्र	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	6
बुध	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
कुल	5	4	5	5	4	5	6	3	6	3	4	6	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	5
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	0	0	0	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	4	7	4	7	4	3	3	4	6	8	1	1	52

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	3	1	3	1	5	5	2	2	4	3	4	6	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
चंद्र	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	5	6	4	1	3	4	6	4	4	4	4	49

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	5	2	2	4	3	4	6	3	1	3	1	39
गुरु	4	6	5	4	5	5	4	5	6	3	6	3	56
मंगल	5	3	3	2	5	3	2	5	4	1	3	3	39
सूर्य	4	4	4	5	5	4	3	6	5	2	4	2	48
शुक्र	7	4	3	3	4	6	8	1	1	4	7	4	52
बुध	5	5	2	5	4	7	3	6	4	4	4	5	54
चंद्र	8	3	4	4	3	5	3	3	5	3	3	5	49
बिन्दु	38	30	23	25	30	33	27	32	28	18	30	23	337
रेखा	18	26	33	31	26	23	29	24	28	38	26	33	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	4	0	1	1	2	2	5	0	0	1	0	18
गुरु	0	3	1	1	1	2	0	2	2	0	2	0	14
मंगल	1	2	1	0	1	2	0	3	0	0	1	1	12
सूर्य	0	2	1	3	1	2	0	4	1	0	1	0	15
शुक्र	6	0	0	2	3	2	5	0	0	0	4	3	25
बुध	1	1	0	0	0	3	1	1	0	0	2	0	9
चंद्र	5	0	1	1	0	2	0	0	2	0	0	2	13
रेखा	15	12	4	8	7	15	8	15	5	0	11	6	106

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	2	0	1	1	2	2	5	0	0	1	0	14
गुरु	0	3	1	1	1	1	0	2	2	0	2	0	13
मंगल	0	2	1	0	1	1	0	3	0	0	1	1	10
सूर्य	0	2	1	3	1	1	0	4	1	0	1	0	14
शुक्र	6	0	0	2	3	2	5	0	0	0	4	3	25
बुध	0	0	0	0	0	3	0	1	0	0	2	0	6
चंद्र	5	0	1	1	0	1	0	0	2	0	0	0	10
रेखा	11	9	4	8	7	11	7	15	5	0	11	4	92

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	107	70	90	45	113	205	109
ग्रह पिंड	77	35	54	13	61	0	65
शोध्य पिंड	184	105	144	58	174	205	174

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

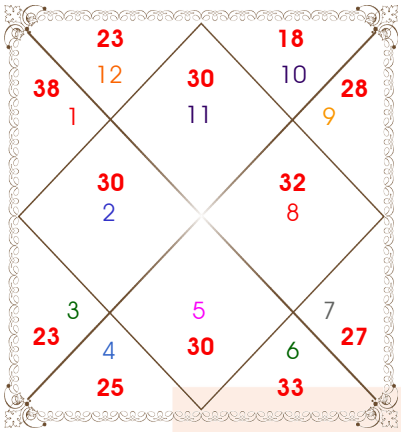

सूर्य का अष्टकवर्ग

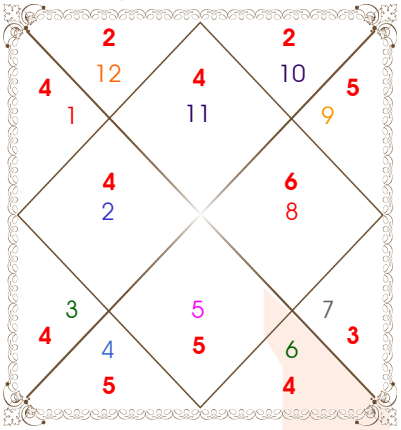

चंद्र का अष्टकवर्ग

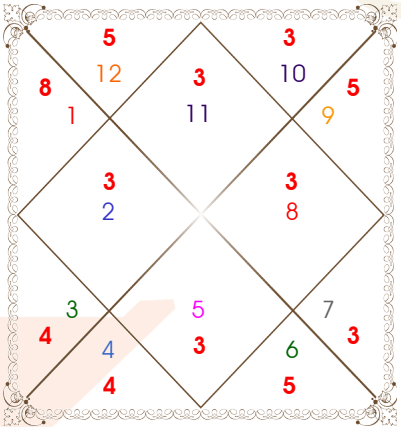

मंगल का अष्टकवर्ग

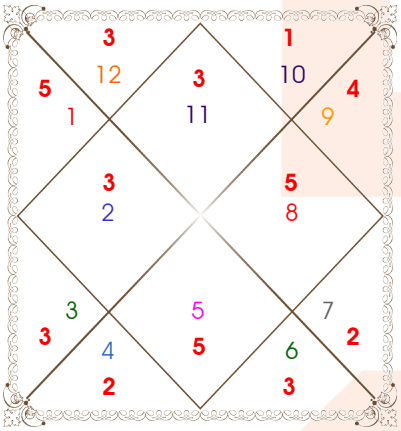

बुध का अष्टकवर्ग

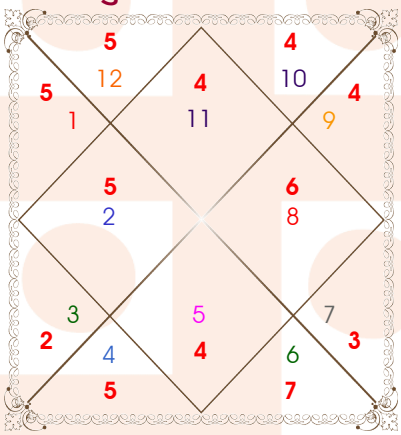

गुरू का अष्टकवर्ग

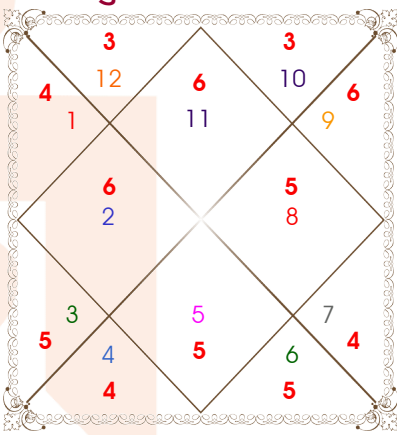

शुक्र का अष्टकवर्ग

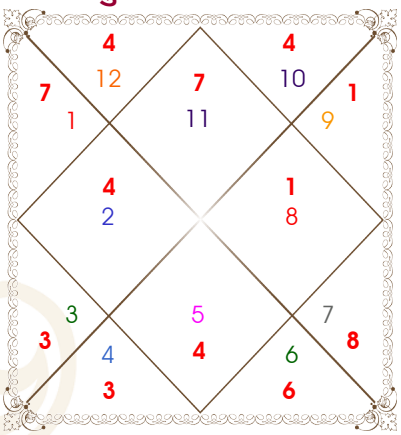

शनि का अष्टकवर्ग

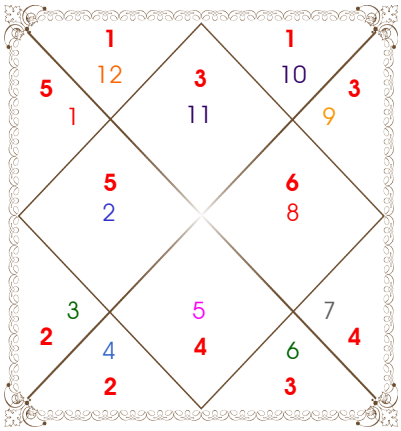

लग्न का अष्टकवर्ग

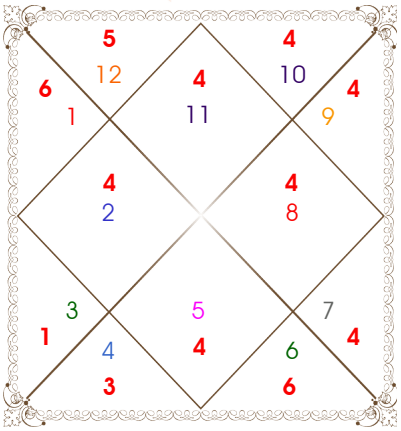

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

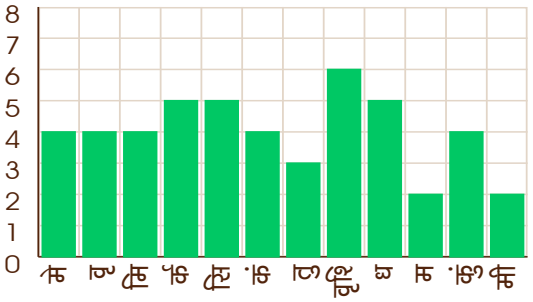

चन्द्र

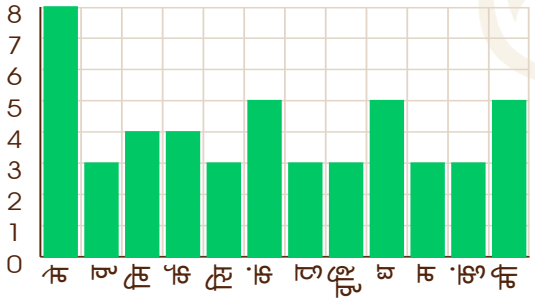

मंगल

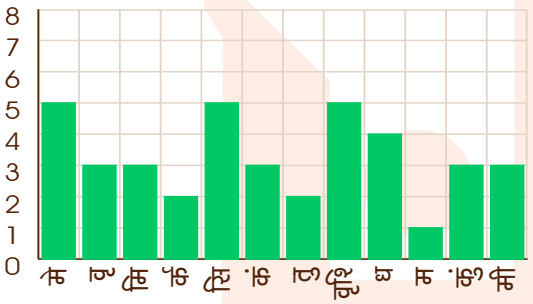

बुध

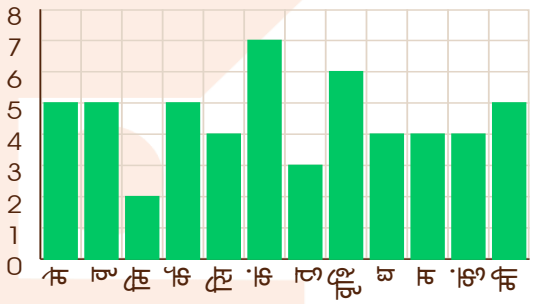

गुरु

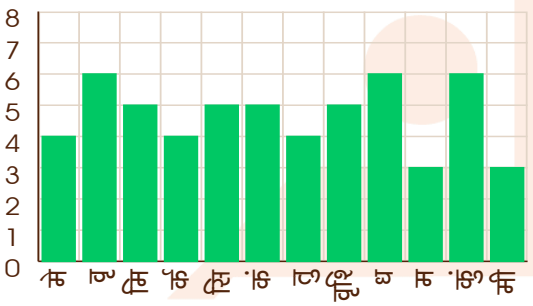

शुक्र

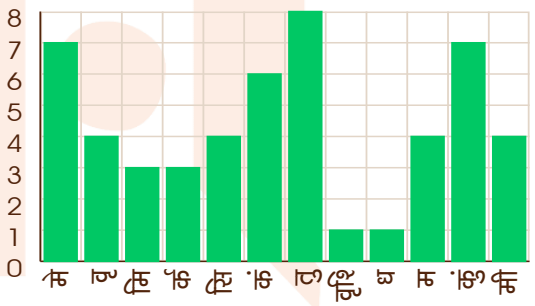

शनि

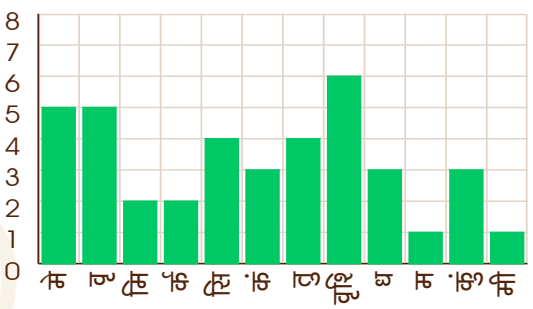

लग्न

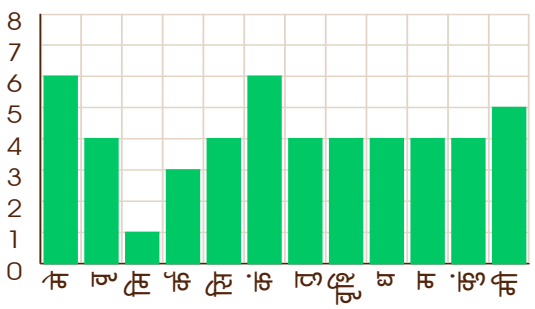

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

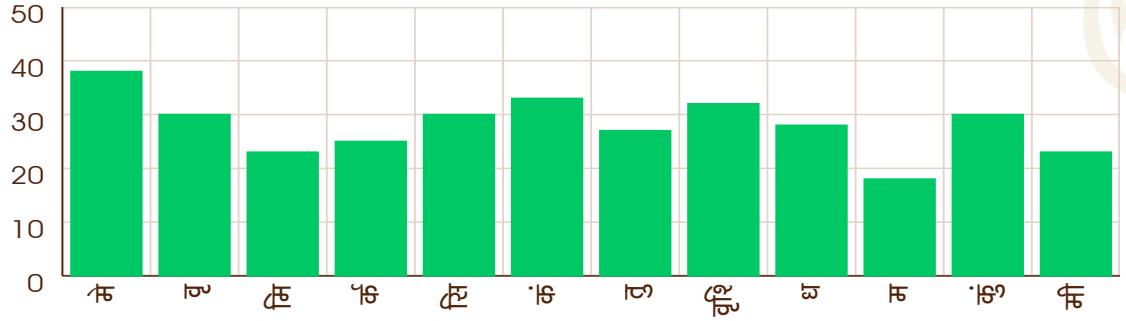

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

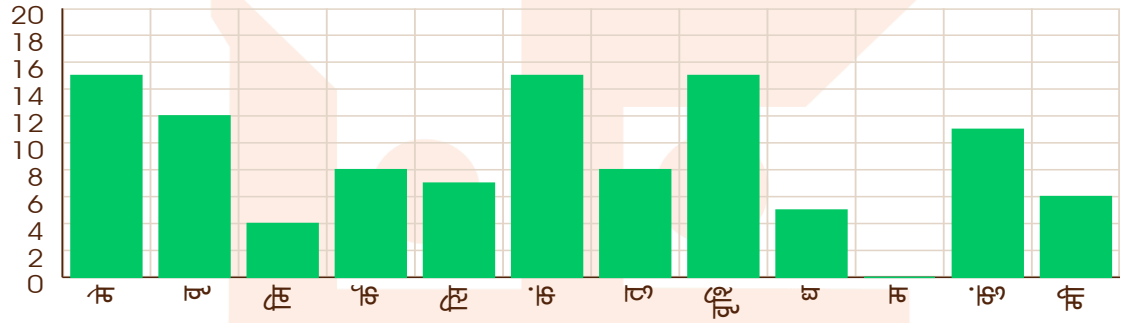

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

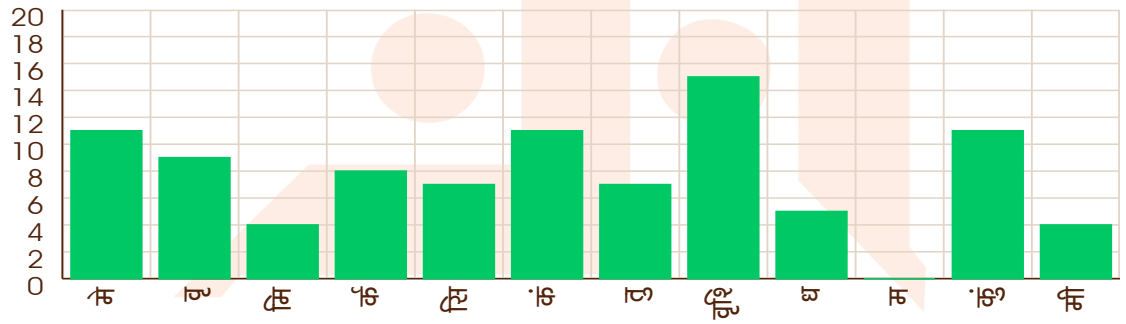

शोध्य पिंड

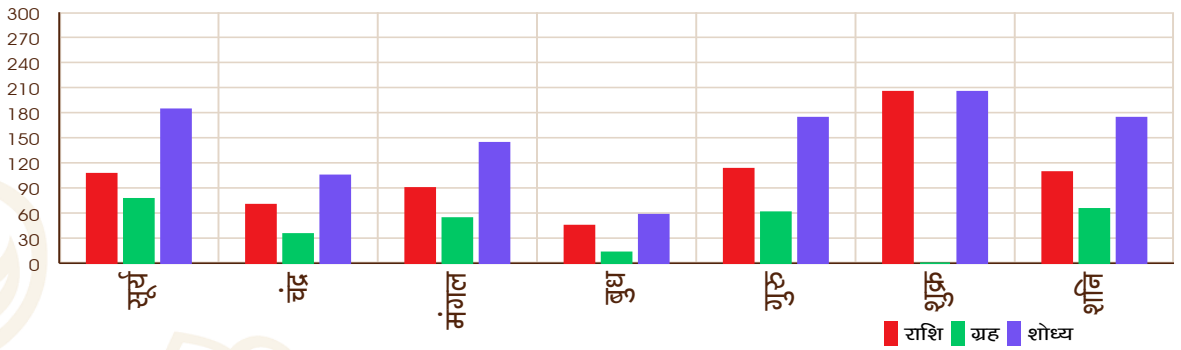

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 15 वर्ष 9 मास 9 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
14/12/1989		23/09/2005		23/09/2024		23/09/2041		23/09/2048	
23/09/2005		23/09/2024		23/09/2041		23/09/2048		23/09/2068	
गुरु	11/11/1991	शनि	26/09/2008	बुध	19/02/2027	केतु	19/02/2042	शुक्र	23/01/2052
शनि	24/05/1994	बुध	06/06/2011	केतु	17/02/2028	शुक्र	21/04/2043	सूर्य	22/01/2053
बुध	29/08/1996	केतु	15/07/2012	शुक्र	17/12/2030	सूर्य	27/08/2043	चंद्र	23/09/2054
केतु	05/08/1997	शुक्र	14/09/2015	सूर्य	24/10/2031	चंद्र	27/03/2044	मंगल	23/11/2055
शुक्र	05/04/2000	सूर्य	26/08/2016	चंद्र	24/03/2033	मंगल	23/08/2044	राहु	23/11/2058
सूर्य	22/01/2001	चंद्र	28/03/2018	मंगल	22/03/2034	राहु	11/09/2045	गुरु	24/07/2061
चंद्र	24/05/2002	मंगल	06/05/2019	राहु	08/10/2036	गुरु	18/08/2046	शनि	23/09/2064
मंगल	30/04/2003	राहु	12/03/2022	गुरु	14/01/2039	शनि	27/09/2047	बुध	25/07/2067
राहु	23/09/2005	गुरु	23/09/2024	शनि	23/09/2041	बुध	23/09/2048	केतु	23/09/2068

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
23/09/2068		23/09/2074		23/09/2084		23/09/2091		24/09/2109	
23/09/2074		23/09/2084		23/09/2091		24/09/2109		00/00/0000	
सूर्य	10/01/2069	चंद्र	25/07/2075	मंगल	19/02/2085	राहु	06/06/2094	गुरु	15/12/2109
चंद्र	12/07/2069	मंगल	23/02/2076	राहु	09/03/2086	गुरु	29/10/2096		00/00/0000
मंगल	17/11/2069	राहु	24/08/2077	गुरु	13/02/2087	शनि	05/09/2099		00/00/0000
राहु	11/10/2070	गुरु	24/12/2078	शनि	24/03/2088	बुध	26/03/2102		00/00/0000
गुरु	31/07/2071	शनि	24/07/2080	बुध	21/03/2089	केतु	13/04/2103		00/00/0000
शनि	12/07/2072	बुध	23/12/2081	केतु	17/08/2089	शुक्र	13/04/2106		00/00/0000
बुध	18/05/2073	केतु	24/07/2082	शुक्र	18/10/2090	सूर्य	08/03/2107		00/00/0000
केतु	23/09/2073	शुक्र	24/03/2084	सूर्य	22/02/2091	चंद्र	05/09/2108		00/00/0000
शुक्र	23/09/2074	सूर्य	23/09/2084	चंद्र	23/09/2091	मंगल	24/09/2109		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 15 वर्ष 9 मा 10 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
14/12/1989		11/11/1991		24/05/1994		29/08/1996		05/08/1997	
11/11/1991		24/05/1994		29/08/1996		05/08/1997		05/04/2000	
गुरु	05/01/1990	शनि	06/04/1992	बुध	19/09/1994	केतु	18/09/1996	शुक्र	15/01/1998
शनि	08/05/1990	बुध	15/08/1992	केतु	06/11/1994	शुक्र	14/11/1996	सूर्य	04/03/1998
बुध	27/08/1990	केतु	08/10/1992	शुक्र	24/03/1995	सूर्य	01/12/1996	चंद्र	24/05/1998
केतु	11/10/1990	शुक्र	11/03/1993	सूर्य	04/05/1995	चंद्र	30/12/1996	मंगल	20/07/1998
शुक्र	18/02/1991	सूर्य	26/04/1993	चंद्र	12/07/1995	मंगल	18/01/1997	राहु	13/12/1998
सूर्य	29/03/1991	चंद्र	12/07/1993	मंगल	30/08/1995	राहु	11/03/1997	गुरु	22/04/1999
चंद्र	02/06/1991	मंगल	04/09/1993	राहु	01/01/1996	गुरु	25/04/1997	शनि	23/09/1999
मंगल	17/07/1991	राहु	21/01/1994	गुरु	20/04/1996	शनि	18/06/1997	बुध	08/02/2000
राहु	11/11/1991	गुरु	24/05/1994	शनि	29/08/1996	बुध	05/08/1997	केतु	05/04/2000

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
05/04/2000		22/01/2001		24/05/2002		30/04/2003		23/09/2005	
22/01/2001		24/05/2002		30/04/2003		23/09/2005		26/09/2008	
सूर्य	20/04/2000	चंद्र	04/03/2001	मंगल	13/06/2002	राहु	09/09/2003	शनि	16/03/2006
चंद्र	14/05/2000	मंगल	01/04/2001	राहु	04/08/2002	गुरु	04/01/2004	बुध	19/08/2006
मंगल	31/05/2000	राहु	14/06/2001	गुरु	18/09/2002	शनि	22/05/2004	केतु	22/10/2006
राहु	14/07/2000	गुरु	17/08/2001	शनि	11/11/2002	बुध	23/09/2004	शुक्र	23/04/2007
गुरु	22/08/2000	शनि	03/11/2001	बुध	29/12/2002	केतु	13/11/2004	सूर्य	17/06/2007
शनि	07/10/2000	बुध	11/01/2002	केतु	18/01/2003	शुक्र	08/04/2005	चंद्र	16/09/2007
बुध	18/11/2000	केतु	08/02/2002	शुक्र	16/03/2003	सूर्य	22/05/2005	मंगल	19/11/2007
केतु	05/12/2000	शुक्र	30/04/2002	सूर्य	02/04/2003	चंद्र	03/08/2005	राहु	02/05/2008
शुक्र	22/01/2001	सूर्य	24/05/2002	चंद्र	30/04/2003	मंगल	23/09/2005	गुरु	26/09/2008

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
26/09/2008		06/06/2011		15/07/2012		14/09/2015		26/08/2016	
06/06/2011		15/07/2012		14/09/2015		26/08/2016		28/03/2018	
बुध	12/02/2009	केतु	30/06/2011	शुक्र	23/01/2013	सूर्य	02/10/2015	चंद्र	14/10/2016
केतु	10/04/2009	शुक्र	05/09/2011	सूर्य	22/03/2013	चंद्र	31/10/2015	मंगल	16/11/2016
शुक्र	21/09/2009	सूर्य	25/09/2011	चंद्र	27/06/2013	मंगल	20/11/2015	राहु	11/02/2017
सूर्य	09/11/2009	चंद्र	29/10/2011	मंगल	02/09/2013	राहु	11/01/2016	गुरु	29/04/2017
चंद्र	30/01/2010	मंगल	22/11/2011	राहु	23/02/2014	गुरु	26/02/2016	शनि	30/07/2017
मंगल	29/03/2010	राहु	21/01/2012	गुरु	27/07/2014	शनि	21/04/2016	बुध	20/10/2017
राहु	23/08/2010	गुरु	15/03/2012	शनि	26/01/2015	बुध	09/06/2016	केतु	22/11/2017
गुरु	01/01/2011	शनि	18/05/2012	बुध	09/07/2015	केतु	30/06/2016	शुक्र	27/02/2018
शनि	06/06/2011	बुध	15/07/2012	केतु	14/09/2015	शुक्र	26/08/2016	सूर्य	28/03/2018

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
28/03/2018		06/05/2019		12/03/2022		23/09/2024		19/02/2027	
06/05/2019		12/03/2022		23/09/2024		19/02/2027		17/02/2028	
मंगल	20/04/2018	राहु	10/10/2019	गुरु	14/07/2022	बुध	25/01/2025	केतु	13/03/2027
राहु	20/06/2018	गुरु	25/02/2020	शनि	07/12/2022	केतु	18/03/2025	शुक्र	12/05/2027
गुरु	13/08/2018	शनि	08/08/2020	बुध	17/04/2023	शुक्र	11/08/2025	सूर्य	30/05/2027
शनि	16/10/2018	बुध	03/01/2021	केतु	10/06/2023	सूर्य	24/09/2025	चंद्र	29/06/2027
बुध	12/12/2018	केतु	04/03/2021	शुक्र	12/11/2023	चंद्र	07/12/2025	मंगल	20/07/2027
केतु	05/01/2019	शुक्र	25/08/2021	सूर्य	28/12/2023	मंगल	27/01/2026	राहु	13/09/2027
शुक्र	13/03/2019	सूर्य	16/10/2021	चंद्र	14/03/2024	राहु	08/06/2026	गुरु	31/10/2027
सूर्य	03/04/2019	चंद्र	11/01/2022	मंगल	07/05/2024	गुरु	03/10/2026	शनि	27/12/2027
चंद्र	06/05/2019	मंगल	12/03/2022	राहु	23/09/2024	शनि	19/02/2027	बुध	17/02/2028

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
17/02/2028		17/12/2030		24/10/2031		24/03/2033		22/03/2034	
17/12/2030		24/10/2031		24/03/2033		22/03/2034		08/10/2036	
शुक्र	07/08/2028	सूर्य	02/01/2031	चंद्र	06/12/2031	मंगल	14/04/2033	राहु	08/08/2034
सूर्य	28/09/2028	चंद्र	28/01/2031	मंगल	05/01/2032	राहु	08/06/2033	गुरु	10/12/2034
चंद्र	23/12/2028	मंगल	15/02/2031	राहु	23/03/2032	गुरु	26/07/2033	शनि	07/05/2035
मंगल	21/02/2029	राहु	03/04/2031	गुरु	31/05/2032	शनि	21/09/2033	बुध	16/09/2035
राहु	27/07/2029	गुरु	14/05/2031	शनि	21/08/2032	बुध	12/11/2033	केतु	09/11/2035
गुरु	12/12/2029	शनि	02/07/2031	बुध	02/11/2032	केतु	03/12/2033	शुक्र	12/04/2036
शनि	24/05/2030	बुध	15/08/2031	केतु	02/12/2032	शुक्र	01/02/2034	सूर्य	29/05/2036
बुध	18/10/2030	केतु	02/09/2031	शुक्र	26/02/2033	सूर्य	19/02/2034	चंद्र	15/08/2036
केतु	17/12/2030	शुक्र	24/10/2031	सूर्य	24/03/2033	चंद्र	22/03/2034	मंगल	08/10/2036

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
08/10/2036		14/01/2039		23/09/2041		19/02/2042		21/04/2043	
14/01/2039		23/09/2041		19/02/2042		21/04/2043		27/08/2043	
गुरु	26/01/2037	शनि	19/06/2039	केतु	02/10/2041	शुक्र	01/05/2042	सूर्य	28/04/2043
शनि	06/06/2037	बुध	05/11/2039	शुक्र	27/10/2041	सूर्य	22/05/2042	चंद्र	08/05/2043
बुध	02/10/2037	केतु	01/01/2040	सूर्य	03/11/2041	चंद्र	27/06/2042	मंगल	16/05/2043
केतु	19/11/2037	शुक्र	13/06/2040	चंद्र	15/11/2041	मंगल	22/07/2042	राहु	04/06/2043
शुक्र	06/04/2038	सूर्य	01/08/2040	मंगल	24/11/2041	राहु	24/09/2042	गुरु	21/06/2043
सूर्य	17/05/2038	चंद्र	22/10/2040	राहु	16/12/2041	गुरु	20/11/2042	शनि	11/07/2043
चंद्र	25/07/2038	मंगल	18/12/2040	गुरु	05/01/2042	शनि	26/01/2043	बुध	29/07/2043
मंगल	12/09/2038	राहु	15/05/2041	शनि	29/01/2042	बुध	27/03/2043	केतु	06/08/2043
राहु	14/01/2039	गुरु	23/09/2041	बुध	19/02/2042	केतु	21/04/2043	शुक्र	27/08/2043

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
27/08/2043		27/03/2044		23/08/2044		11/09/2045		18/08/2046	
27/03/2044		23/08/2044		11/09/2045		18/08/2046		27/09/2047	
चंद्र	14/09/2043	मंगल	05/04/2044	राहु	20/10/2044	गुरु	26/10/2045	शनि	21/10/2046
मंगल	26/09/2043	राहु	27/04/2044	गुरु	10/12/2044	शनि	19/12/2045	बुध	17/12/2046
राहु	28/10/2043	गुरु	17/05/2044	शनि	09/02/2045	बुध	06/02/2046	केतु	10/01/2047
गुरु	26/11/2043	शनि	10/06/2044	बुध	04/04/2045	केतु	25/02/2046	शुक्र	18/03/2047
शनि	29/12/2043	बुध	01/07/2044	केतु	26/04/2045	शुक्र	23/04/2046	सूर्य	07/04/2047
बुध	29/01/2044	केतु	10/07/2044	शुक्र	29/06/2045	सूर्य	10/05/2046	चंद्र	11/05/2047
केतु	10/02/2044	शुक्र	03/08/2044	सूर्य	18/07/2045	चंद्र	08/06/2046	मंगल	04/06/2047
शुक्र	16/03/2044	सूर्य	11/08/2044	चंद्र	19/08/2045	मंगल	28/06/2046	राहु	04/08/2047
सूर्य	27/03/2044	चंद्र	23/08/2044	मंगल	11/09/2045	राहु	18/08/2046	गुरु	27/09/2047

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
27/09/2047		23/09/2048		23/01/2052		22/01/2053		23/09/2054	
23/09/2048		23/01/2052		22/01/2053		23/09/2054		23/11/2055	
बुध	17/11/2047	शुक्र	14/04/2049	सूर्य	10/02/2052	चंद्र	14/03/2053	मंगल	18/10/2054
केतु	08/12/2047	सूर्य	14/06/2049	चंद्र	12/03/2052	मंगल	19/04/2053	राहु	21/12/2054
शुक्र	06/02/2048	चंद्र	23/09/2049	मंगल	02/04/2052	राहु	19/07/2053	गुरु	16/02/2055
सूर्य	24/02/2048	मंगल	03/12/2049	राहु	27/05/2052	गुरु	08/10/2053	शनि	24/04/2055
चंद्र	26/03/2048	राहु	04/06/2050	गुरु	15/07/2052	शनि	13/01/2054	बुध	24/06/2055
मंगल	16/04/2048	गुरु	13/11/2050	शनि	11/09/2052	बुध	09/04/2054	केतु	19/07/2055
राहु	09/06/2048	शनि	25/05/2051	बुध	01/11/2052	केतु	14/05/2054	शुक्र	28/09/2055
गुरु	27/07/2048	बुध	13/11/2051	केतु	23/11/2052	शुक्र	24/08/2054	सूर्य	19/10/2055
शनि	23/09/2048	केतु	23/01/2052	शुक्र	22/01/2053	सूर्य	23/09/2054	चंद्र	23/11/2055

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
23/11/2055		23/11/2058		24/07/2061		23/09/2064		25/07/2067	
23/11/2058		24/07/2061		23/09/2064		25/07/2067		23/09/2068	
राहु	06/05/2056	गुरु	02/04/2059	शनि	23/01/2062	बुध	16/02/2065	केतु	18/08/2067
गुरु	29/09/2056	शनि	03/09/2059	बुध	06/07/2062	केतु	18/04/2065	शुक्र	28/10/2067
शनि	21/03/2057	बुध	19/01/2060	केतु	12/09/2062	शुक्र	07/10/2065	सूर्य	19/11/2067
बुध	24/08/2057	केतु	16/03/2060	शुक्र	23/03/2063	सूर्य	28/11/2065	चंद्र	24/12/2067
केतु	26/10/2057	शुक्र	25/08/2060	सूर्य	20/05/2063	चंद्र	22/02/2066	मंगल	18/01/2068
शुक्र	27/04/2058	सूर्य	13/10/2060	चंद्र	25/08/2063	मंगल	24/04/2066	राहु	22/03/2068
सूर्य	21/06/2058	चंद्र	02/01/2061	मंगल	31/10/2063	राहु	26/09/2066	गुरु	18/05/2068
चंद्र	20/09/2058	मंगल	28/02/2061	राहु	22/04/2064	गुरु	11/02/2067	शनि	24/07/2068
मंगल	23/11/2058	राहु	24/07/2061	गुरु	23/09/2064	शनि	25/07/2067	बुध	23/09/2068

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
23/09/2068		10/01/2069		12/07/2069		17/11/2069		11/10/2070	
10/01/2069		12/07/2069		17/11/2069		11/10/2070		31/07/2071	
सूर्य	28/09/2068	चंद्र	26/01/2069	मंगल	19/07/2069	राहु	05/01/2070	गुरु	19/11/2070
चंद्र	07/10/2068	मंगल	05/02/2069	राहु	08/08/2069	गुरु	18/02/2070	शनि	05/01/2071
मंगल	14/10/2068	राहु	05/03/2069	गुरु	25/08/2069	शनि	11/04/2070	बुध	15/02/2071
राहु	30/10/2068	गुरु	29/03/2069	शनि	14/09/2069	बुध	28/05/2070	केतु	04/03/2071
गुरु	14/11/2068	शनि	27/04/2069	बुध	02/10/2069	केतु	16/06/2070	शुक्र	22/04/2071
शनि	01/12/2068	बुध	23/05/2069	केतु	09/10/2069	शुक्र	09/08/2070	सूर्य	06/05/2071
बुध	17/12/2068	केतु	02/06/2069	शुक्र	31/10/2069	सूर्य	26/08/2070	चंद्र	31/05/2071
केतु	23/12/2068	शुक्र	03/07/2069	सूर्य	06/11/2069	चंद्र	22/09/2070	मंगल	17/06/2071
शुक्र	10/01/2069	सूर्य	12/07/2069	चंद्र	17/11/2069	मंगल	11/10/2070	राहु	31/07/2071

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
31/07/2071		12/07/2072		18/05/2073		23/09/2073		23/09/2074	
12/07/2072		18/05/2073		23/09/2073		23/09/2074		25/07/2075	
शनि	24/09/2071	बुध	25/08/2072	केतु	26/05/2073	शुक्र	23/11/2073	चंद्र	19/10/2074
बुध	12/11/2071	केतु	12/09/2072	शुक्र	16/06/2073	सूर्य	11/12/2073	मंगल	05/11/2074
केतु	02/12/2071	शुक्र	03/11/2072	सूर्य	22/06/2073	चंद्र	11/01/2074	राहु	21/12/2074
शुक्र	29/01/2072	सूर्य	18/11/2072	चंद्र	03/07/2073	मंगल	01/02/2074	गुरु	31/01/2075
सूर्य	15/02/2072	चंद्र	14/12/2072	मंगल	10/07/2073	राहु	28/03/2074	शनि	20/03/2075
चंद्र	15/03/2072	मंगल	01/01/2073	राहु	30/07/2073	गुरु	15/05/2074	बुध	02/05/2075
मंगल	04/04/2072	राहु	17/02/2073	गुरु	16/08/2073	शनि	12/07/2074	केतु	20/05/2075
राहु	26/05/2072	गुरु	30/03/2073	शनि	05/09/2073	बुध	02/09/2074	शुक्र	09/07/2075
गुरु	12/07/2072	शनि	18/05/2073	बुध	23/09/2073	केतु	23/09/2074	सूर्य	25/07/2075

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
25/07/2075		23/02/2076		24/08/2077		24/12/2078		24/07/2080	
23/02/2076		24/08/2077		24/12/2078		24/07/2080		23/12/2081	
मंगल	06/08/2075	राहु	15/05/2076	गुरु	27/10/2077	शनि	25/03/2079	बुध	05/10/2080
राहु	07/09/2075	गुरु	27/07/2076	शनि	13/01/2078	बुध	15/06/2079	केतु	04/11/2080
गुरु	05/10/2075	शनि	22/10/2076	बुध	23/03/2078	केतु	19/07/2079	शुक्र	30/01/2081
शनि	08/11/2075	बुध	07/01/2077	केतु	20/04/2078	शुक्र	23/10/2079	सूर्य	24/02/2081
बुध	08/12/2075	केतु	08/02/2077	शुक्र	10/07/2078	सूर्य	21/11/2079	चंद्र	09/04/2081
केतु	21/12/2075	शुक्र	11/05/2077	सूर्य	04/08/2078	चंद्र	08/01/2080	मंगल	09/05/2081
शुक्र	25/01/2076	सूर्य	07/06/2077	चंद्र	13/09/2078	मंगल	11/02/2080	राहु	25/07/2081
सूर्य	05/02/2076	चंद्र	23/07/2077	मंगल	11/10/2078	राहु	08/05/2080	गुरु	02/10/2081
चंद्र	23/02/2076	मंगल	24/08/2077	राहु	24/12/2078	गुरु	24/07/2080	शनि	23/12/2081

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
23/12/2081		24/07/2082		24/03/2084		23/09/2084		19/02/2085	
24/07/2082		24/03/2084		23/09/2084		19/02/2085		09/03/2086	
केतु	05/01/2082	शुक्र	03/11/2082	सूर्य	02/04/2084	मंगल	01/10/2084	राहु	17/04/2085
शुक्र	09/02/2082	सूर्य	03/12/2082	चंद्र	17/04/2084	राहु	24/10/2084	गुरु	08/06/2085
सूर्य	20/02/2082	चंद्र	23/01/2083	मंगल	28/04/2084	गुरु	13/11/2084	शनि	07/08/2085
चंद्र	10/03/2082	मंगल	27/02/2083	राहु	26/05/2084	शनि	06/12/2084	बुध	01/10/2085
मंगल	22/03/2082	राहु	30/05/2083	गुरु	19/06/2084	बुध	27/12/2084	केतु	23/10/2085
राहु	23/04/2082	गुरु	19/08/2083	शनि	18/07/2084	केतु	05/01/2085	शुक्र	26/12/2085
गुरु	21/05/2082	शनि	23/11/2083	बुध	13/08/2084	शुक्र	30/01/2085	सूर्य	14/01/2086
शनि	24/06/2082	बुध	18/02/2084	केतु	23/08/2084	सूर्य	06/02/2085	चंद्र	15/02/2086
बुध	24/07/2082	केतु	24/03/2084	शुक्र	23/09/2084	चंद्र	19/02/2085	मंगल	09/03/2086

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
09/03/2086		13/02/2087		24/03/2088		21/03/2089		17/08/2089	
13/02/2087		24/03/2088		21/03/2089		17/08/2089		18/10/2090	
गुरु	24/04/2086	शनि	18/04/2087	बुध	14/05/2088	केतु	30/03/2089	शुक्र	27/10/2089
शनि	17/06/2086	बुध	15/06/2087	केतु	05/06/2088	शुक्र	24/04/2089	सूर्य	18/11/2089
बुध	04/08/2086	केतु	08/07/2087	शुक्र	04/08/2088	सूर्य	01/05/2089	चंद्र	23/12/2089
केतु	24/08/2086	शुक्र	14/09/2087	सूर्य	22/08/2088	चंद्र	14/05/2089	मंगल	17/01/2090
शुक्र	20/10/2086	सूर्य	04/10/2087	चंद्र	21/09/2088	मंगल	22/05/2089	राहु	22/03/2090
सूर्य	06/11/2086	चंद्र	07/11/2087	मंगल	12/10/2088	राहु	14/06/2089	गुरु	18/05/2090
चंद्र	04/12/2086	मंगल	30/11/2087	राहु	06/12/2088	गुरु	04/07/2089	शनि	24/07/2090
मंगल	24/12/2086	राहु	30/01/2088	गुरु	23/01/2089	शनि	27/07/2089	बुध	23/09/2090
राहु	13/02/2087	गुरु	24/03/2088	शनि	21/03/2089	बुध	17/08/2089	केतु	18/10/2090

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
18/10/2090		22/02/2091		23/09/2091		06/06/2094		29/10/2096	
22/02/2091		23/09/2091		06/06/2094		29/10/2096		05/09/2099	
सूर्य	24/10/2090	चंद्र	12/03/2091	राहु	18/02/2092	गुरु	01/10/2094	शनि	12/04/2097
चंद्र	04/11/2090	मंगल	25/03/2091	गुरु	29/06/2092	शनि	16/02/2095	बुध	07/09/2097
मंगल	11/11/2090	राहु	26/04/2091	शनि	02/12/2092	बुध	21/06/2095	केतु	06/11/2097
राहु	30/11/2090	गुरु	24/05/2091	बुध	21/04/2093	केतु	11/08/2095	शुक्र	29/04/2098
गुरु	17/12/2090	शनि	27/06/2091	केतु	17/06/2093	शुक्र	04/01/2096	सूर्य	20/06/2098
शनि	07/01/2091	बुध	27/07/2091	शुक्र	29/11/2093	सूर्य	17/02/2096	चंद्र	15/09/2098
बुध	25/01/2091	केतु	08/08/2091	सूर्य	17/01/2094	चंद्र	30/04/2096	मंगल	14/11/2098
केतु	01/02/2091	शुक्र	13/09/2091	चंद्र	09/04/2094	मंगल	20/06/2096	राहु	19/04/2099
शुक्र	22/02/2091	सूर्य	23/09/2091	मंगल	06/06/2094	राहु	29/10/2096	गुरु	05/09/2099

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - बुध - चंद्र	
24/09/2025 17:57	
07/12/2025 01:15	
चंद्र	30/09/2025 20:34
मंगल	05/10/2025 03:11
राहु	16/10/2025 03:05
गुरु	25/10/2025 21:39
शनि	06/11/2025 12:12
बुध	16/11/2025 21:26
केतु	21/11/2025 04:04
शुक्र	03/12/2025 09:17
सूर्य	07/12/2025 01:15

बुध - बुध - मंगल	
07/12/2025 01:15	
27/01/2026 08:45	
मंगल	10/12/2025 01:05
राहु	17/12/2025 17:48
गुरु	24/12/2025 14:00
शनि	01/01/2026 17:00
बुध	08/01/2026 23:27
केतु	11/01/2026 23:18
शुक्र	20/01/2026 12:33
सूर्य	23/01/2026 02:07
चंद्र	27/01/2026 08:45

बुध - बुध - राहु	
27/01/2026 08:45	
08/06/2026 07:28	
राहु	16/02/2026 03:45
गुरु	05/03/2026 17:59
शनि	26/03/2026 15:23
बुध	14/04/2026 08:00
केतु	22/04/2026 00:43
शुक्र	14/05/2026 00:31
सूर्य	20/05/2026 14:51
चंद्र	31/05/2026 14:44
मंगल	08/06/2026 07:28

बुध - बुध - गुरु	
08/06/2026 07:28	
03/10/2026 14:19	
गुरु	23/06/2026 22:47
शनि	12/07/2026 12:28
बुध	29/07/2026 03:14
केतु	04/08/2026 23:26
शुक्र	24/08/2026 12:35
सूर्य	30/08/2026 09:19
चंद्र	09/09/2026 03:54
मंगल	16/09/2026 00:06
राहु	03/10/2026 14:19

बुध - बुध - शनि	
03/10/2026 14:19	
19/02/2027 20:58	
शनि	25/10/2026 15:35
बुध	14/11/2026 09:07
केतु	22/11/2026 12:06
शुक्र	15/12/2026 17:13
सूर्य	22/12/2026 16:21
चंद्र	03/01/2027 06:54
मंगल	11/01/2027 09:53
राहु	01/02/2027 07:17
गुरु	19/02/2027 20:58

बुध - केतु - केतु	
19/02/2027 20:58	
13/03/2027 00:03	
केतु	21/02/2027 02:33
शुक्र	24/02/2027 15:04
सूर्य	25/02/2027 16:25
चंद्र	27/02/2027 10:41
मंगल	28/02/2027 16:15
राहु	03/03/2027 20:19
गुरु	06/03/2027 15:56
शनि	10/03/2027 00:13
बुध	13/03/2027 00:03

बुध - केतु - शुक्र	
13/03/2027 00:03	
12/05/2027 08:53	
शुक्र	23/03/2027 01:32
सूर्य	26/03/2027 01:58
चंद्र	31/03/2027 02:42
मंगल	03/04/2027 15:13
राहु	12/04/2027 16:33
गुरु	20/04/2027 17:43
शनि	30/04/2027 07:07
बुध	08/05/2027 20:22
केतु	12/05/2027 08:53

बुध - केतु - सूर्य	
12/05/2027 08:53	
30/05/2027 11:32	
सूर्य	13/05/2027 06:37
चंद्र	14/05/2027 18:50
मंगल	15/05/2027 20:11
राहु	18/05/2027 13:23
गुरु	20/05/2027 23:20
शनि	23/05/2027 20:10
बुध	26/05/2027 09:44
केतु	27/05/2027 11:05
शुक्र	30/05/2027 11:32

बुध - केतु - चंद्र	
30/05/2027 11:32	
29/06/2027 15:57	
चंद्र	01/06/2027 23:54
मंगल	03/06/2027 18:09
राहु	08/06/2027 06:49
गुरु	12/06/2027 07:24
शनि	17/06/2027 02:06
बुध	21/06/2027 08:44
केतु	23/06/2027 02:59
शुक्र	28/06/2027 03:43
सूर्य	29/06/2027 15:57

बुध - केतु - मंगल	
29/06/2027 15:57	
20/07/2027 19:02	
मंगल	30/06/2027 21:31
राहु	04/07/2027 01:35
गुरु	06/07/2027 21:12
शनि	10/07/2027 05:29
बुध	13/07/2027 05:19
केतु	14/07/2027 10:54
शुक्र	17/07/2027 23:25
सूर्य	19/07/2027 00:46
चंद्र	20/07/2027 19:02

बुध - केतु - राहु	
20/07/2027 19:02	
13/09/2027 02:58	
राहु	28/07/2027 22:37
गुरु	05/08/2027 04:29
शनि	13/08/2027 18:56
बुध	21/08/2027 11:40
केतु	24/08/2027 15:44
शुक्र	02/09/2027 17:03
सूर्य	05/09/2027 10:15
चंद्र	09/09/2027 22:55
मंगल	13/09/2027 02:58

बुध - केतु - गुरु	
13/09/2027 02:58	
31/10/2027 10:02	
गुरु	19/09/2027 13:31
शनि	27/09/2027 05:02
बुध	04/10/2027 01:14
केतु	06/10/2027 20:51
शुक्र	14/10/2027 22:01
सूर्य	17/10/2027 07:59
चंद्र	21/10/2027 08:34
मंगल	24/10/2027 04:11
राहु	31/10/2027 10:02

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - केतु - शनि	
31/10/2027 10:02	
27/12/2027 18:25	
शनि	09/11/2027 11:58
बुध	17/11/2027 14:57
केतु	20/11/2027 23:14
शुक्र	30/11/2027 12:38
सूर्य	03/12/2027 09:27
चंद्र	08/12/2027 04:09
मंगल	11/12/2027 12:27
राहु	20/12/2027 02:54
गुरु	27/12/2027 18:25

बुध - केतु - बुध	
27/12/2027 18:25	
17/02/2028 01:55	
बुध	04/01/2028 00:53
केतु	07/01/2028 00:43
शुक्र	15/01/2028 13:58
सूर्य	18/01/2028 03:33
चंद्र	22/01/2028 10:10
मंगल	25/01/2028 10:00
राहु	02/02/2028 02:44
गुरु	08/02/2028 22:56
शनि	17/02/2028 01:55

बुध - शुक्र - शुक्र	
17/02/2028 01:55	
07/08/2028 13:25	
शुक्र	16/03/2028 19:50
सूर्य	25/03/2028 10:49
चंद्र	08/04/2028 19:46
मंगल	18/04/2028 21:14
राहु	14/05/2028 18:10
गुरु	06/06/2028 18:06
शनि	04/07/2028 01:31
बुध	28/07/2028 11:57
केतु	07/08/2028 13:25

बुध - शुक्र - सूर्य	
07/08/2028 13:25	
28/09/2028 07:16	
सूर्य	10/08/2028 03:31
चंद्र	14/08/2028 11:00
मंगल	17/08/2028 11:26
राहु	25/08/2028 05:43
गुरु	01/09/2028 03:18
शनि	09/09/2028 07:55
बुध	16/09/2028 15:51
केतु	19/09/2028 16:18
शुक्र	28/09/2028 07:16

बुध - शुक्र - चंद्र	
28/09/2028 07:16	
23/12/2028 13:01	
चंद्र	05/10/2028 11:45
मंगल	10/10/2028 12:29
राहु	23/10/2028 10:57
गुरु	03/11/2028 22:55
शनि	17/11/2028 14:37
बुध	29/11/2028 19:50
केतु	04/12/2028 20:34
शुक्र	19/12/2028 05:32
सूर्य	23/12/2028 13:01

बुध - शुक्र - मंगल	
23/12/2028 13:01	
21/02/2029 21:51	
मंगल	27/12/2028 01:32
राहु	05/01/2029 02:51
गुरु	13/01/2029 04:02
शनि	22/01/2029 17:26
बुध	31/01/2029 06:41
केतु	03/02/2029 19:12
शुक्र	13/02/2029 20:40
सूर्य	16/02/2029 21:07
चंद्र	21/02/2029 21:51

बुध - शुक्र - राहु	
21/02/2029 21:51	
27/07/2029 03:24	
राहु	17/03/2029 04:41
गुरु	06/04/2029 21:25
शनि	01/05/2029 11:18
बुध	23/05/2029 11:05
केतु	01/06/2029 12:24
शुक्र	27/06/2029 09:20
सूर्य	05/07/2029 03:36
चंद्र	18/07/2029 02:04
मंगल	27/07/2029 03:24

बुध - शुक्र - गुरु	
27/07/2029 03:24	
12/12/2029 03:00	
गुरु	14/08/2029 12:56
शनि	05/09/2029 09:17
बुध	24/09/2029 22:25
केतु	02/10/2029 23:36
शुक्र	25/10/2029 23:32
सूर्य	01/11/2029 21:07
चंद्र	13/11/2029 09:05
मंगल	21/11/2029 10:15
राहु	12/12/2029 03:00

बुध - शुक्र - शनि	
12/12/2029 03:00	
24/05/2030 23:31	
शनि	07/01/2030 01:39
बुध	30/01/2030 06:45
केतु	08/02/2030 20:09
शुक्र	08/03/2030 03:34
सूर्य	16/03/2030 08:12
चंद्र	29/03/2030 23:54
मंगल	08/04/2030 13:18
राहु	03/05/2030 03:11
गुरु	24/05/2030 23:31

बुध - शुक्र - बुध	
24/05/2030 23:31	
18/10/2030 14:06	
बुध	14/06/2030 17:59
केतु	23/06/2030 07:14
शुक्र	17/07/2030 17:40
सूर्य	25/07/2030 01:36
चंद्र	06/08/2030 06:48
मंगल	14/08/2030 20:03
राहु	05/09/2030 19:51
गुरु	25/09/2030 08:59
शनि	18/10/2030 14:06

बुध - शुक्र - केतु	
18/10/2030 14:06	
17/12/2030 22:55	
केतु	22/10/2030 02:37
शुक्र	01/11/2030 04:05
सूर्य	04/11/2030 04:31
चंद्र	09/11/2030 05:15
मंगल	12/11/2030 17:46
राहु	21/11/2030 19:06
गुरु	29/11/2030 20:16
शनि	09/12/2030 09:40
बुध	17/12/2030 22:55

बुध - सूर्य - सूर्य	
17/12/2030 22:55	
02/01/2031 11:28	
सूर्य	18/12/2030 17:33
चंद्र	20/12/2030 00:36
मंगल	20/12/2030 22:20
राहु	23/12/2030 06:13
गुरु	25/12/2030 07:53
शनि	27/12/2030 18:52
बुध	29/12/2030 23:39
केतु	30/12/2030 21:23
शुक्र	02/01/2031 11:28

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - सूर्य - चंद्र	
02/01/2031 11:28	
28/01/2031 08:24	
चंद्र	04/01/2031 15:13
मंगल	06/01/2031 03:26
राहु	10/01/2031 00:35
गुरु	13/01/2031 11:22
शनि	17/01/2031 13:41
बुध	21/01/2031 05:39
केतु	22/01/2031 17:52
शुक्र	27/01/2031 01:21
सूर्य	28/01/2031 08:24

बुध - सूर्य - मंगल	
28/01/2031 08:24	
15/02/2031 11:03	
मंगल	29/01/2031 09:45
राहु	01/02/2031 02:57
गुरु	03/02/2031 12:54
शनि	06/02/2031 09:43
बुध	08/02/2031 23:18
केतु	10/02/2031 00:39
शुक्र	13/02/2031 01:06
सूर्य	13/02/2031 22:50
चंद्र	15/02/2031 11:03

बुध - सूर्य - राहु	
15/02/2031 11:03	
03/04/2031 00:43	
राहु	22/02/2031 10:42
गुरु	28/02/2031 15:43
शनि	08/03/2031 00:41
बुध	14/03/2031 15:01
केतु	17/03/2031 08:13
शुक्र	25/03/2031 02:30
सूर्य	27/03/2031 10:23
चंद्र	31/03/2031 07:31
मंगल	03/04/2031 00:43

बुध - सूर्य - गुरु	
03/04/2031 00:43	
14/05/2031 10:12	
गुरु	08/04/2031 13:11
शनि	15/04/2031 02:29
बुध	20/04/2031 23:13
केतु	23/04/2031 09:10
शुक्र	30/04/2031 06:45
सूर्य	02/05/2031 08:26
चंद्र	05/05/2031 19:13
मंगल	08/05/2031 05:10
राहु	14/05/2031 10:12

बुध - सूर्य - शनि	
14/05/2031 10:12	
02/07/2031 13:57	
शनि	22/05/2031 04:59
बुध	29/05/2031 04:07
केतु	01/06/2031 00:56
शुक्र	09/06/2031 05:34
सूर्य	11/06/2031 16:33
चंद्र	15/06/2031 18:52
मंगल	18/06/2031 15:41
राहु	26/06/2031 00:39
गुरु	02/07/2031 13:57

बुध - सूर्य - बुध	
02/07/2031 13:57	
15/08/2031 13:31	
बुध	08/07/2031 19:29
केतु	11/07/2031 09:04
शुक्र	18/07/2031 17:00
सूर्य	20/07/2031 21:46
चंद्र	24/07/2031 13:44
मंगल	27/07/2031 03:19
राहु	02/08/2031 17:39
गुरु	08/08/2031 14:23
शनि	15/08/2031 13:31

बुध - सूर्य - केतु	
15/08/2031 13:31	
02/09/2031 16:10	
केतु	16/08/2031 14:53
शुक्र	19/08/2031 15:19
सूर्य	20/08/2031 13:03
चंद्र	22/08/2031 01:16
मंगल	23/08/2031 02:37
राहु	25/08/2031 19:49
गुरु	28/08/2031 05:46
शनि	31/08/2031 02:36
बुध	02/09/2031 16:10

बुध - सूर्य - शुक्र	
02/09/2031 16:10	
24/10/2031 10:01	
शुक्र	11/09/2031 07:09
सूर्य	13/09/2031 21:14
चंद्र	18/09/2031 04:43
मंगल	21/09/2031 05:10
राहु	28/09/2031 23:27
गुरु	05/10/2031 21:01
शनि	14/10/2031 01:39
बुध	21/10/2031 09:35
केतु	24/10/2031 10:01

बुध - चंद्र - चंद्र	
24/10/2031 10:01	
06/12/2031 12:54	
चंद्र	28/10/2031 00:16
मंगल	30/10/2031 12:38
राहु	05/11/2031 23:51
गुरु	11/11/2031 17:50
शनि	18/11/2031 13:42
बुध	24/11/2031 16:18
केतु	27/11/2031 04:40
शुक्र	04/12/2031 09:09
सूर्य	06/12/2031 12:54

बुध - चंद्र - मंगल	
06/12/2031 12:54	
05/01/2032 17:18	
मंगल	08/12/2031 07:09
राहु	12/12/2031 19:49
गुरु	16/12/2031 20:24
शनि	21/12/2031 15:06
बुध	25/12/2031 21:44
केतु	27/12/2031 15:59
शुक्र	01/01/2032 16:43
सूर्य	03/01/2032 04:56
चंद्र	05/01/2032 17:18

बुध - चंद्र - राहु	
05/01/2032 17:18	
23/03/2032 08:05	
राहु	17/01/2032 08:43
गुरु	27/01/2032 17:06
शनि	09/02/2032 00:02
बुध	19/02/2032 23:56
केतु	24/02/2032 12:35
शुक्र	08/03/2032 11:03
सूर्य	12/03/2032 08:11
चंद्र	18/03/2032 19:25
मंगल	23/03/2032 08:05

बुध - चंद्र - गुरु	
23/03/2032 08:05	
31/05/2032 07:53	
गुरु	01/04/2032 12:51
शनि	12/04/2032 11:01
बुध	22/04/2032 05:36
केतु	26/04/2032 06:11
शुक्र	07/05/2032 18:09
सूर्य	11/05/2032 04:56
चंद्र	16/05/2032 22:55
मंगल	20/05/2032 23:31
राहु	31/05/2032 07:53

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - चंद्र - शनि	
31/05/2032 07:53	
21/08/2032 06:09	
शनि	13/06/2032 07:12
बुध	24/06/2032 21:46
केतु	29/06/2032 16:28
शुक्र	13/07/2032 08:10
सूर्य	17/07/2032 10:29
चंद्र	24/07/2032 06:20
मंगल	29/07/2032 01:02
राहु	10/08/2032 07:59
गुरु	21/08/2032 06:09

बुध - चंद्र - बुध	
21/08/2032 06:09	
02/11/2032 13:26	
बुध	31/08/2032 15:23
केतु	04/09/2032 22:00
शुक्र	17/09/2032 03:13
सूर्य	20/09/2032 19:11
चंद्र	26/09/2032 21:47
मंगल	01/10/2032 04:25
राहु	12/10/2032 04:18
गुरु	21/10/2032 22:53
शनि	02/11/2032 13:26

बुध - चंद्र - केतु	
02/11/2032 13:26	
02/12/2032 17:51	
केतु	04/11/2032 07:41
शुक्र	09/11/2032 08:25
सूर्य	10/11/2032 20:39
चंद्र	13/11/2032 09:01
मंगल	15/11/2032 03:16
राहु	19/11/2032 15:56
गुरु	23/11/2032 16:31
शनि	28/11/2032 11:13
बुध	02/12/2032 17:51

बुध - चंद्र - शुक्र	
02/12/2032 17:51	
26/02/2033 23:36	
शुक्र	17/12/2032 02:48
सूर्य	21/12/2032 10:17
चंद्र	28/12/2032 14:46
मंगल	02/01/2033 15:30
राहु	15/01/2033 13:58
गुरु	27/01/2033 01:56
शनि	09/02/2033 17:39
बुध	21/02/2033 22:52
केतु	26/02/2033 23:36

बुध - चंद्र - सूर्य	
26/02/2033 23:36	
24/03/2033 20:31	
सूर्य	28/02/2033 06:38
चंद्र	02/03/2033 10:23
मंगल	03/03/2033 22:36
राहु	07/03/2033 19:45
गुरु	11/03/2033 06:32
शनि	15/03/2033 08:51
बुध	19/03/2033 00:49
केतु	20/03/2033 13:02
शुक्र	24/03/2033 20:31

बुध - मंगल - मंगल	
24/03/2033 20:31	
14/04/2033 23:36	
मंगल	26/03/2033 02:06
राहु	29/03/2033 06:10
गुरु	01/04/2033 01:46
शनि	04/04/2033 10:04
बुध	07/04/2033 09:54
केतु	08/04/2033 15:29
शुक्र	12/04/2033 04:00
सूर्य	13/04/2033 05:21
चंद्र	14/04/2033 23:36

बुध - मंगल - राहु	
14/04/2033 23:36	
08/06/2033 07:33	
राहु	23/04/2033 03:12
गुरु	30/04/2033 09:03
शनि	08/05/2033 23:31
बुध	16/05/2033 16:14
केतु	19/05/2033 20:18
शुक्र	28/05/2033 21:38
सूर्य	31/05/2033 14:50
चंद्र	05/06/2033 03:29
मंगल	08/06/2033 07:33

बुध - मंगल - गुरु	
08/06/2033 07:33	
26/07/2033 14:37	
गुरु	14/06/2033 18:06
शनि	22/06/2033 09:37
बुध	29/06/2033 05:49
केतु	02/07/2033 01:25
शुक्र	10/07/2033 02:36
सूर्य	12/07/2033 12:33
चंद्र	16/07/2033 13:08
मंगल	19/07/2033 08:45
राहु	26/07/2033 14:37

बुध - मंगल - शनि	
26/07/2033 14:37	
21/09/2033 23:00	
शनि	04/08/2033 16:32
बुध	12/08/2033 19:32
केतु	16/08/2033 03:49
शुक्र	25/08/2033 17:13
सूर्य	28/08/2033 14:02
चंद्र	02/09/2033 08:44
मंगल	05/09/2033 17:01
राहु	14/09/2033 07:29
गुरु	21/09/2033 23:00

बुध - मंगल - बुध	
21/09/2033 23:00	
12/11/2033 06:30	
बुध	29/09/2033 05:27
केतु	02/10/2033 05:18
शुक्र	10/10/2033 18:33
सूर्य	13/10/2033 08:07
चंद्र	17/10/2033 14:45
मंगल	20/10/2033 14:35
राहु	28/10/2033 07:18
गुरु	04/11/2033 03:30
शनि	12/11/2033 06:30

बुध - मंगल - केतु	
12/11/2033 06:30	
03/12/2033 09:35	
केतु	13/11/2033 12:05
शुक्र	17/11/2033 00:35
सूर्य	18/11/2033 01:57
चंद्र	19/11/2033 20:12
मंगल	21/11/2033 01:47
राहु	24/11/2033 05:51
गुरु	27/11/2033 01:27
शनि	30/11/2033 09:45
बुध	03/12/2033 09:35

बुध - मंगल - शुक्र	
03/12/2033 09:35	
01/02/2034 18:25	
शुक्र	13/12/2033 11:03
सूर्य	16/12/2033 11:30
चंद्र	21/12/2033 12:14
मंगल	25/12/2033 00:45
राहु	03/01/2034 02:04
गुरु	11/01/2034 03:15
शनि	20/01/2034 16:39
बुध	29/01/2034 05:54
केतु	01/02/2034 18:25

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - बुध - चंद्र - चंद्र	
24/09/2025 17:57	
30/09/2025 20:34	
चंद्र	25/09/2025 06:10
मंगल	25/09/2025 14:44
राहु	26/09/2025 12:43
गुरु	27/09/2025 08:16
शनि	28/09/2025 07:29
बुध	29/09/2025 04:15
केतु	29/09/2025 12:48
शुक्र	30/09/2025 13:14
सूर्य	30/09/2025 20:34

बुध - बुध - चंद्र - मंगल	
30/09/2025 20:34	
05/10/2025 03:11	
मंगल	01/10/2025 02:33
राहु	01/10/2025 17:57
गुरु	02/10/2025 07:38
शनि	02/10/2025 23:53
बुध	03/10/2025 14:25
केतु	03/10/2025 20:24
शुक्र	04/10/2025 13:30
सूर्य	04/10/2025 18:38
चंद्र	05/10/2025 03:11

बुध - बुध - चंद्र - राहु	
05/10/2025 03:11	
16/10/2025 03:05	
राहु	06/10/2025 18:46
गुरु	08/10/2025 05:58
शनि	09/10/2025 23:45
बुध	11/10/2025 13:08
केतु	12/10/2025 04:31
शुक्र	14/10/2025 00:30
सूर्य	14/10/2025 13:42
चंद्र	15/10/2025 11:41
मंगल	16/10/2025 03:05

बुध - बुध - चंद्र - गुरु	
16/10/2025 03:05	
25/10/2025 21:39	
गुरु	17/10/2025 10:22
शनि	18/10/2025 23:30
बुध	20/10/2025 08:44
केतु	20/10/2025 22:25
शुक्र	22/10/2025 13:31
सूर्य	23/10/2025 01:14
चंद्र	23/10/2025 20:47
मंगल	24/10/2025 10:28
राहु	25/10/2025 21:39

बुध - बुध - चंद्र - शनि	
25/10/2025 21:39	
06/11/2025 12:12	
शनि	27/10/2025 17:45
बुध	29/10/2025 09:13
केतु	30/10/2025 01:28
शुक्र	31/10/2025 23:54
सूर्य	01/11/2025 13:49
चंद्र	02/11/2025 13:02
मंगल	03/11/2025 05:17
राहु	04/11/2025 23:04
गुरु	06/11/2025 12:12

बुध - बुध - चंद्र - बुध	
06/11/2025 12:12	
16/11/2025 21:26	
बुध	07/11/2025 23:31
केतु	08/11/2025 14:03
शुक्र	10/11/2025 07:36
सूर्य	10/11/2025 20:03
चंद्र	11/11/2025 16:49
मंगल	12/11/2025 07:22
राहु	13/11/2025 20:45
गुरु	15/11/2025 05:59
शनि	16/11/2025 21:26

बुध - बुध - चंद्र - केतु	
16/11/2025 21:26	
21/11/2025 04:04	
केतु	17/11/2025 03:26
शुक्र	17/11/2025 20:32
सूर्य	18/11/2025 01:40
चंद्र	18/11/2025 10:13
मंगल	18/11/2025 16:12
राहु	19/11/2025 07:36
गुरु	19/11/2025 21:17
शनि	20/11/2025 13:32
बुध	21/11/2025 04:04

बुध - बुध - चंद्र - शुक्र	
21/11/2025 04:04	
03/12/2025 09:17	
शुक्र	23/11/2025 04:56
सूर्य	23/11/2025 19:36
चंद्र	24/11/2025 20:02
मंगल	25/11/2025 13:08
राहु	27/11/2025 09:07
गुरु	29/11/2025 00:13
शनि	30/11/2025 22:38
बुध	02/12/2025 16:11
केतु	03/12/2025 09:17

बुध - बुध - चंद्र - सूर्य	
03/12/2025 09:17	
07/12/2025 01:15	
सूर्य	03/12/2025 13:41
चंद्र	03/12/2025 21:01
मंगल	04/12/2025 02:08
राहु	04/12/2025 15:20
गुरु	05/12/2025 03:04
शनि	05/12/2025 16:59
बुध	06/12/2025 05:27
केतु	06/12/2025 10:35
शुक्र	07/12/2025 01:15

बुध - बुध - मंगल - मंगल	
07/12/2025 01:15	
10/12/2025 01:05	
मंगल	07/12/2025 05:26
राहु	07/12/2025 16:13
गुरु	08/12/2025 01:47
शनि	08/12/2025 13:10
बुध	08/12/2025 23:20
केतु	09/12/2025 03:32
शुक्र	09/12/2025 15:30
सूर्य	09/12/2025 19:06
चंद्र	10/12/2025 01:05

बुध - बुध - मंगल - राहु	
10/12/2025 01:05	
17/12/2025 17:48	
राहु	11/12/2025 04:47
गुरु	12/12/2025 05:25
शनि	13/12/2025 10:40
बुध	14/12/2025 12:50
केतु	14/12/2025 23:37
शुक्र	16/12/2025 06:24
सूर्य	16/12/2025 15:38
चंद्र	17/12/2025 07:02
मंगल	17/12/2025 17:48

बुध - बुध - मंगल - गुरु	
17/12/2025 17:48	
24/12/2025 14:00	
गुरु	18/12/2025 15:42
शनि	19/12/2025 17:42
बुध	20/12/2025 16:58
केतु	21/12/2025 02:32
शुक्र	22/12/2025 05:54
सूर्य	22/12/2025 14:07
चंद्र	23/12/2025 03:48
मंगल	23/12/2025 13:23
राहु	24/12/2025 14:00

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - बुध - मंगल - शनि	
24/12/2025 14:00	
01/01/2026 17:00	
शनि	25/12/2025 20:53
बुध	27/12/2025 00:30
केतु	27/12/2025 11:53
शुक्र	28/12/2025 20:23
सूर्य	29/12/2025 06:08
चंद्र	29/12/2025 22:22
मंगल	30/12/2025 09:45
राहु	31/12/2025 15:00
गुरु	01/01/2026 17:00

बुध - बुध - मंगल - बुध	
01/01/2026 17:00	
08/01/2026 23:27	
बुध	02/01/2026 17:43
केतु	03/01/2026 03:53
शुक्र	04/01/2026 08:58
सूर्य	04/01/2026 17:41
चंद्र	05/01/2026 08:14
मंगल	05/01/2026 18:24
राहु	06/01/2026 20:34
गुरु	07/01/2026 19:50
शनि	08/01/2026 23:27

बुध - बुध - मंगल - केतु	
08/01/2026 23:27	
11/01/2026 23:18	
केतु	09/01/2026 03:39
शुक्र	09/01/2026 15:37
सूर्य	09/01/2026 19:13
चंद्र	10/01/2026 01:12
मंगल	10/01/2026 05:23
राहु	10/01/2026 16:10
गुरु	11/01/2026 01:45
शनि	11/01/2026 13:07
बुध	11/01/2026 23:18

बुध - बुध - मंगल - शुक्र	
11/01/2026 23:18	
20/01/2026 12:33	
शुक्र	13/01/2026 09:30
सूर्य	13/01/2026 19:46
चंद्र	14/01/2026 12:52
मंगल	15/01/2026 00:51
राहु	16/01/2026 07:38
गुरु	17/01/2026 11:00
शनि	18/01/2026 19:30
बुध	20/01/2026 00:34
केतु	20/01/2026 12:33

बुध - बुध - मंगल - सूर्य	
20/01/2026 12:33	
23/01/2026 02:07	
सूर्य	20/01/2026 15:37
चंद्र	20/01/2026 20:45
मंगल	21/01/2026 00:21
राहु	21/01/2026 09:35
गुरु	21/01/2026 17:48
शनि	22/01/2026 03:33
बुध	22/01/2026 12:16
केतु	22/01/2026 15:51
शुक्र	23/01/2026 02:07

बुध - बुध - मंगल - चंद्र	
23/01/2026 02:07	
27/01/2026 08:45	
चंद्र	23/01/2026 10:40
मंगल	23/01/2026 16:40
राहु	24/01/2026 08:03
गुरु	24/01/2026 21:44
शनि	25/01/2026 13:59
बुध	26/01/2026 04:31
केतु	26/01/2026 10:31
शुक्र	27/01/2026 03:37
सूर्य	27/01/2026 08:45

बुध - बुध - राहु - राहु	
27/01/2026 08:45	
16/02/2026 03:45	
राहु	30/01/2026 08:00
गुरु	01/02/2026 23:20
शनि	05/02/2026 02:32
बुध	07/02/2026 21:50
केतु	09/02/2026 01:33
शुक्र	12/02/2026 08:43
सूर्य	13/02/2026 08:28
चंद्र	15/02/2026 00:03
मंगल	16/02/2026 03:45

बुध - बुध - राहु - गुरु	
16/02/2026 03:45	
05/03/2026 17:59	
गुरु	18/02/2026 12:03
शनि	21/02/2026 06:54
बुध	23/02/2026 18:43
केतु	24/02/2026 19:21
शुक्र	27/02/2026 17:43
सूर्य	28/02/2026 14:50
चंद्र	02/03/2026 02:01
मंगल	03/03/2026 02:39
राहु	05/03/2026 17:59

बुध - बुध - राहु - शनि	
05/03/2026 17:59	
26/03/2026 15:23	
शनि	09/03/2026 01:22
बुध	12/03/2026 00:24
केतु	13/03/2026 05:39
शुक्र	16/03/2026 17:13
सूर्य	17/03/2026 18:17
चंद्र	19/03/2026 12:04
मंगल	20/03/2026 17:19
राहु	23/03/2026 20:32
गुरु	26/03/2026 15:23

बुध - बुध - राहु - बुध	
26/03/2026 15:23	
14/04/2026 08:00	
बुध	29/03/2026 06:56
केतु	30/03/2026 09:06
शुक्र	02/04/2026 11:52
सूर्य	03/04/2026 10:18
चंद्र	04/04/2026 23:41
मंगल	06/04/2026 01:51
राहु	08/04/2026 21:09
गुरु	11/04/2026 08:58
शनि	14/04/2026 08:00

बुध - बुध - राहु - केतु	
14/04/2026 08:00	
22/04/2026 00:43	
केतु	14/04/2026 18:46
शुक्र	16/04/2026 01:34
सूर्य	16/04/2026 10:48
चंद्र	17/04/2026 02:11
मंगल	17/04/2026 12:58
राहु	18/04/2026 16:40
गुरु	19/04/2026 17:18
शनि	20/04/2026 22:33
बुध	22/04/2026 00:43

बुध - बुध - राहु - शुक्र	
22/04/2026 00:43	
14/05/2026 00:31	
शुक्र	25/04/2026 16:41
सूर्य	26/04/2026 19:05
चंद्र	28/04/2026 15:04
मंगल	29/04/2026 21:51
राहु	03/05/2026 05:01
गुरु	06/05/2026 03:23
शनि	09/05/2026 14:57
बुध	12/05/2026 17:43
केतु	14/05/2026 00:31

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 17 वर्ष 8 मास 29 दिन

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष	
14/12/1989		13/09/2007		13/09/2018		13/09/2030		13/09/2043	
13/09/2007		13/09/2018		13/09/2030		13/09/2043		13/09/2057	
शुक्र	29/06/1992	सूर्य	28/09/2008	मंगल	10/12/2019	गुरु	27/02/2032	शनि	22/05/2045
सूर्य	14/03/1994	मंगल	18/11/2009	गुरु	15/04/2021	शनि	22/09/2033	केतु	15/03/2047
मंगल	23/01/1996	गुरु	11/02/2011	शनि	26/09/2022	केतु	29/05/2035	चंद्र	17/02/2049
गुरु	29/01/1998	शनि	10/06/2012	केतु	14/04/2024	चंद्र	14/03/2037	बुध	08/03/2051
शनि	02/04/2000	केतु	12/11/2013	चंद्र	10/12/2025	बुध	08/02/2039	शुक्र	10/05/2053
केतु	31/07/2002	चंद्र	20/05/2015	बुध	13/09/2027	शुक्र	14/02/2041	सूर्य	07/09/2054
चंद्र	23/01/2005	बुध	29/12/2016	शुक्र	24/07/2029	सूर्य	10/05/2042	मंगल	18/02/2056
बुध	13/09/2007	शुक्र	13/09/2018	सूर्य	13/09/2030	मंगल	13/09/2043	गुरु	13/09/2057

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष	
13/09/2057		12/09/2072		12/09/2088		14/09/2105	
12/09/2072		12/09/2088		14/09/2105		00/00/0000	
केतु	22/08/2059	चंद्र	28/11/2074	बुध	11/03/2091	शुक्र	15/12/2105
चंद्र	16/09/2061	बुध	02/04/2077	शुक्र	30/10/2093		00/00/0000
बुध	28/11/2063	शुक्र	26/09/2079	सूर्य	11/06/2095		00/00/0000
शुक्र	27/03/2066	सूर्य	02/04/2081	मंगल	14/03/2097		00/00/0000
सूर्य	28/08/2067	मंगल	28/11/2082	गुरु	08/02/2099		00/00/0000
मंगल	17/03/2069	गुरु	12/09/2084	शनि	27/02/2101		00/00/0000
गुरु	21/11/2070	शनि	19/08/2086	केतु	11/05/2103		00/00/0000
शनि	12/09/2072	केतु	12/09/2088	चंद्र	14/09/2105		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र	
14/12/1989	
29/06/1992	
शुक्र	18/02/1990
सूर्य	26/05/1990
मंगल	08/09/1990
गुरु	01/01/1991
शनि	04/05/1991
केतु	13/09/1991
चंद्र	31/01/1992
बुध	29/06/1992

शुक्र - सूर्य	
29/06/1992	
14/03/1994	
सूर्य	27/08/1992
मंगल	31/10/1992
गुरु	08/01/1993
शनि	25/03/1993
केतु	13/06/1993
चंद्र	07/09/1993
बुध	08/12/1993
शुक्र	14/03/1994

शुक्र - मंगल	
14/03/1994	
23/01/1996	
मंगल	24/05/1994
गुरु	08/08/1994
शनि	29/10/1994
केतु	25/01/1995
चंद्र	29/04/1995
बुध	06/08/1995
शुक्र	20/11/1995
सूर्य	23/01/1996

शुक्र - गुरु	
23/01/1996	
29/01/1998	
गुरु	15/04/1996
शनि	13/07/1996
केतु	16/10/1996
चंद्र	26/01/1997
बुध	14/05/1997
शुक्र	05/09/1997
सूर्य	14/11/1997
मंगल	29/01/1998

शुक्र - शनि	
29/01/1998	
02/04/2000	
शनि	05/05/1998
केतु	16/08/1998
चंद्र	03/12/1998
बुध	29/03/1999
शुक्र	30/07/1999
सूर्य	14/10/1999
मंगल	04/01/2000
गुरु	02/04/2000

शुक्र - केतु	
02/04/2000	
31/07/2002	
केतु	21/07/2000
चंद्र	15/11/2000
बुध	20/03/2001
शुक्र	29/07/2001
सूर्य	18/10/2001
मंगल	14/01/2002
गुरु	19/04/2002
शनि	31/07/2002

शुक्र - चंद्र	
31/07/2002	
23/01/2005	
चंद्र	03/12/2002
बुध	15/04/2003
शुक्र	03/09/2003
सूर्य	28/11/2003
मंगल	29/02/2004
गुरु	10/06/2004
शनि	27/09/2004
केतु	23/01/2005

शुक्र - बुध	
23/01/2005	
13/09/2007	
बुध	13/06/2005
शुक्र	09/11/2005
सूर्य	09/02/2006
मंगल	19/05/2006
गुरु	04/09/2006
शनि	30/12/2006
केतु	03/05/2007
चंद्र	13/09/2007

सूर्य - सूर्य	
13/09/2007	
28/09/2008	
सूर्य	19/10/2007
मंगल	28/11/2007
गुरु	09/01/2008
शनि	24/02/2008
केतु	14/04/2008
चंद्र	05/06/2008
बुध	31/07/2008
शुक्र	28/09/2008

सूर्य - मंगल	
28/09/2008	
18/11/2009	
मंगल	10/11/2008
गुरु	27/12/2008
शनि	15/02/2009
केतु	10/04/2009
चंद्र	06/06/2009
बुध	06/08/2009
शुक्र	09/10/2009
सूर्य	18/11/2009

सूर्य - गुरु	
18/11/2009	
11/02/2011	
गुरु	07/01/2010
शनि	03/03/2010
केतु	30/04/2010
चंद्र	01/07/2010
बुध	05/09/2010
शुक्र	14/11/2010
सूर्य	27/12/2010
मंगल	11/02/2011

सूर्य - शनि	
11/02/2011	
10/06/2012	
शनि	11/04/2011
केतु	12/06/2011
चंद्र	18/08/2011
बुध	28/10/2011
शुक्र	12/01/2012
सूर्य	27/02/2012
मंगल	17/04/2012
गुरु	10/06/2012

सूर्य - केतु	
10/06/2012	
12/11/2013	
केतु	16/08/2012
चंद्र	27/10/2012
बुध	11/01/2013
शुक्र	02/04/2013
सूर्य	21/05/2013
मंगल	14/07/2013
गुरु	10/09/2013
शनि	12/11/2013

सूर्य - चंद्र	
12/11/2013	
20/05/2015	
चंद्र	27/01/2014
बुध	18/04/2014
शुक्र	13/07/2014
सूर्य	04/09/2014
मंगल	31/10/2014
गुरु	01/01/2015
शनि	09/03/2015
केतु	20/05/2015

सूर्य - बुध	
20/05/2015	
29/12/2016	
बुध	14/08/2015
शुक्र	13/11/2015
सूर्य	08/01/2016
मंगल	09/03/2016
गुरु	14/05/2016
शनि	24/07/2016
केतु	08/10/2016
चंद्र	29/12/2016

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु	
29/12/2016		13/09/2018		10/12/2019		15/04/2021		26/09/2022	
13/09/2018		10/12/2019		15/04/2021		26/09/2022		14/04/2024	
शुक्र	04/04/2017	मंगल	30/10/2018	गुरु	03/02/2020	शनि	17/06/2021	केतु	08/12/2022
सूर्य	02/06/2017	गुरु	20/12/2018	शनि	03/04/2020	केतु	25/08/2021	चंद्र	24/02/2023
मंगल	06/08/2017	शनि	12/02/2019	केतु	05/06/2020	चंद्र	06/11/2021	बुध	18/05/2023
गुरु	15/10/2017	केतु	12/04/2019	चंद्र	12/08/2020	बुध	22/01/2022	शुक्र	14/08/2023
शनि	29/12/2017	चंद्र	14/06/2019	बुध	23/10/2020	शुक्र	14/04/2022	सूर्य	07/10/2023
केतु	20/03/2018	बुध	19/08/2019	शुक्र	07/01/2021	सूर्य	04/06/2022	मंगल	04/12/2023
चंद्र	14/06/2018	शुक्र	28/10/2019	सूर्य	23/02/2021	मंगल	28/07/2022	गुरु	06/02/2024
बुध	13/09/2018	सूर्य	10/12/2019	मंगल	15/04/2021	गुरु	26/09/2022	शनि	14/04/2024

मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु	
14/04/2024		10/12/2025		13/09/2027		24/07/2029		13/09/2030	
10/12/2025		13/09/2027		24/07/2029		13/09/2030		27/02/2032	
चंद्र	07/07/2024	बुध	14/03/2026	शुक्र	28/12/2027	सूर्य	02/09/2029	गुरु	12/11/2030
बुध	03/10/2024	शुक्र	22/06/2026	सूर्य	01/03/2028	मंगल	15/10/2029	शनि	15/01/2031
शुक्र	05/01/2025	सूर्य	22/08/2026	मंगल	11/05/2028	गुरु	30/11/2029	केतु	25/03/2031
सूर्य	03/03/2025	मंगल	27/10/2026	गुरु	26/07/2028	शनि	19/01/2030	चंद्र	06/06/2031
मंगल	05/05/2025	गुरु	07/01/2027	शनि	16/10/2028	केतु	14/03/2030	बुध	23/08/2031
गुरु	12/07/2025	शनि	26/03/2027	केतु	12/01/2029	चंद्र	11/05/2030	शुक्र	14/11/2031
शनि	23/09/2025	केतु	17/06/2027	चंद्र	16/04/2029	बुध	10/07/2030	सूर्य	03/01/2032
केतु	10/12/2025	चंद्र	13/09/2027	बुध	24/07/2029	शुक्र	13/09/2030	मंगल	27/02/2032

गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र	
27/02/2032		22/09/2033		29/05/2035		14/03/2037		08/02/2039	
22/09/2033		29/05/2035		14/03/2037		08/02/2039		14/02/2041	
शनि	06/05/2032	केतु	11/12/2033	चंद्र	28/08/2035	बुध	24/06/2037	शुक्र	02/06/2039
केतु	19/07/2032	चंद्र	05/03/2034	बुध	01/12/2035	शुक्र	10/10/2037	सूर्य	11/08/2039
चंद्र	06/10/2032	बुध	03/06/2034	शुक्र	12/03/2036	सूर्य	15/12/2037	मंगल	26/10/2039
बुध	29/12/2032	शुक्र	07/09/2034	सूर्य	13/05/2036	मंगल	25/02/2038	गुरु	17/01/2040
शुक्र	28/03/2033	सूर्य	04/11/2034	मंगल	20/07/2036	गुरु	14/05/2038	शनि	15/04/2040
सूर्य	22/05/2033	मंगल	06/01/2035	गुरु	01/10/2036	शनि	06/08/2038	केतु	19/07/2040
मंगल	20/07/2033	गुरु	16/03/2035	शनि	19/12/2036	केतु	04/11/2038	चंद्र	29/10/2040
गुरु	22/09/2033	शनि	29/05/2035	केतु	14/03/2037	चंद्र	08/02/2039	बुध	14/02/2041

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र	
14/02/2041		10/05/2042		13/09/2043		22/05/2045		15/03/2047	
10/05/2042		13/09/2043		22/05/2045		15/03/2047		17/02/2049	
सूर्य	28/03/2041	मंगल	30/06/2042	शनि	27/11/2043	केतु	16/08/2045	चंद्र	20/06/2047
मंगल	14/05/2041	गुरु	24/08/2042	केतु	15/02/2044	चंद्र	15/11/2045	बुध	01/10/2047
गुरु	03/07/2041	शनि	22/10/2042	चंद्र	10/05/2044	बुध	20/02/2046	शुक्र	19/01/2048
शनि	27/08/2041	केतु	25/12/2042	बुध	08/08/2044	शुक्र	03/06/2046	सूर्य	26/03/2048
केतु	24/10/2041	चंद्र	02/03/2043	शुक्र	12/11/2044	सूर्य	04/08/2046	मंगल	07/06/2048
चंद्र	25/12/2041	बुध	13/05/2043	सूर्य	09/01/2045	मंगल	12/10/2046	गुरु	25/08/2048
बुध	01/03/2042	शुक्र	29/07/2043	मंगल	14/03/2045	गुरु	25/12/2046	शनि	18/11/2048
शुक्र	10/05/2042	सूर्य	13/09/2043	गुरु	22/05/2045	शनि	15/03/2047	केतु	17/02/2049

शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु	
17/02/2049		08/03/2051		10/05/2053		07/09/2054		18/02/2056	
08/03/2051		10/05/2053		07/09/2054		18/02/2056		13/09/2057	
बुध	07/06/2049	शुक्र	09/07/2051	सूर्य	25/06/2053	मंगल	31/10/2054	गुरु	22/04/2056
शुक्र	01/10/2049	सूर्य	23/09/2051	मंगल	14/08/2053	गुरु	30/12/2054	शनि	30/06/2056
सूर्य	11/12/2049	मंगल	14/12/2051	गुरु	07/10/2053	शनि	04/03/2055	केतु	12/09/2056
मंगल	27/02/2050	गुरु	12/03/2052	शनि	05/12/2053	केतु	11/05/2055	चंद्र	30/11/2056
गुरु	22/05/2050	शनि	15/06/2052	केतु	05/02/2054	चंद्र	23/07/2055	बुध	22/02/2057
शनि	20/08/2050	केतु	26/09/2052	चंद्र	13/04/2054	बुध	08/10/2055	शुक्र	22/05/2057
केतु	25/11/2050	चंद्र	13/01/2053	बुध	23/06/2054	शुक्र	29/12/2055	सूर्य	15/07/2057
चंद्र	08/03/2051	बुध	10/05/2053	शुक्र	07/09/2054	सूर्य	18/02/2056	मंगल	13/09/2057

केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
13/09/2057		22/08/2059		16/09/2061		28/11/2063		27/03/2066	
22/08/2059		16/09/2061		28/11/2063		27/03/2066		28/08/2067	
केतु	13/12/2057	चंद्र	04/12/2059	बुध	12/01/2062	शुक्र	08/04/2064	सूर्य	15/05/2066
चंद्र	21/03/2058	बुध	24/03/2060	शुक्र	16/05/2062	सूर्य	27/06/2064	मंगल	08/07/2066
बुध	03/07/2058	शुक्र	19/07/2060	सूर्य	31/07/2062	मंगल	23/09/2064	गुरु	04/09/2066
शुक्र	21/10/2058	सूर्य	29/09/2060	मंगल	22/10/2062	गुरु	28/12/2064	शनि	06/11/2066
सूर्य	27/12/2058	मंगल	16/12/2060	गुरु	20/01/2063	शनि	09/04/2065	केतु	12/01/2067
मंगल	10/03/2059	गुरु	11/03/2061	शनि	27/04/2063	केतु	28/07/2065	चंद्र	25/03/2067
गुरु	29/05/2059	शनि	10/06/2061	केतु	09/08/2063	चंद्र	22/11/2065	बुध	09/06/2067
शनि	22/08/2059	केतु	16/09/2061	चंद्र	28/11/2063	बुध	27/03/2066	शुक्र	28/08/2067

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध	
28/08/2067		17/03/2069		21/11/2070		12/09/2072		28/11/2074	
17/03/2069		21/11/2070		12/09/2072		28/11/2074		02/04/2077	
मंगल	26/10/2067	गुरु	25/05/2069	शनि	09/02/2071	चंद्र	02/01/2073	बुध	02/04/2075
गुरु	29/12/2067	शनि	07/08/2069	केतु	06/05/2071	बुध	30/04/2073	शुक्र	13/08/2075
शनि	06/03/2068	केतु	26/10/2069	चंद्र	05/08/2071	शुक्र	02/09/2073	सूर्य	02/11/2075
केतु	18/05/2068	चंद्र	18/01/2070	बुध	10/11/2071	सूर्य	17/11/2073	मंगल	30/01/2076
चंद्र	04/08/2068	बुध	18/04/2070	शुक्र	20/02/2072	मंगल	09/02/2074	गुरु	05/05/2076
बुध	27/10/2068	शुक्र	23/07/2070	सूर्य	23/04/2072	गुरु	10/05/2074	शनि	16/08/2076
शुक्र	23/01/2069	सूर्य	19/09/2070	मंगल	30/06/2072	शनि	15/08/2074	केतु	05/12/2076
सूर्य	17/03/2069	मंगल	21/11/2070	गुरु	12/09/2072	केतु	28/11/2074	चंद्र	02/04/2077

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
02/04/2077		26/09/2079		02/04/2081		28/11/2082		12/09/2084	
26/09/2079		02/04/2081		28/11/2082		12/09/2084		19/08/2086	
शुक्र	21/08/2077	सूर्य	17/11/2079	मंगल	04/06/2081	गुरु	09/02/2083	शनि	07/12/2084
सूर्य	15/11/2077	मंगल	14/01/2080	गुरु	10/08/2081	शनि	29/04/2083	केतु	08/03/2085
मंगल	17/02/2078	गुरु	16/03/2080	शनि	22/10/2081	केतु	23/07/2083	चंद्र	13/06/2085
गुरु	29/05/2078	शनि	22/05/2080	केतु	08/01/2082	चंद्र	21/10/2083	बुध	24/09/2085
शनि	16/09/2078	केतु	01/08/2080	चंद्र	02/04/2082	बुध	25/01/2084	शुक्र	12/01/2086
केतु	11/01/2079	चंद्र	17/10/2080	बुध	29/06/2082	शुक्र	06/05/2084	सूर्य	20/03/2086
चंद्र	16/05/2079	बुध	06/01/2081	शुक्र	01/10/2082	सूर्य	07/07/2084	मंगल	01/06/2086
बुध	26/09/2079	शुक्र	02/04/2081	सूर्य	28/11/2082	मंगल	12/09/2084	गुरु	19/08/2086

चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल	
19/08/2086		12/09/2088		11/03/2091		30/10/2093		11/06/2095	
12/09/2088		11/03/2091		30/10/2093		11/06/2095		14/03/2097	
केतु	25/11/2086	बुध	24/01/2089	शुक्र	08/08/2091	सूर्य	25/12/2093	मंगल	16/08/2095
चंद्र	09/03/2087	शुक्र	14/06/2089	सूर्य	07/11/2091	मंगल	24/02/2094	गुरु	27/10/2095
बुध	27/06/2087	सूर्य	08/09/2089	मंगल	15/02/2092	गुरु	01/05/2094	शनि	13/01/2096
शुक्र	23/10/2087	मंगल	11/12/2089	गुरु	02/06/2092	शनि	11/07/2094	केतु	05/04/2096
सूर्य	02/01/2088	गुरु	23/03/2090	शनि	26/09/2092	केतु	25/09/2094	चंद्र	02/07/2096
मंगल	21/03/2088	शनि	11/07/2090	केतु	29/01/2093	चंद्र	15/12/2094	बुध	05/10/2096
गुरु	13/06/2088	केतु	06/11/2090	चंद्र	11/06/2093	बुध	11/03/2095	शुक्र	12/01/2097
शनि	12/09/2088	चंद्र	11/03/2091	बुध	30/10/2093	शुक्र	11/06/2095	सूर्य	14/03/2097

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 10 वर्ष 6 मास 6 दिन

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
14/12/1989		20/06/2000		19/02/2013		20/06/2024		19/02/2029	
20/06/2000		19/02/2013		20/06/2024		19/02/2029		21/06/2042	
गुरु	24/03/1991	शनि	23/06/2002	बुध	28/09/2014	केतु	28/09/2024	शुक्र	11/05/2031
शनि	30/11/1992	बुध	08/04/2004	केतु	28/05/2015	शुक्र	09/07/2025	सूर्य	10/01/2032
बुध	05/06/1994	केतु	03/01/2005	शुक्र	17/04/2017	सूर्य	02/10/2025	चंद्र	19/02/2033
केतु	18/01/1995	शुक्र	13/02/2007	सूर्य	10/11/2017	चंद्र	21/02/2026	मंगल	30/11/2033
शुक्र	28/10/1996	सूर्य	03/10/2007	चंद्र	21/10/2018	मंगल	01/06/2026	राहु	30/11/2035
सूर्य	11/05/1997	चंद्र	22/10/2008	मंगल	19/06/2019	राहु	11/02/2027	गुरु	10/09/2037
चंद्र	01/04/1998	मंगल	19/07/2009	राहु	01/03/2021	गुरु	26/09/2027	शनि	21/10/2039
मंगल	14/11/1998	राहु	13/06/2011	गुरु	04/09/2022	शनि	22/06/2028	बुध	10/09/2041
राहु	20/06/2000	गुरु	19/02/2013	शनि	20/06/2024	बुध	19/02/2029	केतु	21/06/2042

सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष	
21/06/2042		21/06/2046		19/02/2053		20/10/2057		20/10/2069	
21/06/2046		19/02/2053		20/10/2057		20/10/2069		00/00/0000	
सूर्य	02/09/2042	चंद्र	10/01/2047	मंगल	29/05/2053	राहु	09/08/2059	गुरु	14/12/2069
चंद्र	02/01/2043	मंगल	01/06/2047	राहु	09/02/2054	गुरु	15/03/2061		00/00/0000
मंगल	28/03/2043	राहु	31/05/2048	गुरु	24/09/2054	शनि	07/02/2063		00/00/0000
राहु	02/11/2043	गुरु	21/04/2049	शनि	21/06/2055	बुध	20/10/2064		00/00/0000
गुरु	15/05/2044	शनि	11/05/2050	बुध	18/02/2056	केतु	03/07/2065		00/00/0000
शनि	01/01/2045	बुध	21/04/2051	केतु	27/05/2056	शुक्र	03/07/2067		00/00/0000
बुध	27/07/2045	केतु	10/09/2051	शुक्र	07/03/2057	सूर्य	07/02/2068		00/00/0000
केतु	20/10/2045	शुक्र	20/10/2052	सूर्य	31/05/2057	चंद्र	07/02/2069		00/00/0000
शुक्र	21/06/2046	सूर्य	19/02/2053	चंद्र	20/10/2057	मंगल	20/10/2069		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
14/12/1989		24/03/1991		30/11/1992		05/06/1994		18/01/1995	
24/03/1991		30/11/1992		05/06/1994		18/01/1995		28/10/1996	
गुरु	29/12/1989	शनि	29/06/1991	बुध	16/02/1993	केतु	18/06/1994	शुक्र	06/05/1995
शनि	21/03/1990	बुध	25/09/1991	केतु	20/03/1993	शुक्र	26/07/1994	सूर्य	08/06/1995
बुध	02/06/1990	केतु	31/10/1991	शुक्र	20/06/1993	सूर्य	06/08/1994	चंद्र	01/08/1995
केतु	03/07/1990	शुक्र	11/02/1992	सूर्य	18/07/1993	चंद्र	25/08/1994	मंगल	08/09/1995
शुक्र	27/09/1990	सूर्य	12/03/1992	चंद्र	02/09/1993	मंगल	07/09/1994	राहु	14/12/1995
सूर्य	23/10/1990	चंद्र	03/05/1992	मंगल	04/10/1993	राहु	11/10/1994	गुरु	10/03/1996
चंद्र	06/12/1990	मंगल	08/06/1992	राहु	26/12/1993	गुरु	11/11/1994	शनि	20/06/1996
मंगल	05/01/1991	राहु	08/09/1992	गुरु	09/03/1994	शनि	17/12/1994	बुध	20/09/1996
राहु	24/03/1991	गुरु	30/11/1992	शनि	05/06/1994	बुध	18/01/1995	केतु	28/10/1996

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
28/10/1996		11/05/1997		01/04/1998		14/11/1998		20/06/2000	
11/05/1997		01/04/1998		14/11/1998		20/06/2000		23/06/2002	
सूर्य	07/11/1996	चंद्र	07/06/1997	मंगल	14/04/1998	राहु	10/02/1999	शनि	14/10/2000
चंद्र	23/11/1996	मंगल	26/06/1997	राहु	18/05/1998	गुरु	29/04/1999	बुध	26/01/2001
मंगल	05/12/1996	राहु	14/08/1997	गुरु	17/06/1998	शनि	30/07/1999	केतु	10/03/2001
राहु	03/01/1997	गुरु	26/09/1997	शनि	23/07/1998	बुध	21/10/1999	शुक्र	10/07/2001
गुरु	29/01/1997	शनि	16/11/1997	बुध	24/08/1998	केतु	24/11/1999	सूर्य	16/08/2001
शनि	01/03/1997	बुध	01/01/1998	केतु	07/09/1998	शुक्र	29/02/2000	चंद्र	16/10/2001
बुध	28/03/1997	केतु	20/01/1998	शुक्र	15/10/1998	सूर्य	30/03/2000	मंगल	27/11/2001
केतु	09/04/1997	शुक्र	15/03/1998	सूर्य	26/10/1998	चंद्र	17/05/2000	राहु	17/03/2002
शुक्र	11/05/1997	सूर्य	01/04/1998	चंद्र	14/11/1998	मंगल	20/06/2000	गुरु	23/06/2002

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
23/06/2002		08/04/2004		03/01/2005		13/02/2007		03/10/2007	
08/04/2004		03/01/2005		13/02/2007		03/10/2007		22/10/2008	
बुध	24/09/2002	केतु	24/04/2004	शुक्र	12/05/2005	सूर्य	25/02/2007	चंद्र	04/11/2007
केतु	01/11/2002	शुक्र	08/06/2004	सूर्य	19/06/2005	चंद्र	16/03/2007	मंगल	26/11/2007
शुक्र	18/02/2003	सूर्य	21/06/2004	चंद्र	22/08/2005	मंगल	30/03/2007	राहु	23/01/2008
सूर्य	23/03/2003	चंद्र	14/07/2004	मंगल	06/10/2005	राहु	03/05/2007	गुरु	14/03/2008
चंद्र	17/05/2003	मंगल	30/07/2004	राहु	30/01/2006	गुरु	03/06/2007	शनि	14/05/2008
मंगल	24/06/2003	राहु	08/09/2004	गुरु	13/05/2006	शनि	10/07/2007	बुध	08/07/2008
राहु	30/09/2003	गुरु	14/10/2004	शनि	12/09/2006	बुध	12/08/2007	केतु	31/07/2008
गुरु	27/12/2003	शनि	26/11/2004	बुध	30/12/2006	केतु	25/08/2007	शुक्र	03/10/2008
शनि	08/04/2004	बुध	03/01/2005	केतु	13/02/2007	शुक्र	03/10/2007	सूर्य	22/10/2008

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
22/10/2008		19/07/2009		13/06/2011		19/02/2013		28/09/2014	
19/07/2009		13/06/2011		19/02/2013		28/09/2014		28/05/2015	
मंगल	07/11/2008	राहु	31/10/2009	गुरु	03/09/2011	बुध	13/05/2013	केतु	12/10/2014
राहु	17/12/2008	गुरु	01/02/2010	शनि	10/12/2011	केतु	16/06/2013	शुक्र	22/11/2014
गुरु	22/01/2009	शनि	21/05/2010	बुध	06/03/2012	शुक्र	22/09/2013	सूर्य	04/12/2014
शनि	06/03/2009	बुध	28/08/2010	केतु	11/04/2012	सूर्य	21/10/2013	चंद्र	24/12/2014
बुध	13/04/2009	केतु	07/10/2010	शुक्र	23/07/2012	चंद्र	09/12/2013	मंगल	07/01/2015
केतु	29/04/2009	शुक्र	31/01/2011	सूर्य	23/08/2012	मंगल	12/01/2014	राहु	12/02/2015
शुक्र	13/06/2009	सूर्य	07/03/2011	चंद्र	13/10/2012	राहु	10/04/2014	गुरु	16/03/2015
सूर्य	26/06/2009	चंद्र	03/05/2011	मंगल	18/11/2012	गुरु	27/06/2014	शनि	24/04/2015
चंद्र	19/07/2009	मंगल	13/06/2011	राहु	19/02/2013	शनि	28/09/2014	बुध	28/05/2015

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
28/05/2015		17/04/2017		10/11/2017		21/10/2018		19/06/2019	
17/04/2017		10/11/2017		21/10/2018		19/06/2019		01/03/2021	
शुक्र	20/09/2015	सूर्य	27/04/2017	चंद्र	08/12/2017	मंगल	04/11/2018	राहु	20/09/2019
सूर्य	24/10/2015	चंद्र	14/05/2017	मंगल	28/12/2017	राहु	10/12/2018	गुरु	12/12/2019
चंद्र	21/12/2015	मंगल	26/05/2017	राहु	18/02/2018	गुरु	11/01/2019	शनि	19/03/2020
मंगल	30/01/2016	राहु	26/06/2017	गुरु	05/04/2018	शनि	18/02/2019	बुध	15/06/2020
राहु	12/05/2016	गुरु	24/07/2017	शनि	30/05/2018	बुध	25/03/2019	केतु	21/07/2020
गुरु	12/08/2016	शनि	26/08/2017	बुध	18/07/2018	केतु	08/04/2019	शुक्र	02/11/2020
शनि	30/11/2016	बुध	24/09/2017	केतु	07/08/2018	शुक्र	18/05/2019	सूर्य	03/12/2020
बुध	07/03/2017	केतु	06/10/2017	शुक्र	03/10/2018	सूर्य	30/05/2019	चंद्र	24/01/2021
केतु	17/04/2017	शुक्र	10/11/2017	सूर्य	21/10/2018	चंद्र	19/06/2019	मंगल	01/03/2021

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
01/03/2021		04/09/2022		20/06/2024		28/09/2024		09/07/2025	
04/09/2022		20/06/2024		28/09/2024		09/07/2025		02/10/2025	
गुरु	14/05/2021	शनि	17/12/2022	केतु	26/06/2024	शुक्र	14/11/2024	सूर्य	13/07/2025
शनि	09/08/2021	बुध	20/03/2023	शुक्र	13/07/2024	सूर्य	28/11/2024	चंद्र	20/07/2025
बुध	26/10/2021	केतु	27/04/2023	सूर्य	18/07/2024	चंद्र	22/12/2024	मंगल	25/07/2025
केतु	27/11/2021	शुक्र	14/08/2023	चंद्र	26/07/2024	मंगल	08/01/2025	राहु	07/08/2025
शुक्र	27/02/2022	सूर्य	16/09/2023	मंगल	01/08/2024	राहु	19/02/2025	गुरु	18/08/2025
सूर्य	27/03/2022	चंद्र	09/11/2023	राहु	16/08/2024	गुरु	29/03/2025	शनि	01/09/2025
चंद्र	12/05/2022	मंगल	18/12/2023	गुरु	29/08/2024	शनि	13/05/2025	बुध	13/09/2025
मंगल	13/06/2022	राहु	25/03/2024	शनि	14/09/2024	बुध	22/06/2025	केतु	18/09/2025
राहु	04/09/2022	गुरु	20/06/2024	बुध	28/09/2024	केतु	09/07/2025	शुक्र	02/10/2025

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
02/10/2025		21/02/2026		01/06/2026		11/02/2027		26/09/2027	
21/02/2026		01/06/2026		11/02/2027		26/09/2027		22/06/2028	
चंद्र	14/10/2025	मंगल	27/02/2026	राहु	09/07/2026	गुरु	14/03/2027	शनि	08/11/2027
मंगल	22/10/2025	राहु	14/03/2026	गुरु	12/08/2026	शनि	18/04/2027	बुध	16/12/2027
राहु	12/11/2025	गुरु	27/03/2026	शनि	21/09/2026	बुध	21/05/2027	केतु	01/01/2028
गुरु	01/12/2025	शनि	12/04/2026	बुध	28/10/2026	केतु	03/06/2027	शुक्र	15/02/2028
शनि	24/12/2025	बुध	26/04/2026	केतु	12/11/2026	शुक्र	11/07/2027	सूर्य	29/02/2028
बुध	13/01/2026	केतु	02/05/2026	शुक्र	24/12/2026	सूर्य	22/07/2027	चंद्र	22/03/2028
केतु	21/01/2026	शुक्र	18/05/2026	सूर्य	06/01/2027	चंद्र	10/08/2027	मंगल	07/04/2028
शुक्र	14/02/2026	सूर्य	23/05/2026	चंद्र	27/01/2027	मंगल	23/08/2027	राहु	17/05/2028
सूर्य	21/02/2026	चंद्र	01/06/2026	मंगल	11/02/2027	राहु	26/09/2027	गुरु	22/06/2028

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
22/06/2028		19/02/2029		11/05/2031		10/01/2032		19/02/2033	
19/02/2029		11/05/2031		10/01/2032		19/02/2033		30/11/2033	
बुध	27/07/2028	शुक्र	04/07/2029	सूर्य	24/05/2031	चंद्र	13/02/2032	मंगल	07/03/2033
केतु	10/08/2028	सूर्य	14/08/2029	चंद्र	13/06/2031	मंगल	07/03/2032	राहु	19/04/2033
शुक्र	19/09/2028	चंद्र	20/10/2029	मंगल	27/06/2031	राहु	07/05/2032	गुरु	27/05/2033
सूर्य	01/10/2028	मंगल	07/12/2029	राहु	03/08/2031	गुरु	30/06/2032	शनि	11/07/2033
चंद्र	21/10/2028	राहु	07/04/2030	गुरु	04/09/2031	शनि	03/09/2032	बुध	20/08/2033
मंगल	04/11/2028	गुरु	25/07/2030	शनि	13/10/2031	बुध	30/10/2032	केतु	06/09/2033
राहु	10/12/2028	शनि	30/11/2030	बुध	16/11/2031	केतु	23/11/2032	शुक्र	23/10/2033
गुरु	12/01/2029	बुध	25/03/2031	केतु	30/11/2031	शुक्र	30/01/2033	सूर्य	06/11/2033
शनि	19/02/2029	केतु	11/05/2031	शुक्र	10/01/2032	सूर्य	19/02/2033	चंद्र	30/11/2033

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
30/11/2033		30/11/2035		10/09/2037		21/10/2039		10/09/2041	
30/11/2035		10/09/2037		21/10/2039		10/09/2041		21/06/2042	
राहु	19/03/2034	गुरु	25/02/2036	शनि	10/01/2038	बुध	27/01/2040	केतु	26/09/2041
गुरु	25/06/2034	शनि	07/06/2036	बुध	29/04/2038	केतु	07/03/2040	शुक्र	13/11/2041
शनि	19/10/2034	बुध	07/09/2036	केतु	13/06/2038	शुक्र	30/06/2040	सूर्य	27/11/2041
बुध	30/01/2035	केतु	15/10/2036	शुक्र	20/10/2038	सूर्य	03/08/2040	चंद्र	21/12/2041
केतु	14/03/2035	शुक्र	31/01/2037	सूर्य	27/11/2038	चंद्र	30/09/2040	मंगल	06/01/2042
शुक्र	13/07/2035	सूर्य	04/03/2037	चंद्र	30/01/2039	मंगल	09/11/2040	राहु	18/02/2042
सूर्य	19/08/2035	चंद्र	27/04/2037	मंगल	16/03/2039	राहु	21/02/2041	गुरु	28/03/2042
चंद्र	19/10/2035	मंगल	04/06/2037	राहु	10/07/2039	गुरु	24/05/2041	शनि	12/05/2042
मंगल	30/11/2035	राहु	10/09/2037	गुरु	21/10/2039	शनि	10/09/2041	बुध	21/06/2042

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
21/06/2042		02/09/2042		02/01/2043		28/03/2043		02/11/2043	
02/09/2042		02/01/2043		28/03/2043		02/11/2043		15/05/2044	
सूर्य	24/06/2042	चंद्र	12/09/2042	मंगल	07/01/2043	राहु	30/04/2043	गुरु	28/11/2043
चंद्र	01/07/2042	मंगल	19/09/2042	राहु	19/01/2043	गुरु	29/05/2043	शनि	29/12/2043
मंगल	05/07/2042	राहु	07/10/2042	गुरु	31/01/2043	शनि	03/07/2043	बुध	25/01/2044
राहु	16/07/2042	गुरु	24/10/2042	शनि	13/02/2043	बुध	03/08/2043	केतु	06/02/2044
गुरु	26/07/2042	शनि	12/11/2042	बुध	25/02/2043	केतु	15/08/2043	शुक्र	09/03/2044
शनि	06/08/2042	बुध	29/11/2042	केतु	02/03/2043	शुक्र	21/09/2043	सूर्य	19/03/2044
बुध	16/08/2042	केतु	06/12/2042	शुक्र	16/03/2043	सूर्य	02/10/2043	चंद्र	04/04/2044
केतु	21/08/2042	शुक्र	27/12/2042	सूर्य	21/03/2043	चंद्र	20/10/2043	मंगल	16/04/2044
शुक्र	02/09/2042	सूर्य	02/01/2043	चंद्र	28/03/2043	मंगल	02/11/2043	राहु	15/05/2044

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
15/05/2044		01/01/2045		27/07/2045		20/10/2045		21/06/2046	
01/01/2045		27/07/2045		20/10/2045		21/06/2046		10/01/2047	
शनि	20/06/2044	बुध	30/01/2045	केतु	01/08/2045	शुक्र	30/11/2045	चंद्र	08/07/2046
बुध	23/07/2044	केतु	12/02/2045	शुक्र	15/08/2045	सूर्य	12/12/2045	मंगल	20/07/2046
केतु	06/08/2044	शुक्र	18/03/2045	सूर्य	20/08/2045	चंद्र	01/01/2046	राहु	19/08/2046
शुक्र	13/09/2044	सूर्य	28/03/2045	चंद्र	27/08/2045	मंगल	16/01/2046	गुरु	15/09/2046
सूर्य	25/09/2044	चंद्र	15/04/2045	मंगल	01/09/2045	राहु	21/02/2046	शनि	17/10/2046
चंद्र	14/10/2044	मंगल	27/04/2045	राहु	13/09/2045	गुरु	26/03/2046	बुध	15/11/2046
मंगल	28/10/2044	राहु	28/05/2045	गुरु	25/09/2045	शनि	03/05/2046	केतु	27/11/2046
राहु	01/12/2044	गुरु	24/06/2045	शनि	08/10/2045	बुध	07/06/2046	शुक्र	31/12/2046
गुरु	01/01/2045	शनि	27/07/2045	बुध	20/10/2045	केतु	21/06/2046	सूर्य	10/01/2047

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
10/01/2047		01/06/2047		31/05/2048		21/04/2049		11/05/2050	
01/06/2047		31/05/2048		21/04/2049		11/05/2050		21/04/2051	
मंगल	18/01/2047	राहु	26/07/2047	गुरु	13/07/2048	शनि	21/06/2049	बुध	29/06/2050
राहु	08/02/2047	गुरु	12/09/2047	शनि	03/09/2048	बुध	14/08/2049	केतु	19/07/2050
गुरु	27/02/2047	शनि	09/11/2047	बुध	19/10/2048	केतु	06/09/2049	शुक्र	15/09/2050
शनि	22/03/2047	बुध	31/12/2047	केतु	07/11/2048	शुक्र	09/11/2049	सूर्य	02/10/2050
बुध	11/04/2047	केतु	21/01/2048	शुक्र	31/12/2048	सूर्य	28/11/2049	चंद्र	31/10/2050
केतु	19/04/2047	शुक्र	22/03/2048	सूर्य	16/01/2049	चंद्र	31/12/2049	मंगल	20/11/2050
शुक्र	13/05/2047	सूर्य	09/04/2048	चंद्र	12/02/2049	मंगल	22/01/2050	राहु	11/01/2051
सूर्य	20/05/2047	चंद्र	10/05/2048	मंगल	03/03/2049	राहु	21/03/2050	गुरु	26/02/2051
चंद्र	01/06/2047	मंगल	31/05/2048	राहु	21/04/2049	गुरु	11/05/2050	शनि	21/04/2051

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
21/04/2051		10/09/2051		20/10/2052		19/02/2053		29/05/2053	
10/09/2051		20/10/2052		19/02/2053		29/05/2053		09/02/2054	
केतु	29/04/2051	शुक्र	17/11/2051	सूर्य	26/10/2052	मंगल	25/02/2053	राहु	07/07/2053
शुक्र	23/05/2051	सूर्य	07/12/2051	चंद्र	05/11/2052	राहु	12/03/2053	गुरु	10/08/2053
सूर्य	30/05/2051	चंद्र	10/01/2052	मंगल	12/11/2052	गुरु	25/03/2053	शनि	19/09/2053
चंद्र	11/06/2051	मंगल	03/02/2052	राहु	01/12/2052	शनि	10/04/2053	बुध	25/10/2053
मंगल	19/06/2051	राहु	04/04/2052	गुरु	17/12/2052	बुध	24/04/2053	केतु	09/11/2053
राहु	11/07/2051	गुरु	28/05/2052	शनि	05/01/2053	केतु	29/04/2053	शुक्र	22/12/2053
गुरु	30/07/2051	शनि	31/07/2052	बुध	22/01/2053	शुक्र	16/05/2053	सूर्य	04/01/2054
शनि	21/08/2051	बुध	26/09/2052	केतु	30/01/2053	सूर्य	21/05/2053	चंद्र	25/01/2054
बुध	10/09/2051	केतु	20/10/2052	शुक्र	19/02/2053	चंद्र	29/05/2053	मंगल	09/02/2054

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
09/02/2054		24/09/2054		21/06/2055		18/02/2056		27/05/2056	
24/09/2054		21/06/2055		18/02/2056		27/05/2056		07/03/2057	
गुरु	11/03/2054	शनि	06/11/2054	बुध	25/07/2055	केतु	23/02/2056	शुक्र	13/07/2056
शनि	16/04/2054	बुध	14/12/2054	केतु	08/08/2055	शुक्र	11/03/2056	सूर्य	28/07/2056
बुध	18/05/2054	केतु	30/12/2054	शुक्र	18/09/2055	सूर्य	16/03/2056	चंद्र	20/08/2056
केतु	01/06/2054	शुक्र	13/02/2055	सूर्य	30/09/2055	चंद्र	24/03/2056	मंगल	06/09/2056
शुक्र	09/07/2054	सूर्य	26/02/2055	चंद्र	20/10/2055	मंगल	30/03/2056	राहु	18/10/2056
सूर्य	20/07/2054	चंद्र	21/03/2055	मंगल	03/11/2055	राहु	14/04/2056	गुरु	25/11/2056
चंद्र	08/08/2054	मंगल	06/04/2055	राहु	09/12/2055	गुरु	27/04/2056	शनि	09/01/2057
मंगल	21/08/2054	राहु	16/05/2055	गुरु	10/01/2056	शनि	13/05/2056	बुध	18/02/2057
राहु	24/09/2054	गुरु	21/06/2055	शनि	18/02/2056	बुध	27/05/2056	केतु	07/03/2057

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
07/03/2057		31/05/2057		20/10/2057		09/08/2059		15/03/2061	
31/05/2057		20/10/2057		09/08/2059		15/03/2061		07/02/2063	
सूर्य	11/03/2057	चंद्र	12/06/2057	राहु	27/01/2058	गुरु	26/10/2059	शनि	03/07/2061
चंद्र	18/03/2057	मंगल	20/06/2057	गुरु	25/04/2058	शनि	26/01/2060	बुध	09/10/2061
मंगल	23/03/2057	राहु	12/07/2057	शनि	07/08/2058	बुध	18/04/2060	केतु	19/11/2061
राहु	05/04/2057	गुरु	31/07/2057	बुध	08/11/2058	केतु	22/05/2060	शुक्र	15/03/2062
गुरु	17/04/2057	शनि	22/08/2057	केतु	16/12/2058	शुक्र	28/08/2060	सूर्य	18/04/2062
शनि	30/04/2057	बुध	11/09/2057	शुक्र	05/04/2059	सूर्य	26/09/2060	चंद्र	15/06/2062
बुध	12/05/2057	केतु	20/09/2057	सूर्य	08/05/2059	चंद्र	13/11/2060	मंगल	26/07/2062
केतु	17/05/2057	शुक्र	13/10/2057	चंद्र	01/07/2059	मंगल	18/12/2060	राहु	07/11/2062
शुक्र	31/05/2057	सूर्य	20/10/2057	मंगल	09/08/2059	राहु	15/03/2061	गुरु	07/02/2063

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 11 वर्ष 2 मास 11 दिन

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
14/12/1989		24/02/2001		24/02/2009		24/02/2026		25/02/2036	
24/02/2001		24/02/2009		24/02/2026		25/02/2036		24/02/2055	
	00/00/0000	मंगल	28/09/2001	बुध	29/10/2011	शनि	28/01/2027	गुरु	29/06/2039
	14/12/1989	बुध	01/01/2003	शनि	26/05/2013	गुरु	01/11/2028	राहु	09/08/2041
बुध	15/09/1991	शनि	29/09/2003	गुरु	23/05/2016	राहु	12/12/2029	शुक्र	19/04/2045
शनि	04/02/1993	गुरु	24/02/2005	राहु	12/04/2018	शुक्र	22/11/2031	सूर्य	10/05/2046
गुरु	25/09/1995	राहु	15/01/2006	शुक्र	02/08/2021	सूर्य	12/06/2032	चंद्र	28/12/2048
राहु	26/05/1997	शुक्र	06/08/2007	सूर्य	13/07/2022	चंद्र	01/11/2033	मंगल	26/05/2050
शुक्र	25/04/2000	सूर्य	15/01/2008	चंद्र	21/11/2024	मंगल	30/07/2034	बुध	23/05/2053
सूर्य	24/02/2001	चंद्र	24/02/2009	मंगल	24/02/2026	बुध	25/02/2036	शनि	24/02/2055

राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
24/02/2055		24/02/2067		25/02/2088		24/02/2094	
24/02/2067		25/02/2088		24/02/2094		00/00/0000	
राहु	25/06/2056	शुक्र	27/03/2071	सूर्य	25/06/2088	चंद्र	26/03/2096
शुक्र	26/10/2058	सूर्य	26/05/2072	चंद्र	26/04/2089	मंगल	06/05/2097
सूर्य	26/06/2059	चंद्र	26/04/2075	मंगल	05/10/2089	बुध	14/12/2097
चंद्र	24/02/2061	मंगल	14/11/2076	बुध	15/09/2090		00/00/0000
मंगल	15/01/2062	बुध	06/03/2080	शनि	06/04/2091		00/00/0000
बुध	05/12/2063	शनि	14/02/2082	गुरु	25/04/2092		00/00/0000
शनि	14/01/2065	गुरु	25/10/2085	राहु	25/12/2092		00/00/0000
गुरु	24/02/2067	राहु	25/02/2088	शुक्र	24/02/2094		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र	
14/12/1989		15/09/1991		04/02/1993		25/09/1995		26/05/1997	
15/09/1991		04/02/1993		25/09/1995		26/05/1997		25/04/2000	
	00/00/0000	शनि	01/11/1991	गुरु	23/07/1993	राहु	02/12/1995	शुक्र	19/12/1997
	14/12/1989	गुरु	29/01/1992	राहु	07/11/1993	शुक्र	29/03/1996	सूर्य	16/02/1998
गुरु	08/05/1990	राहु	26/03/1992	शुक्र	14/05/1994	सूर्य	02/05/1996	चंद्र	14/07/1998
राहु	12/08/1990	शुक्र	02/07/1992	सूर्य	06/07/1994	चंद्र	26/07/1996	मंगल	01/10/1998
शुक्र	27/01/1991	सूर्य	31/07/1992	चंद्र	17/11/1994	मंगल	09/09/1996	बुध	18/03/1999
सूर्य	16/03/1991	चंद्र	09/10/1992	मंगल	27/01/1995	बुध	14/12/1996	शनि	25/06/1999
चंद्र	13/07/1991	मंगल	16/11/1992	बुध	28/06/1995	शनि	08/02/1997	गुरु	29/12/1999
मंगल	15/09/1991	बुध	04/02/1993	शनि	25/09/1995	गुरु	26/05/1997	राहु	25/04/2000

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु	
25/04/2000		24/02/2001		28/09/2001		01/01/2003		29/09/2003	
24/02/2001		28/09/2001		01/01/2003		29/09/2003		24/02/2005	
सूर्य	12/05/2000	मंगल	12/03/2001	बुध	10/12/2001	शनि	26/01/2003	गुरु	28/12/2003
चंद्र	24/06/2000	बुध	15/04/2001	शनि	21/01/2002	गुरु	15/03/2003	राहु	23/02/2004
मंगल	16/07/2000	शनि	05/05/2001	गुरु	12/04/2002	राहु	14/04/2003	शुक्र	02/06/2004
बुध	02/09/2000	गुरु	12/06/2001	राहु	02/06/2002	शुक्र	06/06/2003	सूर्य	01/07/2004
शनि	30/09/2000	राहु	06/07/2001	शुक्र	31/08/2002	सूर्य	21/06/2003	चंद्र	10/09/2004
गुरु	23/11/2000	शुक्र	17/08/2001	सूर्य	25/09/2002	चंद्र	28/07/2003	मंगल	18/10/2004
राहु	27/12/2000	सूर्य	29/08/2001	चंद्र	28/11/2002	मंगल	17/08/2003	बुध	07/01/2005
शुक्र	24/02/2001	चंद्र	28/09/2001	मंगल	01/01/2003	बुध	29/09/2003	शनि	24/02/2005

मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध	
24/02/2005		15/01/2006		06/08/2007		15/01/2008		24/02/2009	
15/01/2006		06/08/2007		15/01/2008		24/02/2009		29/10/2011	
राहु	01/04/2005	शुक्र	05/05/2006	सूर्य	15/08/2007	चंद्र	11/03/2008	बुध	28/07/2009
शुक्र	03/06/2005	सूर्य	06/06/2006	चंद्र	06/09/2007	मंगल	10/04/2008	शनि	26/10/2009
सूर्य	21/06/2005	चंद्र	23/08/2006	मंगल	18/09/2007	बुध	13/06/2008	गुरु	16/04/2010
चंद्र	05/08/2005	मंगल	05/10/2006	बुध	14/10/2007	शनि	21/07/2008	राहु	03/08/2010
मंगल	29/08/2005	बुध	02/01/2007	शनि	29/10/2007	गुरु	30/09/2008	शुक्र	09/02/2011
बुध	19/10/2005	शनि	24/02/2007	गुरु	26/11/2007	राहु	14/11/2008	सूर्य	04/04/2011
शनि	18/11/2005	गुरु	04/06/2007	राहु	14/12/2007	शुक्र	01/02/2009	चंद्र	18/08/2011
गुरु	15/01/2006	राहु	06/08/2007	शुक्र	15/01/2008	सूर्य	24/02/2009	मंगल	29/10/2011

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
29/10/2011		26/05/2013		23/05/2016		12/04/2018		02/08/2021	
26/05/2013		23/05/2016		12/04/2018		02/08/2021		13/07/2022	
शनि	21/12/2011	गुरु	04/12/2013	राहु	07/08/2016	शुक्र	03/12/2018	सूर्य	21/08/2021
गुरु	01/04/2012	राहु	05/04/2014	शुक्र	19/12/2016	सूर्य	08/02/2019	चंद्र	08/10/2021
राहु	03/06/2012	शुक्र	03/11/2014	सूर्य	27/01/2017	चंद्र	26/07/2019	मंगल	02/11/2021
शुक्र	23/09/2012	सूर्य	03/01/2015	चंद्र	02/05/2017	मंगल	23/10/2019	बुध	27/12/2021
सूर्य	25/10/2012	चंद्र	04/06/2015	मंगल	23/06/2017	बुध	30/04/2020	शनि	28/01/2022
चंद्र	13/01/2013	मंगल	23/08/2015	बुध	09/10/2017	शनि	20/08/2020	गुरु	29/03/2022
मंगल	25/02/2013	बुध	11/02/2016	शनि	12/12/2017	गुरु	21/03/2021	राहु	07/05/2022
बुध	26/05/2013	शनि	23/05/2016	गुरु	12/04/2018	राहु	02/08/2021	शुक्र	13/07/2022

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु	
13/07/2022		21/11/2024		24/02/2026		28/01/2027		01/11/2028	
21/11/2024		24/02/2026		28/01/2027		01/11/2028		12/12/2029	
चंद्र	10/11/2022	मंगल	25/12/2024	शनि	27/03/2026	गुरु	21/05/2027	राहु	16/12/2028
मंगल	12/01/2023	बुध	08/03/2025	गुरु	26/05/2026	राहु	01/08/2027	शुक्र	05/03/2029
बुध	28/05/2023	शनि	19/04/2025	राहु	02/07/2026	शुक्र	04/12/2027	सूर्य	27/03/2029
शनि	16/08/2023	गुरु	09/07/2025	शुक्र	06/09/2026	सूर्य	08/01/2028	चंद्र	23/05/2029
गुरु	15/01/2024	राहु	29/08/2025	सूर्य	25/09/2026	चंद्र	07/04/2028	मंगल	22/06/2029
राहु	20/04/2024	शुक्र	27/11/2025	चंद्र	11/11/2026	मंगल	24/05/2028	बुध	25/08/2029
शुक्र	04/10/2024	सूर्य	22/12/2025	मंगल	06/12/2026	बुध	02/09/2028	शनि	01/10/2029
सूर्य	21/11/2024	चंद्र	24/02/2026	बुध	28/01/2027	शनि	01/11/2028	गुरु	12/12/2029

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध	
12/12/2029		22/11/2031		12/06/2032		01/11/2033		30/07/2034	
22/11/2031		12/06/2032		01/11/2033		30/07/2034		25/02/2036	
शुक्र	29/04/2030	सूर्य	03/12/2031	चंद्र	21/08/2032	मंगल	21/11/2033	बुध	28/10/2034
सूर्य	07/06/2030	चंद्र	31/12/2031	मंगल	28/09/2032	बुध	03/01/2034	शनि	20/12/2034
चंद्र	14/09/2030	मंगल	15/01/2032	बुध	17/12/2032	शनि	28/01/2034	गुरु	01/04/2035
मंगल	06/11/2030	बुध	16/02/2032	शनि	02/02/2033	गुरु	16/03/2034	राहु	03/06/2035
बुध	25/02/2031	शनि	06/03/2032	गुरु	02/05/2033	राहु	15/04/2034	शुक्र	23/09/2035
शनि	02/05/2031	गुरु	11/04/2032	राहु	27/06/2033	शुक्र	07/06/2034	सूर्य	25/10/2035
गुरु	04/09/2031	राहु	03/05/2032	शुक्र	04/10/2033	सूर्य	22/06/2034	चंद्र	13/01/2036
राहु	22/11/2031	शुक्र	12/06/2032	सूर्य	01/11/2033	चंद्र	30/07/2034	मंगल	25/02/2036

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
25/02/2036		29/06/2039		09/08/2041		19/04/2045		10/05/2046	
29/06/2039		09/08/2041		19/04/2045		10/05/2046		28/12/2048	
गुरु	26/09/2036	राहु	23/09/2039	शुक्र	28/04/2042	सूर्य	10/05/2045	चंद्र	20/09/2046
राहु	09/02/2037	शुक्र	20/02/2040	सूर्य	12/07/2042	चंद्र	03/07/2045	मंगल	01/12/2046
शुक्र	04/10/2037	सूर्य	03/04/2040	चंद्र	15/01/2043	मंगल	31/07/2045	बुध	01/05/2047
सूर्य	11/12/2037	चंद्र	19/07/2040	मंगल	25/04/2043	बुध	30/09/2045	शनि	30/07/2047
चंद्र	30/05/2038	मंगल	14/09/2040	बुध	24/11/2043	शनि	05/11/2045	गुरु	15/01/2048
मंगल	28/08/2038	बुध	14/01/2041	शनि	28/03/2044	गुरु	12/01/2046	राहु	01/05/2048
बुध	08/03/2039	शनि	26/03/2041	गुरु	20/11/2044	राहु	24/02/2046	शुक्र	05/11/2048
शनि	29/06/2039	गुरु	09/08/2041	राहु	19/04/2045	शुक्र	10/05/2046	सूर्य	28/12/2048

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
28/12/2048		26/05/2050		23/05/2053		24/02/2055		25/06/2056	
26/05/2050		23/05/2053		24/02/2055		25/06/2056		26/10/2058	
मंगल	04/02/2049	बुध	14/11/2050	शनि	21/07/2053	राहु	19/04/2055	शुक्र	08/12/2056
बुध	26/04/2049	शनि	24/02/2051	गुरु	11/11/2053	शुक्र	23/07/2055	सूर्य	24/01/2057
शनि	13/06/2049	गुरु	04/09/2051	राहु	22/01/2054	सूर्य	19/08/2055	चंद्र	23/05/2057
गुरु	11/09/2049	राहु	03/01/2052	शुक्र	27/05/2054	चंद्र	26/10/2055	मंगल	25/07/2057
राहु	08/11/2049	शुक्र	02/08/2052	सूर्य	01/07/2054	मंगल	01/12/2055	बुध	06/12/2057
शुक्र	15/02/2050	सूर्य	02/10/2052	चंद्र	29/09/2054	बुध	16/02/2056	शनि	23/02/2058
सूर्य	16/03/2050	चंद्र	03/03/2053	मंगल	15/11/2054	शनि	01/04/2056	गुरु	23/07/2058
चंद्र	26/05/2050	मंगल	23/05/2053	बुध	24/02/2055	गुरु	25/06/2056	राहु	26/10/2058

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
26/10/2058		26/06/2059		24/02/2061		15/01/2062		05/12/2063	
26/06/2059		24/02/2061		15/01/2062		05/12/2063		14/01/2065	
सूर्य	08/11/2058	चंद्र	19/09/2059	मंगल	20/03/2061	बुध	03/05/2062	शनि	12/01/2064
चंद्र	12/12/2058	मंगल	03/11/2059	बुध	10/05/2061	शनि	06/07/2062	गुरु	23/03/2064
मंगल	30/12/2058	बुध	07/02/2060	शनि	09/06/2061	गुरु	04/11/2062	राहु	08/05/2064
बुध	06/02/2059	शनि	03/04/2060	गुरु	05/08/2061	राहु	20/01/2063	शुक्र	25/07/2064
शनि	01/03/2059	गुरु	19/07/2060	राहु	10/09/2061	शुक्र	03/06/2063	सूर्य	17/08/2064
गुरु	13/04/2059	राहु	25/09/2060	शुक्र	12/11/2061	सूर्य	12/07/2063	चंद्र	12/10/2064
राहु	10/05/2059	शुक्र	21/01/2061	सूर्य	30/11/2061	चंद्र	15/10/2063	मंगल	11/11/2064
शुक्र	26/06/2059	सूर्य	24/02/2061	चंद्र	15/01/2062	मंगल	05/12/2063	बुध	14/01/2065

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
14/01/2065		24/02/2067		27/03/2071		26/05/2072		26/04/2075	
24/02/2067		27/03/2071		26/05/2072		26/04/2075		14/11/2076	
गुरु	30/05/2065	शुक्र	11/12/2067	सूर्य	19/04/2071	चंद्र	21/10/2072	मंगल	07/06/2075
राहु	24/08/2065	सूर्य	03/03/2068	चंद्र	18/06/2071	मंगल	08/01/2073	बुध	05/09/2075
शुक्र	21/01/2066	चंद्र	26/09/2068	मंगल	19/07/2071	बुध	24/06/2073	शनि	27/10/2075
सूर्य	04/03/2066	मंगल	15/01/2069	बुध	24/09/2071	शनि	01/10/2073	गुरु	04/02/2076
चंद्र	19/06/2066	बुध	07/09/2069	शनि	03/11/2071	गुरु	07/04/2074	राहु	07/04/2076
मंगल	16/08/2066	शनि	23/01/2070	गुरु	17/01/2072	राहु	03/08/2074	शुक्र	27/07/2076
बुध	15/12/2066	गुरु	12/10/2070	राहु	04/03/2072	शुक्र	26/02/2075	सूर्य	27/08/2076
शनि	24/02/2067	राहु	27/03/2071	शुक्र	26/05/2072	सूर्य	26/04/2075	चंद्र	14/11/2076

शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य	
14/11/2076		06/03/2080		14/02/2082		25/10/2085		25/02/2088	
06/03/2080		14/02/2082		25/10/2085		25/02/2088		25/06/2088	
बुध	23/05/2077	शनि	11/05/2080	गुरु	09/10/2082	राहु	28/01/2086	सूर्य	02/03/2088
शनि	12/09/2077	गुरु	12/09/2080	राहु	08/03/2083	शुक्र	13/07/2086	चंद्र	19/03/2088
गुरु	13/04/2078	राहु	30/11/2080	शुक्र	26/11/2083	सूर्य	29/08/2086	मंगल	28/03/2088
राहु	25/08/2078	शुक्र	17/04/2081	सूर्य	09/02/2084	चंद्र	25/12/2086	बुध	16/04/2088
शुक्र	17/04/2079	सूर्य	27/05/2081	चंद्र	14/08/2084	मंगल	27/02/2087	शनि	28/04/2088
सूर्य	23/06/2079	चंद्र	03/09/2081	मंगल	22/11/2084	बुध	11/07/2087	गुरु	19/05/2088
चंद्र	07/12/2079	मंगल	25/10/2081	बुध	22/06/2085	शनि	28/09/2087	राहु	02/06/2088
मंगल	06/03/2080	बुध	14/02/2082	शनि	25/10/2085	गुरु	25/02/2088	शुक्र	25/06/2088

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु	
25/06/2088		26/04/2089		05/10/2089		15/09/2090		06/04/2091	
26/04/2089		05/10/2089		15/09/2090		06/04/2091		25/04/2092	
चंद्र	07/08/2088	मंगल	08/05/2089	बुध	28/11/2089	शनि	04/10/2090	गुरु	13/06/2091
मंगल	29/08/2088	बुध	02/06/2089	शनि	30/12/2089	गुरु	09/11/2090	राहु	26/07/2091
बुध	16/10/2088	शनि	17/06/2089	गुरु	01/03/2090	राहु	01/12/2090	शुक्र	09/10/2091
शनि	13/11/2088	गुरु	16/07/2089	राहु	08/04/2090	शुक्र	10/01/2091	सूर्य	30/10/2091
गुरु	06/01/2089	राहु	03/08/2089	शुक्र	14/06/2090	सूर्य	21/01/2091	चंद्र	23/12/2091
राहु	09/02/2089	शुक्र	03/09/2089	सूर्य	04/07/2090	चंद्र	18/02/2091	मंगल	20/01/2092
शुक्र	09/04/2089	सूर्य	13/09/2089	चंद्र	20/08/2090	मंगल	05/03/2091	बुध	21/03/2092
सूर्य	26/04/2089	चंद्र	05/10/2089	मंगल	15/09/2090	बुध	06/04/2091	शनि	25/04/2092

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : पिंगला 1 वर्ष 11 मास 20 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
14/12/1989		04/12/1991		04/12/1994		04/12/1998		04/12/2003	
04/12/1991		04/12/1994		04/12/1998		04/12/2003		04/12/2009	
पिंग	13/01/1990	धांय	05/03/1992	भ्राम	15/05/1995	भद्रि	15/08/1999	उल्क	04/12/2004
धांय	15/03/1990	भ्राम	04/07/1992	भद्रि	04/12/1995	उल्क	14/06/2000	सिद्ध	03/02/2006
भ्राम	04/06/1990	भद्रि	04/12/1992	उल्क	04/08/1996	सिद्ध	04/06/2001	संक	05/06/2007
भद्रि	14/09/1990	उल्क	04/06/1993	सिद्ध	15/05/1997	संक	15/07/2002	मंग	05/08/2007
उल्क	14/01/1991	सिद्ध	03/01/1994	संक	05/04/1998	मंग	04/09/2002	पिंग	04/12/2007
सिद्ध	05/06/1991	संक	04/09/1994	मंग	15/05/1998	पिंग	14/12/2002	धांय	04/06/2008
संक	14/11/1991	मंग	04/10/1994	पिंग	04/08/1998	धांय	15/05/2003	भ्राम	02/02/2009
मंग	04/12/1991	पिंग	04/12/1994	धांय	04/12/1998	भ्राम	04/12/2003	भद्रि	04/12/2009

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
04/12/2009		04/12/2016		04/12/2024		04/12/2025		04/12/2027	
04/12/2016		04/12/2024		04/12/2025		04/12/2027		04/12/2030	
सिद्ध	15/04/2011	संक	14/09/2018	मंग	14/12/2024	पिंग	13/01/2026	धांय	05/03/2028
संक	03/11/2012	मंग	04/12/2018	पिंग	03/01/2025	धांय	15/03/2026	भ्राम	04/07/2028
मंग	13/01/2013	पिंग	15/05/2019	धांय	02/02/2025	भ्राम	04/06/2026	भद्रि	04/12/2028
पिंग	04/06/2013	धांय	14/01/2020	भ्राम	15/03/2025	भद्रि	14/09/2026	उल्क	04/06/2029
धांय	03/01/2014	भ्राम	04/12/2020	भद्रि	05/05/2025	उल्क	14/01/2027	सिद्ध	03/01/2030
भ्राम	14/10/2014	भद्रि	13/01/2022	उल्क	05/07/2025	सिद्ध	05/06/2027	संक	04/09/2030
भद्रि	04/10/2015	उल्क	15/05/2023	सिद्ध	14/09/2025	संक	14/11/2027	मंग	04/10/2030
उल्क	04/12/2016	सिद्ध	04/12/2024	संक	04/12/2025	मंग	04/12/2027	पिंग	04/12/2030

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

योगिनी दशा

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
04/12/2030		04/12/2034		04/12/2039		04/12/2045		04/12/2052	
04/12/2034		04/12/2039		04/12/2045		04/12/2052		04/12/2060	
भ्राम	15/05/2031	भद्रि	15/08/2035	उल्क	04/12/2040	सिद्ध	15/04/2047	संक	14/09/2054
भद्रि	04/12/2031	उल्क	14/06/2036	सिद्ध	03/02/2042	संक	03/11/2048	मंग	04/12/2054
उल्क	04/08/2032	सिद्ध	04/06/2037	संक	05/06/2043	मंग	13/01/2049	पिंग	15/05/2055
सिद्ध	15/05/2033	संक	15/07/2038	मंग	05/08/2043	पिंग	04/06/2049	धांय	14/01/2056
संक	05/04/2034	मंग	04/09/2038	पिंग	04/12/2043	धांय	03/01/2050	भ्राम	04/12/2056
मंग	15/05/2034	पिंग	14/12/2038	धांय	04/06/2044	भ्राम	14/10/2050	भद्रि	13/01/2058
पिंग	04/08/2034	धांय	15/05/2039	भ्राम	02/02/2045	भद्रि	04/10/2051	उल्क	15/05/2059
धांय	04/12/2034	भ्राम	04/12/2039	भद्रि	04/12/2045	उल्क	04/12/2052	सिद्ध	04/12/2060

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
04/12/2060		04/12/2061		04/12/2063		04/12/2066		04/12/2070	
04/12/2061		04/12/2063		04/12/2066		04/12/2070		04/12/2075	
मंग	14/12/2060	पिंग	13/01/2062	धांय	05/03/2064	भ्राम	15/05/2067	भद्रि	15/08/2071
पिंग	03/01/2061	धांय	15/03/2062	भ्राम	04/07/2064	भद्रि	04/12/2067	उल्क	14/06/2072
धांय	02/02/2061	भ्राम	04/06/2062	भद्रि	04/12/2064	उल्क	04/08/2068	सिद्ध	04/06/2073
भ्राम	15/03/2061	भद्रि	14/09/2062	उल्क	04/06/2065	सिद्ध	15/05/2069	संक	15/07/2074
भद्रि	05/05/2061	उल्क	14/01/2063	सिद्ध	03/01/2066	संक	05/04/2070	मंग	04/09/2074
उल्क	05/07/2061	सिद्ध	05/06/2063	संक	04/09/2066	मंग	15/05/2070	पिंग	14/12/2074
सिद्ध	14/09/2061	संक	14/11/2063	मंग	04/10/2066	पिंग	04/08/2070	धांय	15/05/2075
संक	04/12/2061	मंग	04/12/2063	पिंग	04/12/2066	धांय	04/12/2070	भ्राम	04/12/2075

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
04/12/2075		04/12/2081		04/12/2088		04/12/2096		04/12/2097	
04/12/2081		04/12/2088		04/12/2096		04/12/2097		00/00/0000	
उल्क	04/12/2076	सिद्ध	15/04/2083	संक	14/09/2090	मंग	14/12/2096	पिंग	14/12/2097
सिद्ध	03/02/2078	संक	03/11/2084	मंग	04/12/2090	पिंग	03/01/2097		00/00/0000
संक	05/06/2079	मंग	13/01/2085	पिंग	15/05/2091	धांय	02/02/2097		00/00/0000
मंग	05/08/2079	पिंग	04/06/2085	धांय	14/01/2092	भ्राम	15/03/2097		00/00/0000
पिंग	04/12/2079	धांय	03/01/2086	भ्राम	04/12/2092	भद्रि	05/05/2097		00/00/0000
धांय	04/06/2080	भ्राम	14/10/2086	भद्रि	13/01/2094	उल्क	05/07/2097		00/00/0000
भ्राम	02/02/2081	भद्रि	04/10/2087	उल्क	15/05/2095	सिद्ध	14/09/2097		00/00/0000
भद्रि	04/12/2081	उल्क	04/12/2088	सिद्ध	04/12/2096	संक	04/12/2097		00/00/0000

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

मंग - संक		पिंग - पिंग		पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि	
14/09/2025		04/12/2025		13/01/2026		15/03/2026		04/06/2026	
04/12/2025		13/01/2026		15/03/2026		04/06/2026		14/09/2026	
संक	02/10/2025	पिंग	06/12/2025	धांय	18/01/2026	भ्राम	24/03/2026	भद्रि	18/06/2026
मंग	04/10/2025	धांय	09/12/2025	भ्राम	25/01/2026	भद्रि	05/04/2026	उल्क	05/07/2026
पिंग	08/10/2025	भ्राम	14/12/2025	भद्रि	03/02/2026	उल्क	18/04/2026	सिद्ध	25/07/2026
धांय	15/10/2025	भद्रि	20/12/2025	उल्क	13/02/2026	सिद्ध	04/05/2026	संक	17/08/2026
भ्राम	24/10/2025	उल्क	26/12/2025	सिद्ध	25/02/2026	संक	22/05/2026	मंग	19/08/2026
भद्रि	04/11/2025	सिद्ध	03/01/2026	संक	10/03/2026	मंग	24/05/2026	पिंग	25/08/2026
उल्क	18/11/2025	संक	12/01/2026	मंग	12/03/2026	पिंग	29/05/2026	धांय	03/09/2026
सिद्ध	04/12/2025	मंग	13/01/2026	पिंग	15/03/2026	धांय	04/06/2026	भ्राम	14/09/2026

पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय	
14/09/2026		14/01/2027		05/06/2027		14/11/2027		04/12/2027	
14/01/2027		05/06/2027		14/11/2027		04/12/2027		05/03/2028	
उल्क	04/10/2026	सिद्ध	10/02/2027	संक	11/07/2027	मंग	15/11/2027	धांय	12/12/2027
सिद्ध	28/10/2026	संक	14/03/2027	मंग	15/07/2027	पिंग	16/11/2027	भ्राम	22/12/2027
संक	24/11/2026	मंग	18/03/2027	पिंग	24/07/2027	धांय	17/11/2027	भद्रि	04/01/2028
मंग	27/11/2026	पिंग	26/03/2027	धांय	07/08/2027	भ्राम	20/11/2027	उल्क	19/01/2028
पिंग	04/12/2026	धांय	06/04/2027	भ्राम	25/08/2027	भद्रि	22/11/2027	सिद्ध	06/02/2028
धांय	14/12/2026	भ्राम	22/04/2027	भद्रि	16/09/2027	उल्क	26/11/2027	संक	26/02/2028
भ्राम	28/12/2026	भद्रि	12/05/2027	उल्क	13/10/2027	सिद्ध	30/11/2027	मंग	29/02/2028
भद्रि	14/01/2027	उल्क	05/06/2027	सिद्ध	14/11/2027	संक	04/12/2027	पिंग	05/03/2028

धांय - भ्राम		धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक	
05/03/2028		04/07/2028		04/12/2028		04/06/2029		03/01/2030	
04/07/2028		04/12/2028		04/06/2029		03/01/2030		04/09/2030	
भ्राम	18/03/2028	भद्रि	25/07/2028	उल्क	03/01/2029	सिद्ध	16/07/2029	संक	26/02/2030
भद्रि	04/04/2028	उल्क	20/08/2028	सिद्ध	07/02/2029	संक	01/09/2029	मंग	05/03/2030
उल्क	24/04/2028	सिद्ध	18/09/2028	संक	20/03/2029	मंग	07/09/2029	पिंग	19/03/2030
सिद्ध	18/05/2028	संक	22/10/2028	मंग	25/03/2029	पिंग	19/09/2029	धांय	08/04/2030
संक	14/06/2028	मंग	26/10/2028	पिंग	04/04/2029	धांय	06/10/2029	भ्राम	05/05/2030
मंग	17/06/2028	पिंग	04/11/2028	धांय	19/04/2029	भ्राम	30/10/2029	भद्रि	08/06/2030
पिंग	24/06/2028	धांय	17/11/2028	भ्राम	10/05/2029	भद्रि	29/11/2029	उल्क	18/07/2030
धांय	04/07/2028	भ्राम	04/12/2028	भद्रि	04/06/2029	उल्क	03/01/2030	सिद्ध	04/09/2030

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

धांय - मंग		धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क	
04/09/2030		04/10/2030		04/12/2030		15/05/2031		04/12/2031	
04/10/2030		04/12/2030		15/05/2031		04/12/2031		04/08/2032	
मंग	05/09/2030	पिंग	08/10/2030	भ्राम	22/12/2030	भद्रि	13/06/2031	उल्क	14/01/2032
पिंग	06/09/2030	धांय	13/10/2030	भद्रि	14/01/2031	उल्क	16/07/2031	सिद्ध	01/03/2032
धांय	09/09/2030	भ्राम	19/10/2030	उल्क	10/02/2031	सिद्ध	25/08/2031	संक	24/04/2032
भ्राम	12/09/2030	भद्रि	28/10/2030	सिद्ध	13/03/2031	संक	09/10/2031	मंग	01/05/2032
भद्रि	16/09/2030	उल्क	07/11/2030	संक	18/04/2031	मंग	15/10/2031	पिंग	15/05/2032
उल्क	21/09/2030	सिद्ध	19/11/2030	मंग	23/04/2031	पिंग	26/10/2031	धांय	04/06/2032
सिद्ध	27/09/2030	संक	02/12/2030	पिंग	02/05/2031	धांय	12/11/2031	भ्राम	01/07/2032
संक	04/10/2030	मंग	04/12/2030	धांय	15/05/2031	भ्राम	04/12/2031	भद्रि	04/08/2032

भ्राम - सिद्ध		भ्राम - संक		भ्राम - मंग		भ्राम - पिंग		भ्राम - धांय	
04/08/2032		15/05/2033		05/04/2034		15/05/2034		04/08/2034	
15/05/2033		05/04/2034		15/05/2034		04/08/2034		04/12/2034	
सिद्ध	28/09/2032	संक	26/07/2033	मंग	06/04/2034	पिंग	20/05/2034	धांय	14/08/2034
संक	30/11/2032	मंग	04/08/2033	पिंग	08/04/2034	धांय	26/05/2034	भ्राम	28/08/2034
मंग	08/12/2032	पिंग	22/08/2033	धांय	11/04/2034	भ्राम	04/06/2034	भद्रि	14/09/2034
पिंग	24/12/2032	धांय	18/09/2033	भ्राम	16/04/2034	भद्रि	16/06/2034	उल्क	04/10/2034
धांय	16/01/2033	भ्राम	24/10/2033	भद्रि	21/04/2034	उल्क	29/06/2034	सिद्ध	28/10/2034
भ्राम	17/02/2033	भद्रि	08/12/2033	उल्क	28/04/2034	सिद्ध	15/07/2034	संक	24/11/2034
भद्रि	29/03/2033	उल्क	31/01/2034	सिद्ध	06/05/2034	संक	02/08/2034	मंग	27/11/2034
उल्क	15/05/2033	सिद्ध	05/04/2034	संक	15/05/2034	मंग	04/08/2034	पिंग	04/12/2034

भद्रि - भद्रि		भद्रि - उल्क		भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग	
04/12/2034		15/08/2035		14/06/2036		04/06/2037		15/07/2038	
15/08/2035		14/06/2036		04/06/2037		15/07/2038		04/09/2038	
भद्रि	08/01/2035	उल्क	04/10/2035	सिद्ध	22/08/2036	संक	02/09/2037	मंग	16/07/2038
उल्क	20/02/2035	सिद्ध	03/12/2035	संक	09/11/2036	मंग	14/09/2037	पिंग	19/07/2038
सिद्ध	10/04/2035	संक	08/02/2036	मंग	19/11/2036	पिंग	06/10/2037	धांय	23/07/2038
संक	05/06/2035	मंग	17/02/2036	पिंग	09/12/2036	धांय	09/11/2037	भ्राम	29/07/2038
मंग	12/06/2035	पिंग	05/03/2036	धांय	07/01/2037	भ्राम	24/12/2037	भद्रि	05/08/2038
पिंग	26/06/2035	धांय	30/03/2036	भ्राम	16/02/2037	भद्रि	18/02/2038	उल्क	14/08/2038
धांय	17/07/2035	भ्राम	03/05/2036	भद्रि	06/04/2037	उल्क	27/04/2038	सिद्ध	23/08/2038
भ्राम	15/08/2035	भद्रि	14/06/2036	उल्क	04/06/2037	सिद्ध	15/07/2038	संक	04/09/2038

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मेष 1 वर्ष 4 मास 18 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : पुनर्वसु - 1 सव्य
देह : मेष जीव : धनु

मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष	
14/12/1989		04/05/1991		04/05/2007		03/05/2016		03/05/2037	
04/05/1991		04/05/2007		03/05/2016		03/05/2037		03/05/2042	
	00/00/0000	वृष	24/11/1993	मिथु	24/02/2008	कर्क	30/09/2020	सिंह	03/08/2037
	00/00/0000	मिथु	04/05/1995	कर्क	14/01/2010	सिंह	18/10/2021	कन्या	14/01/2038
	00/00/0000	कर्क	12/09/1998	सिंह	27/06/2010	कन्या	09/09/2023	तुला	02/11/2038
	00/00/0000	सिंह	01/07/1999	कन्या	19/04/2011	तुला	18/01/2027	वृश्चि	10/03/2039
	00/00/0000	कन्या	08/12/2000	तुला	26/09/2012	वृश्चि	08/07/2028	धनु	09/09/2039
	14/12/1989	तुला	01/07/2003	वृश्चि	14/05/2013	धनु	14/08/2030	मेष	14/01/2040
तुला	23/02/1990	वृश्चि	13/08/2004	धनु	08/04/2014	मेष	02/02/2032	वृष	02/11/2040
वृश्चि	21/08/1990	धनु	21/03/2006	मेष	24/11/2014	वृष	13/06/2035	मिथु	15/04/2041
धनु	04/05/1991	मेष	04/05/2007	वृष	03/05/2016	मिथु	03/05/2037	कर्क	03/05/2042

कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष	
03/05/2042		04/05/2051		04/05/2067		03/05/2074		03/05/2084	
04/05/2051		04/05/2067		03/05/2074		03/05/2084		00/00/0000	
कन्या	23/02/2043	तुला	24/11/2053	वृश्चि	30/10/2067	धनु	04/05/2075	मेष	29/10/2084
तुला	02/08/2044	वृश्चि	07/01/2055	धनु	11/07/2068	मेष	14/01/2076	वृष	12/12/2085
वृश्चि	20/03/2045	धनु	13/08/2056	मेष	06/01/2069	वृष	21/08/2077	मिथु	30/07/2086
धनु	12/02/2046	मेष	26/09/2057	वृष	19/02/2070	मिथु	16/07/2078	कर्क	18/01/2088
मेष	30/09/2046	वृष	18/04/2060	मिथु	08/10/2070	कर्क	21/08/2080	सिंह	25/05/2088
वृष	09/03/2048	मिथु	26/09/2061	कर्क	27/03/2072	सिंह	19/02/2081	कन्या	10/01/2089
मिथु	30/12/2048	कर्क	05/02/2065	सिंह	02/08/2072	कन्या	14/01/2082	तुला	14/12/2089
कर्क	20/11/2050	सिंह	24/11/2065	कन्या	20/03/2073	तुला	21/08/2083		00/00/0000
सिंह	04/05/2051	कन्या	04/05/2067	तुला	03/05/2074	वृश्चि	03/05/2084		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - तुला		कर्क - वृश्चि		कर्क - धनु		कर्क - मेष		कर्क - वृष	
09/09/2023		18/01/2027		08/07/2028		14/08/2030		02/02/2032	
18/01/2027		08/07/2028		14/08/2030		02/02/2032		13/06/2035	
तुला	23/03/2024	वृश्चि	24/02/2027	धनु	22/09/2028	मेष	20/09/2030	वृष	16/08/2032
वृश्चि	17/06/2024	धनु	19/04/2027	मेष	15/11/2028	वृष	15/12/2030	मिथु	04/12/2032
धनु	18/10/2024	मेष	27/05/2027	वृष	18/03/2029	मिथु	02/02/2031	कर्क	19/08/2033
मेष	11/01/2025	वृष	21/08/2027	मिथु	26/05/2029	कर्क	25/05/2031	सिंह	20/10/2033
वृष	27/07/2025	मिथु	08/10/2027	कर्क	03/11/2029	सिंह	21/06/2031	कन्या	07/02/2034
मिथु	14/11/2025	कर्क	29/01/2028	सिंह	11/12/2029	कन्या	09/08/2031	तुला	22/08/2034
कर्क	30/07/2026	सिंह	25/02/2028	कन्या	18/02/2030	तुला	02/11/2031	वृश्चि	16/11/2034
सिंह	29/09/2026	कन्या	13/04/2028	तुला	21/06/2030	वृश्चि	10/12/2031	धनु	19/03/2035
कन्या	18/01/2027	तुला	08/07/2028	वृश्चि	14/08/2030	धनु	02/02/2032	मेष	13/06/2035

कर्क - मिथु		सिंह - सिंह		सिंह - कन्या		सिंह - तुला		सिंह - वृश्चि	
13/06/2035		03/05/2037		03/08/2037		14/01/2038		02/11/2038	
03/05/2037		03/08/2037		14/01/2038		02/11/2038		10/03/2039	
मिथु	14/08/2035	सिंह	08/05/2037	कन्या	17/08/2037	तुला	02/03/2038	वृश्चि	11/11/2038
कर्क	06/01/2036	कन्या	16/05/2037	तुला	13/09/2037	वृश्चि	22/03/2038	धनु	24/11/2038
सिंह	10/02/2036	तुला	31/05/2037	वृश्चि	24/09/2037	धनु	20/04/2038	मेष	03/12/2038
कन्या	12/04/2036	वृश्चि	06/06/2037	धनु	11/10/2037	मेष	11/05/2038	वृष	23/12/2038
तुला	31/07/2036	धनु	15/06/2037	मेष	22/10/2037	वृष	27/06/2038	मिथु	04/01/2039
वृश्चि	17/09/2036	मेष	22/06/2037	वृष	17/11/2037	मिथु	23/07/2038	कर्क	31/01/2039
धनु	25/11/2036	वृष	06/07/2037	मिथु	02/12/2037	कर्क	22/09/2038	सिंह	06/02/2039
मेष	13/01/2037	मिथु	14/07/2037	कर्क	06/01/2038	सिंह	07/10/2038	कन्या	18/02/2039
वृष	03/05/2037	कर्क	03/08/2037	सिंह	14/01/2038	कन्या	02/11/2038	तुला	10/03/2039

सिंह - धनु		सिंह - मेष		सिंह - वृष		सिंह - मिथु		सिंह - कर्क	
10/03/2039		09/09/2039		14/01/2040		02/11/2040		15/04/2041	
09/09/2039		14/01/2040		02/11/2040		15/04/2041		03/05/2042	
धनु	28/03/2039	मेष	18/09/2039	वृष	01/03/2040	मिथु	16/11/2040	कर्क	05/07/2041
मेष	10/04/2039	वृष	08/10/2039	मिथु	27/03/2040	कर्क	21/12/2040	सिंह	24/07/2041
वृष	09/05/2039	मिथु	19/10/2039	कर्क	28/05/2040	सिंह	29/12/2040	कन्या	27/08/2041
मिथु	26/05/2039	कर्क	15/11/2039	सिंह	11/06/2040	कन्या	13/01/2041	तुला	28/10/2041
कर्क	03/07/2039	सिंह	22/11/2039	कन्या	08/07/2040	तुला	08/02/2041	वृश्चि	23/11/2041
सिंह	12/07/2039	कन्या	03/12/2039	तुला	23/08/2040	वृश्चि	20/02/2041	धनु	01/01/2042
कन्या	29/07/2039	तुला	24/12/2039	वृश्चि	13/09/2040	धनु	08/03/2041	मेष	28/01/2042
तुला	27/08/2039	वृश्चि	02/01/2040	धनु	12/10/2040	मेष	20/03/2041	वृष	30/03/2042
वृश्चि	09/09/2039	धनु	14/01/2040	मेष	02/11/2040	वृष	15/04/2041	मिथु	03/05/2042

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - कन्या		कन्या - तुला		कन्या - वृश्चि		कन्या - धनु		कन्या - मेष	
03/05/2042		23/02/2043		02/08/2044		20/03/2045		12/02/2046	
23/02/2043		02/08/2044		20/03/2045		12/02/2046		30/09/2046	
कन्या	30/05/2042	तुला	19/05/2043	वृश्चि	18/08/2044	धनु	22/04/2045	मेष	28/02/2046
तुला	16/07/2042	वृश्चि	24/06/2043	धनु	10/09/2044	मेष	15/05/2045	वृष	06/04/2046
वृश्चि	06/08/2042	धनु	16/08/2043	मेष	27/09/2044	वृष	07/07/2045	मिथु	27/04/2046
धनु	05/09/2042	मेष	22/09/2043	वृष	02/11/2044	मिथु	05/08/2045	कर्क	14/06/2046
मेष	25/09/2042	वृष	15/12/2043	मिथु	23/11/2044	कर्क	14/10/2045	सिंह	26/06/2046
वृष	12/11/2042	मिथु	31/01/2044	कर्क	10/01/2045	सिंह	30/10/2045	कन्या	16/07/2046
मिथु	08/12/2042	कर्क	21/05/2044	सिंह	22/01/2045	कन्या	29/11/2045	तुला	22/08/2046
कर्क	09/02/2043	सिंह	16/06/2044	कन्या	12/02/2045	तुला	20/01/2046	वृश्चि	07/09/2046
सिंह	23/02/2043	कन्या	02/08/2044	तुला	20/03/2045	वृश्चि	12/02/2046	धनु	30/09/2046

कन्या - वृष		कन्या - मिथु		कन्या - कर्क		कन्या - सिंह		तुला - तुला	
30/09/2046		09/03/2048		30/12/2048		20/11/2050		04/05/2051	
09/03/2048		30/12/2048		20/11/2050		04/05/2051		24/11/2053	
वृष	23/12/2046	मिथु	05/04/2048	कर्क	24/05/2049	सिंह	29/11/2050	तुला	30/09/2051
मिथु	09/02/2047	कर्क	06/06/2048	सिंह	28/06/2049	कन्या	13/12/2050	वृश्चि	05/12/2051
कर्क	30/05/2047	सिंह	21/06/2048	कन्या	29/08/2049	तुला	09/01/2051	धनु	07/03/2052
सिंह	25/06/2047	कन्या	17/07/2048	तुला	17/12/2049	वृश्चि	20/01/2051	मेष	12/05/2052
कन्या	12/08/2047	तुला	03/09/2048	वृश्चि	03/02/2050	धनु	06/02/2051	वृष	08/10/2052
तुला	04/11/2047	वृश्चि	23/09/2048	धनु	13/04/2050	मेष	17/02/2051	मिथु	01/01/2053
वृश्चि	11/12/2047	धनु	23/10/2048	मेष	01/06/2050	वृष	15/03/2051	कर्क	16/07/2053
धनु	01/02/2048	मेष	13/11/2048	वृष	19/09/2050	मिथु	30/03/2051	सिंह	01/09/2053
मेष	09/03/2048	वृष	30/12/2048	मिथु	20/11/2050	कर्क	04/05/2051	कन्या	24/11/2053

तुला - वृश्चि		तुला - धनु		तुला - मेष		तुला - वृष		तुला - मिथु	
24/11/2053		07/01/2055		13/08/2056		26/09/2057		18/04/2060	
07/01/2055		13/08/2056		26/09/2057		18/04/2060		26/09/2061	
वृश्चि	22/12/2053	धनु	06/03/2055	मेष	11/09/2056	वृष	23/02/2058	मिथु	05/06/2060
धनु	01/02/2054	मेष	16/04/2055	वृष	15/11/2056	मिथु	18/05/2058	कर्क	23/09/2060
मेष	02/03/2054	वृष	19/07/2055	मिथु	22/12/2056	कर्क	30/11/2058	सिंह	19/10/2060
वृष	06/05/2054	मिथु	09/09/2055	कर्क	18/03/2057	सिंह	16/01/2059	कन्या	06/12/2060
मिथु	12/06/2054	कर्क	10/01/2056	सिंह	08/04/2057	कन्या	10/04/2059	तुला	28/02/2061
कर्क	06/09/2054	सिंह	08/02/2056	कन्या	14/05/2057	तुला	07/09/2059	वृश्चि	06/04/2061
सिंह	27/09/2054	कन्या	01/04/2056	तुला	19/07/2057	वृश्चि	11/11/2059	धनु	28/05/2061
कन्या	02/11/2054	तुला	03/07/2056	वृश्चि	16/08/2057	धनु	13/02/2060	मेष	04/07/2061
तुला	07/01/2055	वृश्चि	13/08/2056	धनु	26/09/2057	मेष	18/04/2060	वृष	26/09/2061

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

चर दशा

भोग्य दशा काल : कुम्भ 1 वर्ष 0 मास 0 दिन

कुम्भ 1 वर्ष	
14/12/1989	
14/12/1990	
मीन	13/01/1990
मेष	13/02/1990
वृष	15/03/1990
मिथु	15/04/1990
कर्क	15/05/1990
सिंह	15/06/1990
कन्या	15/07/1990
तुला	15/08/1990
वृश्चि	14/09/1990
धनु	14/10/1990
मक	14/11/1990
कुंभ	14/12/1990

मीन 9 वर्ष	
14/12/1990	
15/12/1999	
मेष	14/09/1991
वृष	14/06/1992
मिथु	15/03/1993
कर्क	14/12/1993
सिंह	14/09/1994
कन्या	15/06/1995
तुला	15/03/1996
वृश्चि	14/12/1996
धनु	14/09/1997
मक	15/06/1998
कुंभ	16/03/1999
मीन	15/12/1999

मेष 7 वर्ष	
15/12/1999	
14/12/2006	
वृष	15/07/2000
मिथु	13/02/2001
कर्क	14/09/2001
सिंह	15/04/2002
कन्या	14/11/2002
तुला	15/06/2003
वृश्चि	14/01/2004
धनु	14/08/2004
मक	15/03/2005
कुंभ	14/10/2005
मीन	15/05/2006
मेष	14/12/2006

वृष 8 वर्ष	
14/12/2006	
14/12/2014	
मेष	15/08/2007
मीन	14/04/2008
कुंभ	14/12/2008
मक	14/08/2009
धनु	15/04/2010
वृश्चि	14/12/2010
तुला	15/08/2011
कन्या	14/04/2012
सिंह	14/12/2012
कर्क	14/08/2013
मिथु	15/04/2014
वृष	14/12/2014

मिथुन 6 वर्ष	
14/12/2014	
14/12/2020	
वृष	15/06/2015
मेष	15/12/2015
मीन	14/06/2016
कुंभ	14/12/2016
मक	14/06/2017
धनु	14/12/2017
वृश्चि	15/06/2018
तुला	14/12/2018
कन्या	15/06/2019
सिंह	15/12/2019
कर्क	14/06/2020
मिथु	14/12/2020

कर्क 1 वर्ष	
14/12/2020	
14/12/2021	
मिथु	13/01/2021
वृष	13/02/2021
मेष	15/03/2021
मीन	15/04/2021
कुंभ	15/05/2021
मक	14/06/2021
धनु	15/07/2021
वृश्चि	14/08/2021
तुला	14/09/2021
कन्या	14/10/2021
सिंह	14/11/2021
कर्क	14/12/2021

सिंह 9 वर्ष	
14/12/2021	
14/12/2030	
कन्या	14/09/2022
तुला	15/06/2023
वृश्चि	15/03/2024
धनु	14/12/2024
मक	14/09/2025
कुंभ	15/06/2026
मीन	16/03/2027
मेष	15/12/2027
वृष	13/09/2028
मिथु	14/06/2029
कर्क	15/03/2030
सिंह	14/12/2030

कन्या 9 वर्ष	
14/12/2030	
15/12/2039	
तुला	14/09/2031
वृश्चि	14/06/2032
धनु	15/03/2033
मक	14/12/2033
कुंभ	14/09/2034
मीन	15/06/2035
मेष	15/03/2036
वृष	14/12/2036
मिथु	14/09/2037
कर्क	15/06/2038
सिंह	16/03/2039
कन्या	15/12/2039

तुला 3 वर्ष	
15/12/2039	
14/12/2042	
वृश्चि	15/03/2040
धनु	14/06/2040
मक	13/09/2040
कुंभ	14/12/2040
मीन	15/03/2041
मेष	14/06/2041
वृष	14/09/2041
मिथु	14/12/2041
कर्क	15/03/2042
सिंह	15/06/2042
कन्या	14/09/2042
तुला	14/12/2042

वृश्चिक 8 वर्ष	
14/12/2042	
14/12/2050	
तुला	15/08/2043
कन्या	14/04/2044
सिंह	14/12/2044
कर्क	14/08/2045
मिथु	15/04/2046
वृष	14/12/2046
मेष	15/08/2047
मीन	14/04/2048
कुंभ	14/12/2048
मक	14/08/2049
धनु	15/04/2050
वृश्चि	14/12/2050

धनु 6 वर्ष	
14/12/2050	
14/12/2056	
वृश्चि	15/06/2051
तुला	15/12/2051
कन्या	14/06/2052
सिंह	14/12/2052
कर्क	14/06/2053
मिथु	14/12/2053
वृष	15/06/2054
मेष	14/12/2054
मीन	15/06/2055
कुंभ	15/12/2055
मक	14/06/2056
धनु	14/12/2056

मकर 1 वर्ष	
14/12/2056	
14/12/2057	
धनु	13/01/2057
वृश्चि	13/02/2057
तुला	15/03/2057
कन्या	15/04/2057
सिंह	15/05/2057
कर्क	14/06/2057
मिथु	15/07/2057
वृष	14/08/2057
मेष	14/09/2057
मीन	14/10/2057
कुंभ	14/11/2057
मक	14/12/2057

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

चर दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - कुंभ		सिंह - मीन		सिंह - मेष		सिंह - वृष		सिंह - मिथु	
14/09/2025		15/06/2026		16/03/2027		15/12/2027		13/09/2028	
15/06/2026		16/03/2027		15/12/2027		13/09/2028		14/06/2029	
मीन	07/10/2025	मेष	07/07/2026	वृष	07/04/2027	मेष	06/01/2028	वृष	06/10/2028
मेष	29/10/2025	वृष	30/07/2026	मिथु	30/04/2027	मीन	29/01/2028	मेष	29/10/2028
वृष	21/11/2025	मिथु	22/08/2026	कर्क	23/05/2027	कुंभ	21/02/2028	मीन	21/11/2028
मिथु	14/12/2025	कर्क	14/09/2026	सिंह	15/06/2027	मक	15/03/2028	कुंभ	14/12/2028
कर्क	06/01/2026	सिंह	07/10/2026	कन्या	08/07/2027	धनु	07/04/2028	मक	06/01/2029
सिंह	29/01/2026	कन्या	30/10/2026	तुला	31/07/2027	वृश्चि	29/04/2028	धनु	28/01/2029
कन्या	21/02/2026	तुला	21/11/2026	वृश्चि	22/08/2027	तुला	22/05/2028	वृश्चि	20/02/2029
तुला	15/03/2026	वृश्चि	14/12/2026	धनु	14/09/2027	कन्या	14/06/2028	तुला	15/03/2029
वृश्चि	07/04/2026	धनु	06/01/2027	मक	07/10/2027	सिंह	07/07/2028	कन्या	07/04/2029
धनु	30/04/2026	मक	29/01/2027	कुंभ	30/10/2027	कर्क	30/07/2028	सिंह	30/04/2029
मक	23/05/2026	कुंभ	21/02/2027	मीन	22/11/2027	मिथु	22/08/2028	कर्क	23/05/2029
कुंभ	15/06/2026	मीन	16/03/2027	मेष	15/12/2027	वृष	13/09/2028	मिथु	14/06/2029

सिंह - कर्क		सिंह - सिंह		कन्या - तुला		कन्या - वृश्चि		कन्या - धनु	
14/06/2029		15/03/2030		14/12/2030		14/09/2031		14/06/2032	
15/03/2030		14/12/2030		14/09/2031		14/06/2032		15/03/2033	
मिथु	07/07/2029	कन्या	07/04/2030	वृश्चि	06/01/2031	तुला	07/10/2031	वृश्चि	07/07/2032
वृष	30/07/2029	तुला	30/04/2030	धनु	29/01/2031	कन्या	30/10/2031	तुला	30/07/2032
मेष	22/08/2029	वृश्चि	23/05/2030	मक	21/02/2031	सिंह	22/11/2031	कन्या	22/08/2032
मीन	14/09/2029	धनु	15/06/2030	कुंभ	16/03/2031	कर्क	15/12/2031	सिंह	13/09/2032
कुंभ	07/10/2029	मक	07/07/2030	मीन	07/04/2031	मिथु	06/01/2032	कर्क	06/10/2032
मक	29/10/2029	कुंभ	30/07/2030	मेष	30/04/2031	वृष	29/01/2032	मिथु	29/10/2032
धनु	21/11/2029	मीन	22/08/2030	वृष	23/05/2031	मेष	21/02/2032	वृष	21/11/2032
वृश्चि	14/12/2029	मेष	14/09/2030	मिथु	15/06/2031	मीन	15/03/2032	मेष	14/12/2032
तुला	06/01/2030	वृष	07/10/2030	कर्क	08/07/2031	कुंभ	07/04/2032	मीन	06/01/2033
कन्या	29/01/2030	मिथु	30/10/2030	सिंह	31/07/2031	मक	29/04/2032	कुंभ	28/01/2033
सिंह	21/02/2030	कर्क	21/11/2030	कन्या	22/08/2031	धनु	22/05/2032	मक	20/02/2033
कर्क	15/03/2030	सिंह	14/12/2030	तुला	14/09/2031	वृश्चि	14/06/2032	धनु	15/03/2033

कन्या - मक		कन्या - कुंभ		कन्या - मीन		कन्या - मेष		कन्या - वृष	
15/03/2033		14/12/2033		14/09/2034		15/06/2035		15/03/2036	
14/12/2033		14/09/2034		15/06/2035		15/03/2036		14/12/2036	
धनु	07/04/2033	मीन	06/01/2034	मेष	07/10/2034	वृष	08/07/2035	मेष	07/04/2036
वृश्चि	30/04/2033	मेष	29/01/2034	वृष	30/10/2034	मिथु	31/07/2035	मीन	29/04/2036
तुला	23/05/2033	वृष	21/02/2034	मिथु	21/11/2034	कर्क	22/08/2035	कुंभ	22/05/2036
कन्या	14/06/2033	मिथु	15/03/2034	कर्क	14/12/2034	सिंह	14/09/2035	मक	14/06/2036
सिंह	07/07/2033	कर्क	07/04/2034	सिंह	06/01/2035	कन्या	07/10/2035	धनु	07/07/2036
कर्क	30/07/2033	सिंह	30/04/2034	कन्या	29/01/2035	तुला	30/10/2035	वृश्चि	30/07/2036
मिथु	22/08/2033	कन्या	23/05/2034	तुला	21/02/2035	वृश्चि	22/11/2035	तुला	22/08/2036
वृष	14/09/2033	तुला	15/06/2034	वृश्चि	16/03/2035	धनु	15/12/2035	कन्या	13/09/2036
मेष	07/10/2033	वृश्चि	07/07/2034	धनु	07/04/2035	मक	06/01/2036	सिंह	06/10/2036
मीन	29/10/2033	धनु	30/07/2034	मक	30/04/2035	कुंभ	29/01/2036	कर्क	29/10/2036
कुंभ	21/11/2033	मक	22/08/2034	कुंभ	23/05/2035	मीन	21/02/2036	मिथु	21/11/2036
मक	14/12/2033	कुंभ	14/09/2034	मीन	15/06/2035	मेष	15/03/2036	वृष	14/12/2036

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

चर दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - मिथु		कन्या - कर्क		कन्या - सिंह		कन्या - कन्या		तुला - वृश्चि	
14/12/2036		14/09/2037		15/06/2038		16/03/2039		15/12/2039	
14/09/2037		15/06/2038		16/03/2039		15/12/2039		15/03/2040	
वृष	06/01/2037	मिथु	07/10/2037	कन्या	07/07/2038	तुला	07/04/2039	तुला	22/12/2039
मेष	28/01/2037	वृष	29/10/2037	तुला	30/07/2038	वृश्चि	30/04/2039	कन्या	30/12/2039
मीन	20/02/2037	मेष	21/11/2037	वृश्चि	22/08/2038	धनु	23/05/2039	सिंह	06/01/2040
कुंभ	15/03/2037	मीन	14/12/2037	धनु	14/09/2038	मक	15/06/2039	कर्क	14/01/2040
मक	07/04/2037	कुंभ	06/01/2038	मक	07/10/2038	कुंभ	08/07/2039	मिथु	22/01/2040
धनु	30/04/2037	मक	29/01/2038	कुंभ	30/10/2038	मीन	31/07/2039	वृष	29/01/2040
वृश्चि	23/05/2037	धनु	21/02/2038	मीन	21/11/2038	मेष	22/08/2039	मेष	06/02/2040
तुला	14/06/2037	वृश्चि	15/03/2038	मेष	14/12/2038	वृष	14/09/2039	मीन	13/02/2040
कन्या	07/07/2037	तुला	07/04/2038	वृष	06/01/2039	मिथु	07/10/2039	कुंभ	21/02/2040
सिंह	30/07/2037	कन्या	30/04/2038	मिथु	29/01/2039	कर्क	30/10/2039	मक	29/02/2040
कर्क	22/08/2037	सिंह	23/05/2038	कर्क	21/02/2039	सिंह	22/11/2039	धनु	07/03/2040
मिथु	14/09/2037	कर्क	15/06/2038	सिंह	16/03/2039	कन्या	15/12/2039	वृश्चि	15/03/2040

तुला - धनु		तुला - मक		तुला - कुंभ		तुला - मीन		तुला - मेष	
15/03/2040		14/06/2040		13/09/2040		14/12/2040		15/03/2041	
14/06/2040		13/09/2040		14/12/2040		15/03/2041		14/06/2041	
वृश्चि	22/03/2040	धनु	22/06/2040	मीन	21/09/2040	मेष	21/12/2040	वृष	23/03/2041
तुला	30/03/2040	वृश्चि	29/06/2040	मेष	29/09/2040	वृष	29/12/2040	मिथु	30/03/2041
कन्या	07/04/2040	तुला	07/07/2040	वृष	06/10/2040	मिथु	06/01/2041	कर्क	07/04/2041
सिंह	14/04/2040	कन्या	15/07/2040	मिथु	14/10/2040	कर्क	13/01/2041	सिंह	15/04/2041
कर्क	22/04/2040	सिंह	22/07/2040	कर्क	22/10/2040	सिंह	21/01/2041	कन्या	22/04/2041
मिथु	29/04/2040	कर्क	30/07/2040	सिंह	29/10/2040	कन्या	28/01/2041	तुला	30/04/2041
वृष	07/05/2040	मिथु	06/08/2040	कन्या	06/11/2040	तुला	05/02/2041	वृश्चि	07/05/2041
मेष	15/05/2040	वृष	14/08/2040	तुला	13/11/2040	वृश्चि	13/02/2041	धनु	15/05/2041
मीन	22/05/2040	मेष	22/08/2040	वृश्चि	21/11/2040	धनु	20/02/2041	मक	23/05/2041
कुंभ	30/05/2040	मीन	29/08/2040	धनु	29/11/2040	मक	28/02/2041	कुंभ	30/05/2041
मक	07/06/2040	कुंभ	06/09/2040	मक	06/12/2040	कुंभ	07/03/2041	मीन	07/06/2041
धनु	14/06/2040	मक	13/09/2040	कुंभ	14/12/2040	मीन	15/03/2041	मेष	14/06/2041

तुला - वृष		तुला - मिथु		तुला - कर्क		तुला - सिंह		तुला - कन्या	
14/06/2041		14/09/2041		14/12/2041		15/03/2042		15/06/2042	
14/09/2041		14/12/2041		15/03/2042		15/06/2042		14/09/2042	
मेष	22/06/2041	वृष	21/09/2041	मिथु	22/12/2041	कन्या	23/03/2042	तुला	22/06/2042
मीन	30/06/2041	मेष	29/09/2041	वृष	29/12/2041	तुला	31/03/2042	वृश्चि	30/06/2042
कुंभ	07/07/2041	मीन	07/10/2041	मेष	06/01/2042	वृश्चि	07/04/2042	धनु	07/07/2042
मक	15/07/2041	कुंभ	14/10/2041	मीन	13/01/2042	धनु	15/04/2042	मक	15/07/2042
धनु	22/07/2041	मक	22/10/2041	कुंभ	21/01/2042	मक	22/04/2042	कुंभ	23/07/2042
वृश्चि	30/07/2041	धनु	29/10/2041	मक	29/01/2042	कुंभ	30/04/2042	मीन	30/07/2042
तुला	07/08/2041	वृश्चि	06/11/2041	धनु	05/02/2042	मीन	08/05/2042	मेष	07/08/2042
कन्या	14/08/2041	तुला	14/11/2041	वृश्चि	13/02/2042	मेष	15/05/2042	वृष	15/08/2042
सिंह	22/08/2041	कन्या	21/11/2041	तुला	21/02/2042	वृष	23/05/2042	मिथु	22/08/2042
कर्क	29/08/2041	सिंह	29/11/2041	कन्या	28/02/2042	मिथु	30/05/2042	कर्क	30/08/2042
मिथु	06/09/2041	कर्क	06/12/2041	सिंह	08/03/2042	कर्क	07/06/2042	सिंह	06/09/2042
वृष	14/09/2041	मिथु	14/12/2041	कर्क	15/03/2042	सिंह	15/06/2042	कन्या	14/09/2042

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 5, 9, 8
शत्रु अंक	2, 4,
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	79%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पुखराज	गुरु	78%	सन्तति सुख, धनार्जन, धन
नीलम	शनि	77%	धनार्जन, कम खर्च, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	67%	कम खर्च, सुख, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	64%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
पन्ना	बुध	62%	धनार्जन, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
लहसुनिया	केतु	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	41%	व्यय, हानि
मोती	चंद्र	34%	सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग

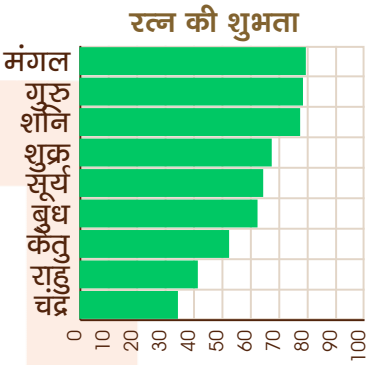

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	23/09/2005	70%	47%	86%	50%	91%	55%	77%	41%	52%
शनि	23/09/2024	52%	9%	67%	69%	78%	73%	89%	52%	28%
बुध	23/09/2041	70%	9%	79%	75%	78%	73%	77%	41%	52%
केतु	23/09/2048	52%	9%	86%	62%	78%	73%	64%	16%	64%
शुक्र	23/09/2068	52%	9%	79%	69%	78%	80%	83%	52%	58%
सूर्य	23/09/2074	77%	47%	86%	62%	84%	55%	64%	16%	28%
चंद्र	23/09/2084	70%	55%	79%	69%	78%	67%	77%	16%	28%
मंगल	23/09/2091	70%	47%	92%	50%	84%	67%	77%	16%	58%
राहु	24/09/2109	52%	9%	67%	62%	78%	73%	83%	58%	28%

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मूंगा, पुखराज व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मूंगा व पुखराज रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए हीरा, माणिक्य, पन्ना एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद व मोती रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। धन, यश, सुख और वाहनों का सुख प्रदान करेगा। मूंगा रत्न आपको महत्वाकांक्षी और दृढनिश्चयी व्यक्ति बनाएगा। मूंगा रत्न शुभता से बड़े पद और

प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न प्रभाव आपको इंजीनियरिंग क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति के अवसर दे सकता है। इसके अतिरिक्त यह मंगल आपको शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत पर ओर अधिक अनुकूल सिद्ध हो सकता है। आजीविका क्षेत्र में आपकी नेतृत्व योग्यता का विकास करने में भी मूंगा रत्न शुभ दायक रहेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं दशमेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर सकते है। यह मूंगा सेवकों एवं सहोदरों से आपके संबंध मजबूत कर सकता है। रत्न शुभता से आपको कंप्यूटर तकनीक एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र में शुभ फल प्रदान कर सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए आजीविका क्षेत्र का रत्न है। अतः इस रत्न को धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते है. आप यह रत्न धारण कर अपनी नेतृत्व योग्यता, प्रभुता, व्यापार, अधिकार, राज्य एवं साहस भाव में वृद्धि कर शुभ फल प्राप्त कर सकते है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु पंचम भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण आपमें दयालुता और विनम्रता के गुण व्याप्त करेगा। आपकी गिनती बुद्धिमान, पवित्र और श्रेष्ठ व्यक्तियों में होंगी। इस रत्न की शक्तियों से आप चतुर, समझदार और महान कार्य करने वाले बनेंगे। यह रत्न आपके लिए शुभ रत्न है। इसके प्रभाव से आप उत्तम वक्ता, धारा प्रवाह बोलने वाले और कुशल व्याख्याता होंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उत्तम होगी। पुखराज रत्न आपको संघर्षों से मुंह न मोडकर विपत्तियों से जूझते रहने की विशेषज्ञता देगा। आपकी न्यायशीलता में वृद्धि होगी।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में गुरु दवितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर सकते है। पुखराज रत्न की शुभता से आपके धन, लाभ व उन्नति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपके बडी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी एवं शुभ चिन्तक भी प्राप्त हो सकते हैं। रत्न प्रभाव आपको उत्तम आय वाला, शूर, निरोगी, स्वस्थ, धनी, दीर्घायु, स्थिर संपत्ति वाला

तथा अनेक आयामों से सौभाग्यशाली कर सकता हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप निलीभी और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वादशेश है। शनि की शुभता में वृद्धि करने के लिए आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। नीलम रत्न शनि का रत्न होने के कारण आपको निरोगी, स्वस्थ और शारीरिक कुशलता दे सकता है। इस रत्न को आप अपने जीवन रत्न के रूप में भी धारण कर सकते है। नीलम रत्न की शुभता से आपके व्यर्थ व्यय नियंत्रित रहेंगे। अस्पताल व जेल इत्यादि क्षेत्रों से आपको परेशानी अधिक नहीं होगी। शनि रत्न नीलम का प्रभाव आपकी निद्रा सुख को भी बढ़ाएगा। समुद्रिक यात्रा, विदेश यात्रा का सुख भी यह रत्न आपको दे सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा,

नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह का हीरा रत्न धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। हीरा रत्न धारण करने से विदेश स्थानों की आय से आपके वैभव और आय में बढ़ोतरी होगी। यह रत्न आपको श्रेष्ठकर्मों से जोड़ेगा। आपको अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त होगा। शुक्र रत्न हीरा आपको विरोधियों से आत्मीयता दे सकता है। हीरा रत्न शुभता से आप वैभव, सुख सामग्री और भौतिक सुविधाओं पर अत्यधिक व्यय कर सकते है। इस रत्न को धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रख सकते है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं नवमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। शुक्र रत्न आपको सुख-सुविधा युक्त वाहन, साज सज्जा युक्त घर एवं भूमि-भवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। इसकी शुभता से आप संचित धन एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्ति में अनुकूल फल दिला सकता है। हीरा रत्न शुक्र का रत्न होने के कारण आपको आकर्षक बना सकता है। शुक्र रत्न हीरा आपको धर्म मार्ग से जोड़ेगा, पुण्य, भाग्यवर्धक, गुरु, तीर्थ यात्रा, पिता का सुख एवं दूर स्थानों की यात्राएं करा सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्त्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में सूर्य सप्तम भाव के स्वामी है। आप सूर्य रत्न

माणिक्य धारण कर सकते है। माणिक्य रत्न की शुभता से आपको स्वास्थ्य अनुकूलता प्राप्त हो सकती है। आप तेजस्वी बन सकते है। यह रत्न आपको शक्तिशाली बना सकता है। दांपत्य जीवन को आनन्दमय बनाए रखने के लिए भी आप माणिक्य रत्न धारण कर सकते है। सप्तम भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण सूर्य आपको स्वतंत्र व्यापार करने का गुण दे सकता है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न होने के कारण आपको सरकारी क्षेत्रों में अनुकूलता देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंड्ली में बुध एकादश भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना धारण करना आपके लिए शुभफलदायक रहेगा। पन्ना रत्न प्रभाव से आप ईमानदार और विनम्र स्वभाव के स्वामी बनेंगे। रत्न शुभता से आप अपनी बातों को निभाने का पूरा प्रयास करेंगे। पन्ना रत्न को धारण करने से आप अपने गुणों के कारण लोकप्रिय होंगे। आप कुछ न कुछ नया जानने का प्रयास करेंगे। पन्ना रत्न आपको भाग्यशाली और सुखी बनाएगा। रत्न शुभता आपको सेवकों का सुख और उत्तम वाहनों का सुख देगा। यह रत्न आपको शिल्पकला, लेखन या व्यापार के माध्यम से भी धन देगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। बुध रत्न पन्ना धारण कर आप शिक्षा क्षेत्र में योग्यता से अधिक सफलता प्राप्त कर सकते है। रत्न शुभता से आपके बुद्धिबल का विकास हो सकता है। आप की स्मरण शक्ति प्रबल हो सकती है। यह रत्न आपकी विद्या ग्रहण शक्ति का विकास कर सकता है। बुध रत्न आपके लिए शुभ रत्न है तथा इसकी शुभता से आपके संतान सुख में भी वृद्धि होगी। पन्ना रत्न आपके आत्मविश्वास को प्रबल, प्रबंध क्षमता उत्तम, गणितीय योग्यता उत्तम, नियोजन कुशलता श्रेष्ठ रख सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं

जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु छ्ठें भाव में स्थित है। केतु रत्न लहसुनिया धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप स्वयं को निरोगी बनाए रख सकते है। आपके अपने भाईयों से संबंध मधुर रहेंगे। यह रत्न आपको गुणवान और दृढ प्रतिज्ञ व्यक्ति बनायेगा। लहसुनिया रत्न आपको विद्या के कारण यश देगा। रत्न शुभता से आप अपने शत्रुओं को नष्ट करने वाले और विभिन्न विवादों में विजय प्राप्त करेंगे। लहसुनिया रत्न आपको अपने जीवन काल में श्रेष्ठ पद दिलाएगा। ननिहाल से आदर सम्मान प्राप्त होगा।

केतु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र पंचम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहू द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करना आपके मन में भ्रम दे

सकता है। रत्न प्रभाव से आपके सुख चैन में कमी हो सकती है। आपके दिमाग में अनेक भ्रांतियां जन्म ले सकती है। उन्नतिशील होने के लिए आप अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो सकते है। अनेक योजनाएं आपके मस्तिषक में निर्मित हो सकती है। यह रत्न आपके दिमाग को अत्यधिक क्रियाशील बनाए रखेगा। गोमेद रत्न प्रभाव से आप बढ़ चढ़ कर बातें करने वाले हो सकते है। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग दे सकता है। गोमेद रत्न आपको वैचारिक अस्थिरता दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपको पिता को सुख भी कम ही मिल पाएगा। कार्यो में अनिष्टता का भाव प्रभावी हो सकता है।

राहु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से विदेशी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय बाधित होगी। आपको भाग्योदय के लिए अपने जन्म स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी दयालुता भाव में भी कमी करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आपके बड़े भाई बहनों की संख्या में कमी हो सकती है। इस कारण आप अपने भाई बहनों में सबसे बड़े हो सकते हैं। रत्न प्रतिकूलता आपके धन में कमी का कारण बन सकती है। चिकित्सा जगत, औजारों, यंत्रों व हथियारों के निर्माण क्षेत्रों में आपकी विशेषज्ञता प्राप्ति बाधित हो सकती है। यह रत्न आपमें यांत्रिकी सम्बंधित ज्ञान की कमी कर रहा है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने से आप स्वभाव से चिड़चिड़ा हो सकता है। यह रत्न आपकी शिक्षा में अनियमिता का कारण बन सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी रुचि शेयर क्रय-विक्रय में हो सकती है। यह रत्न संतान पक्ष से आपकी परेशानियां बढ़ा सकता है। इसके प्रभाव से आपके दैनिक क्रियाकलापों में संतान का दिशानिर्देश सामान्य से अधिक हो सकता है। गुप्त विद्याओं की ओर आप आकर्षित हो सकते है। मोती धारण करने पर आपको अपना शैक्षिक स्थल बार बार बदलना पड़ सकता है। मोती रत्न के दुष्प्रभाव से बचने के लिए आप तली हुई चीजों के प्रयोग में कमी करें। संतुष्टि बनाए रखने से आपमें प्रसन्नता का भाव बना रहेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती आपको शारीरिक रूप से कमजोर कर सकता है। इस रत्न प्रभाव से आपका रुग्ण शरीर व शीत विकारयुक्त हो सकता है। मोती रत्न आपको भय व चिंताग्रस्त कर सकता है। छठे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण मोती आपको शत्रुओं पर संघर्ष के बाद विजय देगा। कभी कभी आप अपने शत्रुओं को कमजोर समझकर पूर्ण शक्ति से विरोध नहीं करते है। रत्न धारण से आपको ननिहाल पक्ष से हानि की स्थिति बन सकती है। साथ ही यह रत्न आपको जीवन साथी से वैचारिक मतभेद दे सकता है। चंद्र रत्न मोती पहनने पर आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

बुध
(23/09/2024 - 23/09/2041)

बुध की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(23/09/2041 - 23/09/2048)

केतु की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, नीलम, लहसुनिया, पन्ना व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(23/09/2048 - 23/09/2068)

शुक्र की दशा में आपका नीलम, हीरा, मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, लहसुनिया, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(23/09/2068 - 23/09/2074)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन

शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(23/09/2074 - 23/09/2084)

चन्द्र की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पन्ना, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(23/09/2084 - 23/09/2091)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, हीरा, लहसुनिया व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(23/09/2091 - 24/09/2109)

राहु की दशा में आपका नीलम व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, मूंगा, पन्ना, गोमेद व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

गुरु - 23/09/2005

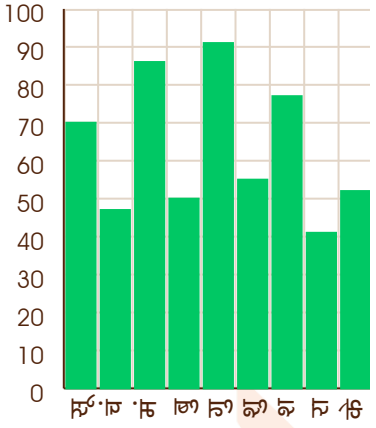

शनि - 23/09/2024

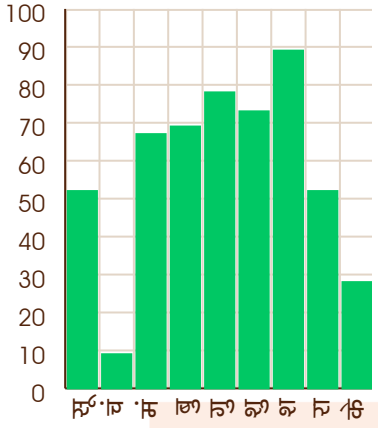

बुध - 23/09/2041

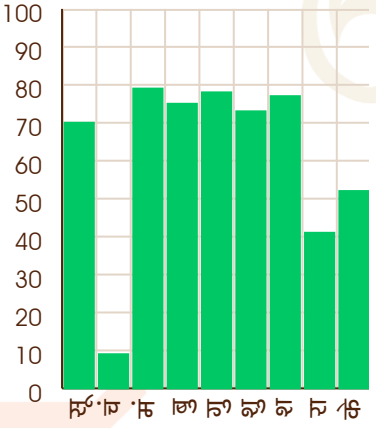

केतु - 23/09/2048

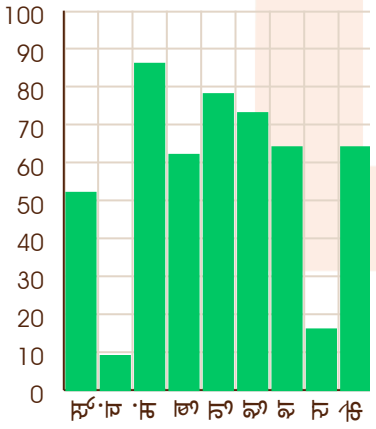

शुक्र - 23/09/2068

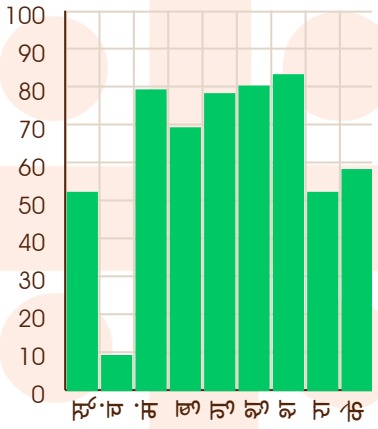

सूर्य - 23/09/2074

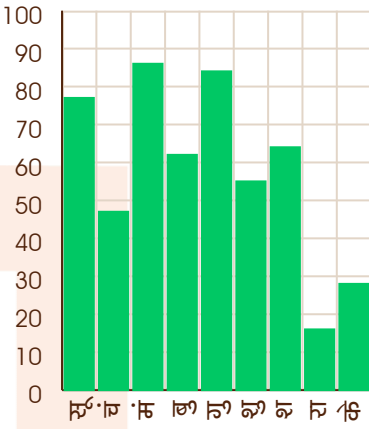

चन्द्र - 23/09/2084

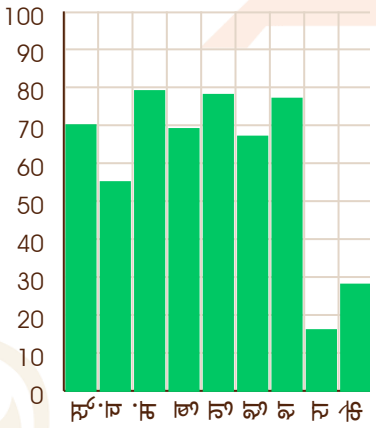

मंगल - 23/09/2091

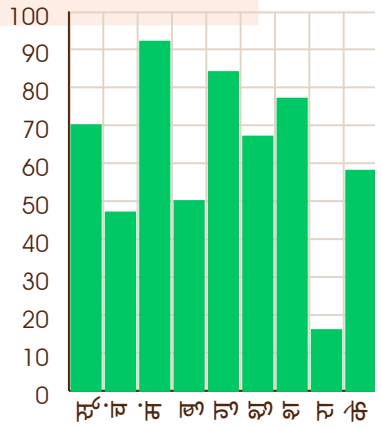

राहु - 24/09/2109

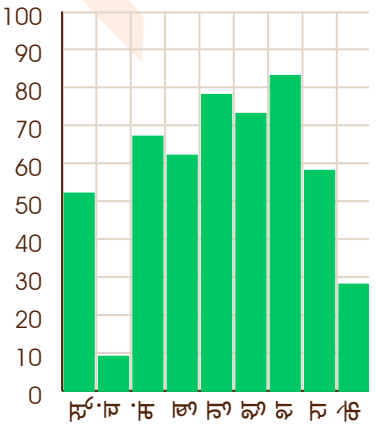

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ऐमेथिस्ट

आपका जन्म कुंभ राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि इसको न्याय के साथसजा देने का अधिकार प्राप्त है तथा न्यायप्रिय ग्रह माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कुंभ राशि के लग्न वाले जातकों को कुंभ राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये एमेथिस्ट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे तो शनि को सेवक का पद प्राप्त है तथा एकाग्रचित व साधना का प्रतिनिधि ग्रह है इससे जातक को अच्छी नौकरी की प्राप्ति, लाभ व विद्यार्थियों को एकाग्रता प्रदान करता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सेवकों का सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है। शनि ग्रह राजसेवक का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों के दर्द व लाइलाज रोगों से परेशानी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है जिससे आध्यात्मिक गुण, योग साधना में अपनी सफलता प्राप्त करते हैं।

ऐमेथिस्ट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है । ऐमेथिस्ट रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त काल से एक घंटे के अंदर अंगूठी को धारण कर लेना चाहिए। ऐमेथिस्ट को यदि रविवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ऐमेथिस्ट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले या नीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सवा

मीटर काले कपड़े का दान करें तो ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सेवकों या अधीनस्थ कर्मचारियों व जमादार को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव महाराज की उपासना करें तथा शनिदेवजी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

कुंभ लग्न वाले जातक यदि ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता हैं। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई मे जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता हैं। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते है, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता हैं। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता हैं। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता हैं।

आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित हैं, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते है।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते है, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखे। जीवन साथी की भावनाओँ को आहात करने से बचे। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रूचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृतियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते है। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल

से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढेसाती प्रथम ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती तृतीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव में है। यह भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे। अपने कार्य क्षेत्र में सर्वदा उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही आप अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्च प्रशासनिक पद इंजीनियरिंग, मेडिकल या होटल आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीय पुरुष समझें जाएंगे । आप अपने कार्यों के द्वारा विशिष्ट सम्मान एवं ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आपको वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी उनकी आज्ञा का अनुपालन करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप परिश्रम एवं उत्साह से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे परन्तु माता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप उनको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा साथ ही संतति की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी बुद्धि में भी यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान रहेगा लेकिन आप अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको न्यूनाधिक सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक प्रभावी व्यक्ति होंगे। जीवन में

धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा सन्तुष्टि रहेगी। इसके अतिरिक्त सभी लोग आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र, बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर

पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 14 है। एक एवं चार के योग से आपका मूलांक 5 होता है। मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह है। एक अंक का सूर्य तथा चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु तथा पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह है। इन सभी ग्रहों का न्यूनाधिक मात्रा में आपके ऊपर प्रभाव रहेगा। मूलांक स्वामी बुध के प्रभावश आप नौकरी की अपेक्षा व्यापार मार्ग का चुनाव करना अधिक पसन्द करेंगे। रोजगार आप ऐसा चुनेंगे, जहाँ लेखा, लेन-देन, वाणिज्य, यांत्रिकी जैसे कार्य संपादित हों। फैक्ट्री, कम्पनी, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा।

बुध वाणी का दाता है। सूर्य प्रसिद्धि का, हर्षल परिवर्तन का। अतः आपके अंन्दर वाक् पटुता, बुद्धि-विवेक अच्छा रहेगा एवं आपकी सामाजिक स्थिति भी अच्छी रहेगी। मूलांक के प्रभाव से आपकी आर्थिक, सामाजिक स्थितियाँ परिवर्तनशील रहेंगी एवं परिवर्तन करते रहना आपको अच्छा लगेगा।

परिवर्तनशील गुण होने से आपके विचारों में समयानुसार, अवस्थानुसार बदलाव आता रहेगा। जो कि आपकी अन्तिम अवस्था तक चलेगा। इस क्रिया का अन्त में आपको लाभ अच्छा मिलेगा और आपका यश, नाम इत्यादि दीर्घकाल तक याद किया जाता रहेगा। आप अपनी कमियों का निरन्तर निरीक्षण करते रहेंगे तो निश्चित ही आप उक्त ग्रहों के प्रभाववश एक सफल व्यक्तित्व के धनी हो जायेंगे।

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमणचक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से आपका भाग्योदय भी धीरे-धीरे होगा। आप भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुए हों आपका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जायेगा। इस मध्य रुकावटें भी आयेंगी, जिन्हें आप धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेंगे। आलस्य एवं निराशा आपकी तरक्की की बाधाऐं रहेंगी। इन पर विजय प्राप्त करना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

आप अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करेंगे। आपकी सभी सफलताएं विध्नों से युक्त होते हुये भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेंगे। आपका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होगा। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था आपके भाग्योदय में विशेष सहायक होगी। अन्तिम अवस्था आपकी अच्छी रहेगी एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे।

आपका मूलांक 5 है तथा आपका भाग्यांक 8 है। मूलांक 5 का स्वामी बुध है तथा भाग्यांक 8 का स्वामी शनि है। मूलांक 5 और भाग्यांक 8 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक दोनों के ही ठीक-ठीक प्रभाव प्राप्त होंगे। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप अपनी मेहनत से धीरे-धीरे सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ते हुए उन्नति प्राप्त करेंगे। धन संग्रह करने में आपको काफी मेहनत एवं बुद्धि का उपयोग करना पड़ेगा। तभी आप वांछित धन एकत्रित करने में सफल होंगे । आपका भाग्योदय देर से, धीरे-धीरे, लेकिन स्थायी होगा। आप जीवन में जो भी कार्य करेंगे, उनमें रुकावट अवश्य आएंगी। आपके

कार्यक्षेत्र में सबसे बड़ी बाधा आपका आलस्य रहेगा। यदि आप किसी भी कार्य को कल पर नही टालेंगे, तो सफलता आपके नजदीक रहेगी। श्रम शक्ति तथा कूटनीति के द्वारा आप जो भी कार्य सिद्ध करना चाहेंगे, उसमें सफल रहेंगे। युवा एवं मध्य अवस्था की अपेक्षा अंतिम अवस्था में आपके पास अच्छी धन-संपत्ति एकत्रित होगी। आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा उच्च कोटी की रहेगी तथा समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे।

आपका भाग्योदय 26 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 35 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 44 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

मूलांक 5 की 3 एवं 9 से मित्रता है तथा भाग्यांक 8 की 1 एवं 4 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 5, 8, 9 के अंक विशेष घटना वाले रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा मे, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, मई, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 5 एवं भाग्यांक 8 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 3, 4, 5, 8, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 5, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67, 76
5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68, 77
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

बुध दिनांक 22 मई से 21 जून एवं 24 अगस्त से 23 सितंबर तक, पाश्चात्य मत से, सूर्य मिथुन एवं कन्या राशि में रहता है तथा भारतीय मतानुसार 15 जून से 15 जुलाई तक एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर तक सूर्य मिथुन तथा कन्या राशि में रहता है। मिथुन बुध की स्वराशि तथा कन्या उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक पांच के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार के दिन आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार व्यापार संबंधी कार्य प्रारंभ करें तो यह आपके लिए अच्छा रहेगा। इन दिवसो में अनुकूल तारीखें भी हों तो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होगा।

शुभ तारीखें

अंग्रेजी के किसी भी माह की 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखें आपके लिए कोई कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगी। इन तारीखों में आपके लिए अपना कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उच्च अधिकारी या किसी विशिष्ट व्यक्ति से मिलना, पत्र लेखन इत्यादि विशेष लाभप्रद रहेगा।

अशुभ तारीखें

अंग्रेजी माह की 2, 4, 11, 13, 20, 22, 29 एवं 31 तारीखों में किसी भी प्रकार का व्यापार संबंधी कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, अथवा पत्र व्यवहार संबंधी कार्य करना आपके लिए प्रतिकूल है। अतः आप इन तिथियों में कोई भी शुभ कार्य संपन्न न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखों अथवा 15 जून से 15 जुलाई एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर के मध्य हुआ है, ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा ये लोग रोजगार-व्यवसाय के क्षेत्र में भी आपके सफल मित्र साबित होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

कोई भी महिला जिसका मूलांक 3, 5, 9 होता है तथा जिसका जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 दिनांको में हुआ हो वे आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगी तथा इन महिलाओं से आप स्नेहपूर्ण संबंध रख सकते हैं।

अनुकूल रंग

मूलांक के अनुसार आपके लिए हल्का खाकी, सफेद चमकीला उज्जवल रंग उत्तम रहेंगे। अतः ये आपके स्वास्थ्य आदि के लिए ठीक रहेंगे। हो सके तो आप इन रंगों का रुमाल हर समय अपने साथ रखें और यदि आप अपने ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग का पसंद करेंगे तो और भी अच्छा रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उपयुक्त दिशा उत्तर है। इसलिए आपके लिए ऐसा मकान या फ्लैट शुभ रहेगा जिसका मूलांक तथा नामांक 5 हो। उत्तर दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। आप अपने घर की बैठक उत्तर दिशा में ही करें एवं घर के फर्नीचर आदि का रंग खाकी, सफेद चमकीला होना चाहिए, जो आपके लिए अच्छे फल देने वाले होंगे।

शुभ वाहन नं

अगर आप स्वयं का वाहन खरीदना चाहते हैं तो उसके लिए आपको पहले अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंकों के अनुसार पंजीकरण क्रमांक लेना हितकर रहेगा। आपका मूलांक 5 है एवं मित्रांक 3 एवं 9 हैं। अतः आपके लिए शुभ पंजीकरण क्रमांक 5234 = 5 आदि होना चाहिए। आपके वाहन का नंबर 104 = 5 इत्यादि हो तभी आपके लिए यह शुभ फलदायक रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तथा आप चर्म रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक चिंता, दुर्बलता, शारीरिक कमजोरी तथा मानसिक दुर्बलता से ग्रसित हो जाते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय विष्णु की पूजा, पूर्णिमा का व्रत कर के, केले का प्रसाद लें।

व्यवसाय

तार और टेलीफोन विभाग, ज्योतिष, सेल्समैन, डाकघर, पोस्टमैन, बीमा विभाग, बैंकिंग, बजट निर्माण, रेलवे इंजीनियरी, संपादक, तंबाकू व्यवसाय, रेडियो व्यवसाय, लेखक, पत्रकार, अनुवादक, राजनीति संबंधी कार्य, मुद्रणालय, संचार व्यवस्था, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालय, लाइब्रेरियन, यातायात संबंधी कार्य, इतिहास, खोज एवं पुरातत्व विभाग, आविष्कारक, मुनीम, पर्यटक एवं बुद्धि बल के समस्त कार्य।

व्रतोपवास

बुधवार को बुध अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। पैंतालीस या सत्रह बुधवारों को यह व्रत करें। हरे रंग के कपड़े पहनें एवं हरे पदार्थों का दान करें। तुलसी के पत्ते खाना एवं चढ़ाना लाभप्रद रहता है। पन्ना या मरगज की माला पर बुध मंत्र का जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए पन्ना शुभ रत्न है। उसके न मिलने पर उपरत्न मरगज, ओनेक्स, ग्रीन पेरनीडाट धारण करें। इसे आप सोने या चांदी में तीन से छह रत्ती में बनवा कर, बुधवार के दिन, शुक्ल पक्ष में दायें हाथ की कनिष्ठा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप बुध ग्रह की उपासना करें भगवान लक्ष्मी नारायण की आराधना करें। भगवान लक्ष्मी नारायण के चतुर्दशाक्षरी मंत्र "ओम् ह्रीं ह्रीं श्री श्री लक्ष्मी वासुदेवाय नमः" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगी तो आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगी। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान लक्ष्मी नारायण के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए बुध के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु बुध के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

बुध गायत्री मंत्र – ऊँ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप बुध का ध्यान करें, मन में बुध की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ बुध को अनुकूल बनाने हेतु बुध के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान नब्बे माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।। जप संख्या 9000।।

वनस्पति धारण

आप बुधवार के दिन विधारा की एक इंच लंबी जड़ ला कर, हरे धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या सोने या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे बुधवार के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, गोमय, चावल, गोरोचन, स्वर्ण, आंवला और मधु आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ बुध के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

बुध की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को बुध के पदार्थ कांसी, हाथी दांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शास्त्रा, पफल, षट्रास भोजन, घृत, सर्व पुष्प आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

बुध को अनुकूल बनाए रखने हेतु बुध यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, बुधवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में कुंभ लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर मिथुन का नवमांश एवं तुला राशि का द्रेष्काण भी उदित हुआ था। इस लग्नादिक समन्वय स्थिति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपके जीवन का प्रारूप चमत्कृत नियमावली में अंकित है। आपका जीवन गप-शप एवं सुखद वातावरण में व्यतीत होगा तथा आप पर्याप्त धन-दौलत से युक्त संपन्न एवं आपका घर-परिवार प्रसन्न रहेंगे।

आप धनोपार्जन के कलाकार एवं मास्टर हैं। आप दूसरे के साथ उदार भावनाओं से युक्त सहायता करने वाले हैं। आप शीघ्रता पूर्वक पर्याप्त मात्रा में धनोपार्जन कर उसे सुरक्षित कर सकेंगे। आप निश्चित रूप से आलसी नहीं है। आप महत्वपूर्ण विषयों का गहनतापूर्वक अध्ययन कर उस कार्यक्रम को विकसित करने के प्रति रूचिवान रहेंगे। आप धर्म दर्शन शास्त्र का सदैव अध्ययन कर सकेंगे। आपके लिए कार्य-व्यवसायों में अनुकूल धार्मिक एवं दार्शनिक कार्य, ज्योतिषीय कार्य, भाषा ज्ञान का कार्य शैक्षणिक कार्य एवं राजनीति के कार्य लाभदायक पथ हैं। आप इन चिह्नित कार्य-व्यवसायों में से कोई भी कार्य व्यवसायों का चयन कर सकते हैं।

आप वास्तव में उच्च स्तरीय विषयों पर चिंतन करने से दिलचस्पी रखते हो। आप मृत्यु के पश्चात जीवन की क्या गति होती है। इसके संबंध में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो। आप यदा-कदा ऐसा सोचते है कि सभी कुछ को त्याग कर जीवन दर्शन का ध्यान साधना करें।

अन्यथा आप अपने कार्य व्यवसाय के संबंध में अत्यंत व्यस्त रहने वाले व्यवस्थित प्राणी हैं। आप भीड़-भाड़ से बच कर सिर के बल सर्वप्रथम प्रमुख विषयों का अध्ययन कर अपनी कार्य योजना को विकसित करने की कार्य शैली पर विचार करते हो। दूसरी बात यह है कि आप अपने पक्ष में उत्कृष्ट पहुंच प्राप्त करने के लिए सामर्थ्यवान है। आप विधि पूर्वक किसी भी कार्य को संपन्न करने हेतु सक्षम प्राणी हैं।

परंतु आपके सभी समर्पित कार्य विश्वसनीयता के माध्यम से संचालित होता है। बल्कि आप धनोपार्जन हेतु कोई गलत ढंग मार्ग या पहुंच नहीं चाहते। आप दूसरों के माध्यम से उपर्युक्त विषयों के संबंध में (खुलम खुल्ला) प्रत्यक्ष रूप से अव्यवस्थित मूल्यांकन करना नहीं चाहते। आपसे संबंधित कुछ मित्र विजय श्री प्राप्त करना चाहते हैं। परंतु आपको सतर्क रहना चाहिए। आप अत्यंत सावधान रह कर, अपने निकट संबंधियों का ध्यान रखें, क्योंकि कुछ लोग आपकी योजना के प्रति धोखा-धड़ी करके आपकी सफलता को अवरूद्ध कर स्वयं आगे निकल जाएं।

जहां तक आपके समक्ष स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएं बिल्कुल ठीक है। परंतु आयु की वृद्धि के साथ-साथ कतिपय रोगादि सामान्य कुप्रभाव डाल सकते हैं, जिसके आधार पर आपको अधिक चिंताग्रस्त बना सकता है। अतः आप रक्तचाप, मिरगी, जॉनडिस, ट्यूमर आदि रोगों के प्रति समय-समय पर अपने चिकित्सक से विचार-विमर्श करना उत्तम होगा। आपके उत्तम घरेलू वातावरण के प्रभाव से भी आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप अपने गृहस्थाश्रम के

संबंध में भाग्यशाली हैं, क्योंकि आपके जीवन में बुद्धिमती पत्नी एवं समझदार पुत्र आपके आनंददायक जीवन में सहायक होंगे।

ऐसा संदेह है कि आप प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं अथवा नहीं? आप एक अत्यंत समृद्धिशाली व्यक्ति के समान धनी हो जाओगे। परंतु कुछ समय के बाद आप आवश्यकता के अनुरूप अपने को बना लेंगे। आप में एक परिश्रमी कार्य कर्त्ता के गुण विद्यमान हैं तथा आप धैर्यपूर्वक किसी कार्य के परिणाम की प्रतीक्षा करते हैं। सब कुछ के बाद आप धन को ही प्राथमिकता नहीं देते तथा निरंतर इसके पीछे नहीं पड़े रहते हैं। परंतु मात्र सांसारिक आवश्यकता हेतु आवश्यक है।

आप सदैव अंक 2, 3, 7 एवं 9 अंक पर भरोसा रख सकते हैं तथा इस अंक की प्रधानता देते हुए इसका व्यवहार अपने जीवन में कर सकते है क्योंकि ये अंक आपके लिए हितकर है। इसके अतिरिक्त अंक 1, 4, 5 एवं 8 अंक आपके लिए अव्यवहारणीय है।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग सफेद, लाल, पीला एवं क्रीम रंग है। परंतु नारंगी, नीला एवं हरा रंग आपके लिए प्रतिकूल एवं अव्यवहारणीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल दिन बुधवार, शनिवार एवं शुक्रवार का दिन लाभदायक है। परंतु शेष सोमवार, मंगलवार एवं रविवार, का दिन अव्यवहारणीय है।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्ययोगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्तिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक,

मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एव दाँत रोगी होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं चंचलता के भाव से युक्त रहते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। ये प्रारम्भ से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारों के व्यक्ति होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही पसंद करते हैं अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सहानुभूति का भाव रहता है परन्तु धार्मिकता के भाव की न्यूनता रहती है। साथ ही आधुनिकता के भाव से परिपूर्ण रहते हैं। साहित्य एवं कला में रूचि के साथ साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टि कोण विशाल होता है तथा किसी भी प्रकार से भेद भाव की भावना इनमें नहीं रहती है अध्ययन के प्रति इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक सम्मान एवं आदर प्राप्त करते हैं। अवसरानुकूल नेतृत्व प्राप्त करने में भी सफल रहते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा बुद्धिमता से अपने अधिकांश कार्य कलापों को सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे परन्तु मन में स्थिरता कम ही रहेगी। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आप सूक्ष्म दृष्टि के व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप परिश्रम पूर्वक धनार्जन करेंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप प्रारंभ से ही पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के रहेंगे तथा अपने इन्हीं गुणों के द्वारा जीवन में सफलताएं अर्जित करेंगे। धनैश्वर्य की आपके पास प्रचुरता रहेगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके इच्छित धन होगा।

समाज में आप एक सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा सपरिवार उनका उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने में रूचिशील दौरान आपकी- उत्कृष्ट कार्यों से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। साथ ही यदा कदा आप आवश्यकता से अधिक व्यय करेंगे। अतः ऐसी प्रवृति पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें।

मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी एवं परिश्रमी पुरूष होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करने में समर्थ होंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप दार्शनिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा स्वप्न दृष्टा प्रवृति भी होगी। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा अपनी वाणी को स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कहेंगे। साथ ही आप अत्यंत ही उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के प्रति आप पूर्ण सचेष्ट रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र होगा तथा अजनबी व्यक्ति भी प्रथम मुलाकात में ही आपसे प्रभावित होकर आपका मित्र बनने के लिए उत्सुक हो जाएगा। अपने विचारों को व्यक्त करते समय आप श्रोताओं की इच्छा के अनुसार ही अपने वक्तव्य को नया स्वरूप प्रदान करने की क्षमता रखेंगे जिससे लोग आपसे अत्यंत ही प्रभवित रहेंगे परन्तु यदा कदा आप में आत्म विश्वास की अल्पता होगी।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आप की अच्छी रहेगी तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप अपने विचारों को समय समय पर परिवर्तित करते रहेंगे इसका मूल उददे्श्य पारिवारिक जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करना रहेगा। आपको सुन्दर एवं स्वादिष्ट भोजन अच्छा लगेगा परन्तु मीठा एवं नमकीन स्वाद आपके विशेष प्रिय रहेंगे। सामान्यतया आपके स्वाद अन्य जनों से भिन्न रहेंगे। आपकी वाणी में भी मधुरता रहेगी तथा अन्य जन आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे साथ ही प्रकृतिक दृष्यों का अवलोकन करना आपको प्रिय लगेगा। जमीन, जायदाद, वाहन तथा बहुमूल्य द्रव्यों का भी आप अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त अचानक धन प्राप्ति एवं माता पिता की पैतृक सम्पति से भी आप धन वान होंगे तथा सुखपूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मेष राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा बौद्धिक कार्य सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही आप एक बुद्धिमान तथा विद्वान व्यक्ति भी होंगे। जीवन में भाईयों के सुख एवं सहयोग को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। यद्यपि उनका स्वभाव तेज होगा परन्तु बुद्धिमता से युक्त दौरान आपकी- प्रति वे आज्ञाकारी एवं कर्तव्य परायण रहेंगे। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे। यदा कदा आप लोगों के मध्य वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप हृदय से विशाल होंगे तथा अन्य जनों के प्रति आपके मन में दया तथा सहानुभूति की भावना विद्यमान रहेगी। इसके साथ ही आप अपने ही तरीके से सोचेंगे तथा उसी को कार्य रूप में परिणित करेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही समाज में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप आधुनिक संचार सुविधाओं यथा टेलीफोन , वाहन, दूरदर्शन आदि उपकरणों से भी युक्त रहेंगे। संगीत या कला आदि के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी तथा समयानुसार आप इससे मनोंरजन करेंगे । दूर समीप की यात्राओं से आपको समय समय पर लाभ होगा तथा इससे आपकी ख्याति में वृद्धि होगी। अच्छी एवं ज्ञानवर्द्धक पुस्तको को पढ़ने में आपकी रूचि रहेगी साथ ही लेखन कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सज्जनों से मित्रता करने वाले परोपकारी तथा विद्वान होंगे एवं सरकार से समय समय पर सम्मान प्राप्त करते रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आवश्यक सांसारिक सुखों से युक्त होंगे तथा आधुनिक सुख-संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी सम्पन्न होंगे एवं जीवन में उनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक समृद्धिशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी स्तर उन्नत होगा।

सामान्यतया जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी इसके स्वामित्व को प्राप्त करके आप श्रेष्ठता के भाव की अनुभूति करेंगे। किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपके नाम हो सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य में अभि वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा परंतु विवाद युक्त सम्पत्ति से दूर ही रहना चाहिए।

आपका आवास सामान्यतया अच्छा होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप नित्य तत्पर होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सज्जन होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख की प्राप्ति होगी तथा युवावस्था से ही आप वाहन का उपयोग करना प्रारंभ करेंगे जिससे आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी पारिवारिक जनों का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी फलतः सभी सदस्य उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप दोनों एक दूसरे के लिए सहयोगी सिद्ध होंगे तथा सुख-दुःख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे परंतु परस्पर मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है। अतः यदि आप परस्पर सामंजस्य बनाए रखें तो संबंधों में मधुरता आ सकती है। साथ ही माता से आपको अवसरानुकूल नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति भी होती रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको परिश्रम करना पड़ेगा तभी वांछित सफलताएं मिल सकती है। स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में भी आत्मविश्वास एवं परिश्रम के भाव का प्रदर्शन करना पड़ेगा लेकिन यदि आप स्नातक परीक्षा की अपेक्षा किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा आदि करें तो इससे आपके आसानी से सफलता मिलेगी तथा अपने भविष्य का निर्माण करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। तथा चन्द्रमा भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्य-कलापों को सम्पन्न करके उनमें वांछित उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी तथा इससे आप अवसरानुकूल इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित करेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान शीघ्र एवं सुगमता से करने में भी समर्थ होंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी रूचि एवं श्रद्धा होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। आपकी आधुनिक साहित्य कविता एवं संगीत के प्रति भी रूचि होगी एवं इस क्षेत्र में कुछ विशिष्ट कार्य करने में समर्थ होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी काफी रूचि होगी तथा इनमें भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। इसमें यदा-कदा आप भावुकता का भी प्रदर्शन करेंगे। आपका प्रेम मर्यादा एवं नैतिकता के अन्तर्गत होगा तथा इसमें आप यत्नपूर्वक यथार्थवादी दृष्टि कोण अपनाएंगे। जिससे आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका जीवन सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा।

संतति भाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा कन्या संतति की अधिकता रहेगी। आपके बच्चे सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, विन्रम एवं प्रतिभाशाली होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन करने में सर्वदा तत्पर होंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे आपसी सदभाव, सहयोग एवं सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी।

पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता के माध्यम से ही करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति माने जायेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारम्भ से ही वे शिक्षा में इच्छित उपलब्धियां अर्जित करेंगे। आप भी अपनी ओर से उन्हें उच्च शिक्षा प्रदान करेंगे तथा किसी भी प्रकार से कमी नहीं होने देंगे। बच्चे भी आपकी महत्वकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त वे स्वभाव के विन्रम, व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य कलापों को करने वाले होंगे जिससे अन्य सामाजिक लोग भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। इससे आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से रक्त सम्बन्धियों या मित्रों से आपको यदा कदा विरोध या शत्रुता का सामना करना पड़ेगा तथा वे अकारण ही आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है। आपकी खुशहाली एवं वैभवता को देखकर लोग ईर्ष्यालु होंगे आपके शत्रु आप पर अपना प्रभाव जमाना चाहेंगे तथा आपकी सामाजिक छवि को भी धूमिल करना चाहेंगे। लेकिन आप अपनी चतुराई बुद्धिमता, विनम्रता एवं कूटनीति से शत्रुवर्ग को पराजित तथा उत्पन्न समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में सफल होंगे।

आपके सेवक ईमानदारी तथा निष्ठापूर्वक आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे साथ ही आपके लिए वे आज्ञाकारी तथा विश्वासपात्र भी रहेंगे परन्तु यदि उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं दिया गया तो वे चोरी आदि भी कर सकते है अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए साथ ही कई बार वे आपके गुप्त रहस्यों को भी वे अपनी बातूनी प्रवृत्ति के कारण अन्य जनों से कह सकते है। इस प्रकार हो सकता है कि आप समय समय पर नौकरों का परिवर्तन करते रहें।

आप अपने व्यय पर नियंत्रण रखने में सफल रहेंगे क्योंकि आप धन संग्रह के प्रति विशेष रूचि रखेंगे। यही कारण है कि आप सबसे मित्रतापूर्ण संबंध रखने में प्रायः असफल से रहेंगे। साथ ही यदा कदा अनावश्यक पूंजी निवेश के कारण ऋण आदि की भी स्थिति आ सकती है तथा ऋण दाता द्वारा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके मामा मामी प्रवृत्ति से अच्छे व्यक्ति होंगे तथा आपके साथ उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। यद्यपि मामी से आपको पूर्ण सहयोग नहीं मिलेगा परन्तु मामा से आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप जीवन में फौजदारी मुकद्दमे से सम्बन्धित रहेंगे तथा इन पर आपका काफी समय एवं धन बर्बाद होगा परन्तु अपनी बुद्धिमता तथा अन्य गुप्त सूत्रों के द्वारा अन्त में विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त उत्तम स्वास्थ्य के लिए दैनिक खान पान में सावधानी रखें तथा मानसिक चिन्ताओं से भी दूर ही रहें अन्यथा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त कर सकते है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है सामान्यतया सिंह राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं स्वाभिमानी होता है तथा उसमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके स्वभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी। सांसारिक कार्य कलापों को वह परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगी तथा अपने साहसिक कार्यो से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। वे अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी जिससे परिवार एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक महिला होंगी एवं उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी तथा शरीर के अन्य अंग पुष्टता से युक्त रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में भी आकर्षण आएगा। पाश्चात्य समाज एवं संस्कृति के प्रति भी उनका रूझान रहेगा। भौतिकता के प्रति भी उनका आकर्षण होगा एवं सुंदर तथा कलात्मक वस्तुएं प्रिय होंगी तथा उनके संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में सिंह राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा तथा इसमें अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा या आप स्वयं भी प्रेम विवाह कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में आकर्षण एवं प्रेम की भावना भी होगी आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा एक दूसरे के सहयोग से सांसारिक कार्यो को पूर्ण करेंगे। इससे आपस में प्रेम विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह के समय दहेज के रूप में आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा एक दूसरे से सम्मान एवं सहयोग अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा की भावना होगी तथा उनका सुख दुख में पूरा ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार एवं वाणी से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उन्हें वांछित सम्मान देंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति अच्छी रहेगी तथा आपके पूर्वाभास एवं भविष्य वाणियां सत्य होंगी अध्यात्म, ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे लेकिन व्यवहारिक के ज्ञान की अपेक्षा अंतर्प्रज्ञा शक्ति ही अधिक सहायक सिद्ध होगी। आपके अधिकाशं कार्य अध्यात्म के अनुसार ही सम्पन्न होंगे अतः कई बार आप वास्तविकता से दूर हो जाएंगे। आपको न्यूनाधिक मात्रा में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी परन्तु बाद में आपको छोड़नी पड़ेगी जिससे आपको काफी मानसिक कष्ट होगा तथा इसके कारण वातावरण अशान्त होगा। साथ ही पुनः जायदाद जोड़ने के लिए आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। बन्धु एवं सम्बन्धियों से भी जायदाद के बारे में विवाद रहेगा जिससे परस्पर बन्धुत्व के भाव की अपेक्षा वैमनस्य का भाव ही उत्पन्न होगा ।

शादी के समय आपको किंचित धन आभूषण या अन्य चीजें दहेज के रूप में प्राप्त हो सकती हैं परन्तु आपके ससुराल वाले बार बार इस दहेज के बारे में आपको याद दिलाएंगे जिससे आपकी आधी खुशी उनके इस व्यवहार से खत्म हो जाएगी। बीमे के रूप में आपको विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं होगी यह केवल जितनी हानि या नुकसान हुआ है उसी के लिए पर्याप्त होगी। आपके जीवन में कोई विशेष दुर्घटना या चोरी आदि का योग नहीं है यदि ये भी घटित भी होती है तो इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आदर्श एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में काफी श्रद्धा रहेगी। आप दिखावे में विश्वास नहीं करते तथा जो कुछ भी करेंगे हृदय से सच्ची भावना से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मनुष्य मात्र की भलाई के लिए भी कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। दैनिक जीवन में आप पूजा तथा योग एवं धर्मानिषठ कार्य नित्य करते रहेंगे। साथ ही मानसिक एवं आत्मिक शान्ति के लिए तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे। धार्मिक उत्सवों के प्रति आपकी आदर की भावना रहेगी तथा अपने धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मो का भी पूर्ण सम्मान करेंगे साथ ही पारिवारिक परम्परा, रीति रिवाजों के अनुसार धर्म का अनुपालन करेंगे।

आप ईश्वर की सत्ता में विश्वास करेंगे तथा जीवन में विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे। साथ ही भाग्य भी आपका प्रबल रहेगा। योग ध्यान या आध्यात्म संबधी महत्वपूर्ण ग्रंथों का आप अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त ज्योतिष आदि में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा अर्न्तप्रज्ञा शक्ति की प्रबलता से सही भविष्यवाणियां करने में भी समर्थ रहेंगे।

आप धार्मिक तथा व्यावसायिक उददे्श्य की पूर्ति के लिए जीवन में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न करेंगे तथा इनसे आपको मान सम्मान ख्याति तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा साथ ही सामाजिक जनों के परोपकार संबधी कार्य भी सम्पन्न करेंगे लेकिन कभी कभी स्वार्थ वश कंजूसी का भी प्रदर्शन करेंगे लेकिन यह अल्प मात्रा में होगा। आप एक ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा आपके अनुयायी या सहायक भी रहेंगे पौत्रों से आपको पूर्ण सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के प्रभाव से इस जीवन को ऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही सूर्य भी मित्रराशिस्थ होकर दशमभाव में ही स्थित है। वृश्चिक राशि जलतत्व एवं सूर्य अग्नितत्व ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही इसमें आप समय समय पर परिवर्तन भी करेंगे तथा तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा लेकिन अधिक परिवर्तनों की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

दशम भाव में वृश्चिक राशिस्थ सूर्य के प्रभाव से आप के लिए औषधि विज्ञान, डाक्टर, इंजीनियर, विद्युत, एवं शक्ति विभाग सरकारी क्षेत्र, कम्प्यूटर साइंस, प्रशासकीय क्षेत्र, शुभ एवं अनुकूल रहेंगे साथ ही वैज्ञानिक शोध या अन्य अनुसंधान कार्यो में भी वांछित सफलता की प्राप्ति होगी अतः अपने उज्जवल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही अपने कार्य क्षेत्र का चयन करना चाहिए। इससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं से सुरक्षित रहेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए कैमिष्ट, ऊनी कपडों का व्यापार, रत्न या धातु सम्बंधी कार्य, विद्युत उपकरणों का उत्पादन या व्यापार, इंजीनियरिंग उपकरण, पर्यटन केन्द्र का स्वामित्व, सरकारी ठेके आदि से लाभ एवं धन अर्जित होगा एवं उन्नति के मार्ग में आपको किसी भी प्रकार से परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो सर्वत्र उन्नति के लिए उपरोक्त वस्तुओं एवं क्षेत्रो में ही कार्य प्रारंभ करें।

दशम भाव के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी अपनी योग्यता से अर्जित करेंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था के सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते है। इससे आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व आर्कषक होगा। साथ ही सामाजिक जनो पर भी उनका पूर्ण प्रभाव होगा एवं सभी लोग उन्हें वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्च शिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाने की प्रबल इच्छा होगी। साथ ही प्रारम्भ में आपके कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशिष्ट योगदान रहेगा। आप भी एक योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति हौंगे तथा अपनी योगयता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे एवं पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में भी वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधो में अनुकूलता रहेंगी तथा सैद्धांतिक एवं वैचारिक सम्मानता भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यो को एक दूसरे के सहयोग एवं सलाह से समपन्न करेंगे एवं पिता के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिका का भाव रखेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में धनु राशि स्थित है जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप पराक्रमी स्वस्थ्य तथा महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा जीवन में परिश्रम एवं योग्यता से इच्छाओं तथा आकाक्षांओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप जीवन में समस्त सुख साधनों से युक्त होंगे तथा निरन्तर रूप से आय एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक समृद्धि बनी रहेगी। आप शिक्षा, बैंक, ब्याज या प्रशासनिक कार्यो से इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे या तो आप इन क्षेत्रों में कार्यरत होंगे अथवा आपको इनसे संबंधित विभागों एवं लोगों से समय समय पर इच्छित लाभ प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इनके द्वारा आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

आपका बड़े भाई से पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे आपको इच्छित सुख सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा वे आपका पुत्रवत् पालन करेंगे। जीवन में आपको वे आर्थिक रूप से निर्भर बनाएंगे तथा समय समय पर आपका मार्ग निर्देशन भी करते रहेंगे। आप भी उनका पितृवत मान सम्मान करेंगे। आपको विद्वान मित्रों की हमेशा इच्छा रहेगी जो जीवन दर्शन के विषय में आपका मार्ग दर्शन कर सकें अतः विद्वान एवं शिक्षित लोग ही अधिक रूप से आपके मित्र होंगे। साथ ही अवस्था के साथ साथ आप युवावस्था के लोगों को उपदेश भी प्रदान करेंगे। आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र एवं समाज में प्रसिद्ध तथा आदरणीय रहेंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको अपना मित्र समझेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा तथा समस्त सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अपनी योग्यता एवं परिश्रम के फलस्वरूप किसी भी माध्यम के द्वारा इच्छित उन्नति सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी पुरूष होंगे तथा आर्थिक एवं अन्य क्षेत्र की उन्नति के लिए खतरे उठाने में भी नहीं झिझकेंगे जिससे आपको अन्ततः लाभ ही होगा। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अच्छी ही रहेगी तथा आर्थिक सुदृढ़ता के कारण आप उन्मुक्त भाव से जीवन में आनन्द, सुख एवं शान्ति प्राप्त करने के लिए व्ययशील रहेंगे।

आप पारिवारिक जनों के प्रति पूर्ण समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधाओं रहन सहन, खान पान तथा अन्यत्र उच्च स्तर बनाए रखने के लिए प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे साथ ही अपने सामाजिक स्तर की वृद्धि करने के लिए भी आपको काफी व्यय करना पड़ेगा। चूंकि आपके पास धन एवं सम्मान की कमी नहीं रहेंगी अतः आप उपरोक्त क्षेत्र में आनन्द प्राप्त करेंगे। साथ ही अपरिचित लोगों तथा सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं अवसरनुसार उन्हें उचित आर्थिक सहयोग देंगे जिससे लोग आपकी दानशीलता से प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपनी संगठन शक्ति से जीवन में इच्छित सफलता अर्जित करेंगे।

आप व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबंधित दूर समीप की यात्राएं करेंगे। इसी संदर्भ में आप विदेश की यात्रा भी करेंगे। यद्यपि इसमें व्यय अधिक परन्तु भविष्य में आपको उचित लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

नक्षत्रफल

आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका गण देव, योनि मार्जार, वर्ग मार्जार, नाड़ी आद्य तथा शूद्र वर्ण होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "के" अक्षर से होगा। यथा केशव।

आप अत्यन्त ही शान्त स्वभाव के होंगे तथा संकट की स्थिति में भी घबराहट या उतावलेपन का परिचय नहीं देंगे अपितु शान्तिपूर्वक उनका सामना करेंगे। आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा तथा आप समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों के उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे। शारीरिक दृष्टि से आप सुन्दर, गौरवर्ण तथा भाग्यशाली पुरूष होंगे। समाज में आप अति लोकप्रिय रहेंगे तथा समाज के सभी वर्गो के कल्याण के लिए आप सर्वथा प्रयत्नशील रहेंगे। जीवन में पुत्र तथा मित्रों से आप हमेशा युक्त रहेंगे।

शान्तः सुखी च सम्भोगी सुभगो जनबल्लभः।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ।।
मानसागरी

अर्थात् पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न जातक, शान्त सुखी, भोगी, सुन्दर, लोकप्रिय तथा पुत्र एवं मित्रों से युक्त होता है।

आपका स्वभाव सुशील एवं आचरण श्रेष्ठ होगा। यदा कदा आपकी बुद्धि दुष्टता की ओर भी अग्रसर होगी तथा आपकी प्रवृति दुष्कार्य करने को प्रवृत होगी। आप हमेशा अपने को अतृप्त सा अनुभव करेंगे तथा इसके कारण आपको व्याकुलता का भी आभास होगा। परन्तु आपकी प्रवृति सन्तोषी होगी तथा वस्तु की अल्प प्राप्ति में ही आप सन्तुष्ट हो जाएंगे।

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च।
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक क्लेश की स्थिति में भी सहनशील, सुखी, सुशील, दुष्टबुद्धिवाला, तृषाकुल तथा थोड़े से ही सन्तुष्ट होने वाला होता है।

आपकी आत्मा ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित रहेंगी तथा गूढ़ से गूढ़ विषयों का आपको ज्ञान रहेगा। आप अपने धनैश्वर्य तथा बल से समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। लेखन कार्य में आपकी नैसर्गिक इच्छा रहेगी तथा कविता सृजन में आप सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके मन में कामेच्छा की भी बहुलता रहेगी।

गूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलविख्यातः कविः कामुकः।
जातकपारिजातः

अर्थात पुनर्वसु में उत्पन्न जातक गूढात्मा, धन तथा बल से विख्यात, कवि तथा कामुक प्रकृति का होता है।

आपके मित्रों की संख्या अधिक मात्रा में रहेगी तथा शास्त्राध्ययन में भी आपकी रूचि रहेगी। आप यत्नपूर्वक शास्त्र ज्ञान प्राप्ति के लिए अभ्यासरत रहेंगे। आप रत्न तथा स्वर्णादि से निर्मित आभूषणों से भी सुशोभित रहेंगे। आपकी प्रवृति भी दानशील होगी साथ ही आप बहुत से द्रव्यों तथा भूमि आदि से जीवन में युक्त रहेंगे।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः।
दाता धरित्री वसुभि समेतः पुनर्वसु यस्य भवेत्प्रसूतौ।
जातकाभरणम

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक अधिक मित्रों वाला, शास्त्रों का अभ्यास करने वाला, रत्नस्वर्णादि आभूषणों से परिपूर्ण, दान, द्रव्य एवं भूमि से युक्त होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

आपका जन्म मिथुन राशि में हुआ हैं। अतः आपके नेत्र श्यामवर्ण के होंगे तथा सिर के बाल घुंघराले होंगे एवं नासिका भी उन्नत होगी। आप विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का अध्ययन करेंगे तथा उनका विषद रूप से ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप दूत या सन्देश वाहक के कार्य को करने में अत्यन्त निपुण होंगे। आपकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी तथा इसी तीक्ष्णता के कारण आप सम्मुख खड़े व्यक्ति के मन की बात को शीघ्र ही जान लेने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपका व्यवहार अन्य लोगों के साथ में अत्यन्त ही विनम्र तथा विनयशील रहेगा। फलतः समाज में आप प्रशंसा के पात्र होंगे। आपकी वाणी अति श्रेष्ठ एवं मधुर होगी जो श्रोताओं को प्रसन्नता प्रदान करेगी। आप हंसने और हंसाने के कार्य में दक्ष होंगे। संगीत तथा नृत्य में भी आपकी अभिरूचि रहेगी तथा इनके विषय में आपको पर्याप्त ज्ञान रहेगा।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुञ्चिद् मूर्धजः पटुमति हास्योद्गिगत द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

आपकी हथेली मत्स्य चिन्ह से सुशोभित हो सकती हैं। आपकी नसें शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होंगी तथा लम्बाई भी आपकी पर्याप्त होगी। आपका रूप अत्यन्त सुन्दर तथा दर्शनीय होगा। काव्य लेखन की प्रतिभा नैसर्गिक रूप से आप में विद्यमान रहेगी। अतः साहित्य के प्रति आपके मन में पूर्ण अभिरूचि रहेगी तथा काव्य सृजन में सफलता प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवन में समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों का उपभोग करने वाले होंगे। लेकिन आप यदा कदा विषय वासनाओं के सुख में भी लिप्त रहेंगे। आप सर्वदा सौभाग्यशाली पुरूष सिद्ध होंगे परन्तु हमेशा स्त्री के वश में रहेंगे तथा उससे पराजित रहेंगे।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप दीर्घकाल तक जीवित रहेंगे तथा सम्पूर्ण जीवन हास्य प्रिय रहेंगे। आप भ्रमण या यात्रा करने भी इच्छुक रहेंगे घर के अन्दर रहकर भी आनन्द की अनुभूति करेंगे।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

आपका सामाजिक क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत रहेगा तथा समाज के सभी वर्गो में आप खूब लोकप्रिय रहेंगे। स्त्रीवर्ग आपसे विशेष रूप से आकर्षित रहेगा तथा आप इनके मध्य प्रिय एवं आदरणीय समझे जाएंगे। आप अपनी सज्जनता तथा योग्यता से समाज में सम्मान तथा गौरव प्राप्त करेंगे।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप श्लिष्टयुक्त स्पष्ट वाक्यों का अपनी भाषा तथा लेखन में प्रयोग करेंगे जिसे लोग आसानी से समझने में सफल रहेंगे। आप अपने बन्धु बान्धवों तथा अन्य सामाजिक लोगों की सेवा तथा सहायता करने में सर्वथा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रकृति पित्तकफ युक्त होंगी तथा आचरण हमेशा श्रेष्ठ रहेगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपके नेत्रों में हमेशा चंचलता की बहुलता रहेगी। नृत्य एवं संगीत के आप अनन्य

प्रेमी होंगे तथा अपने धनैश्वर्य, दयालुता तथा सद्व्यवहार के कारण दूर दूर यश की प्राप्ति करेंगे। आप दीर्घाकृति से युक्त होंगे तथा भाषण देने की कला में प्रवीण होंगे आप पक्के निश्चय की प्रवृति रखेंगे। जिस बात को एक बार मन में सोच लेंगे उसे पूरा करके ही छोड़ेगे चाहे उसमें कितना ही परिश्रम क्यों न करना पड़े। आप न्यायवादी भी होंगे। शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षा के कारण आपको खांसी या दमे के रोग से भी पीड़ित होना पड़ सकता हैं।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप देवगण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप श्रेष्ठ मधुर एवं प्रिय वाणी बोलने वाले होंगे जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी बुद्धि भी सीधी एवं सरल होगी। अपने विचारों को सादगी से प्रकट करना तथा अन्य के विचारों को भी सादगी से ग्रहण करना आपकी विशेषता होगी। आपको सात्विक भोजन करना रूचिकर लगेगा। गुणों के विषय में आप विषद ज्ञान रखेंगे तथा विद्वानों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से युक्त होंगे। धन, वैभव तथा ऐश्वर्य की समृद्धि से आप हमेशा समृद्ध रहेंगे।

आपका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ रहेगा। आपकी स्वभाव से दानी प्रवृति होगी तथा यथाशक्ति आप जरूरतमन्दों को दान देते रहेंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप दिखावे या ढोंग से हमेशा दूर रहेंगे तथा हमेशा सादगी युक्त जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही आप एक उच्च कोटि के विद्वान भी होंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही वीरता के गुणों से युक्त रहेंगे तथा अपने कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। मीठा स्वाद आपको अत्यन्त रूचिकर लगेगा। आप मिष्ठान्न तथा मिष्ठपान प्रिय होंगे। डर या भय का आप में अभाव रहेगा तथा स्वभाव से ही निर्भीक होंगे एवं निर्भीकता पूर्वक ही जीवन पथ पर चलेंगे। लेकिन यदा कदा आपके स्वभाव में दुष्टता का समावेश होगा। अतः कभी कभी आपका मन दुष्कर्मो की तरफ भी प्रेरित होगा।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।

निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान

करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघ योग, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फल दायक हैं। अतः आपको चाहिए कि आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों, स्वाती नक्षत्र, परिघ योग में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इस समय पर शारीरिक सुरक्षा तथा स्वस्थता पर भी पूर्ण ध्यान दें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे सम्य में आपको नियमित रूप से प्रातः एवं सायं गणेश जी के शुभ दर्शन करने चाहिए। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र घी, गेहूं आदि पदार्थों को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए तथा बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000जप करने चाहिए इससे अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं थीं बुधाय नमः।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य दसवें खाने में बैठा है। इसकी वजह से आप किसी संस्था के प्रधान, जज, सरपंच, नेता भी हो सकते हैं। आप किसी से धोखा-फरेब नहीं करेंगे। सरकारी विभाग, नौकरी-व्यापार में धन-लाभ, मान-सम्मान मिलेगा। नौकर-चाकरों का अच्छा सुख मिलेगा। राज्य पक्ष से लाभान्वित होंगे। आप बहुत वहम करेंगे। संतान पक्ष कमजोर रहेगा। 19 वर्ष की उम्र के लगभग पिता से दूर होना पड़ सकता है। आपको इज्जत, सेहत और दौलत का सुख मिलेगा। परिवार में कोई व्यक्ति उच्चपद पर संस्था प्रधान या सरकार द्वारा सम्मानित होगा।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में हुआ, नंगा सिर रखने की आदत रही, अपना भेद दूसरों को बताया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। आप मशीनरी या लकड़ी से संबंधित नौकरी-व्यापार करेंगे तो हानि होगी। खानदानी विरासत और पिता का सुख कम मिलेगा। लकड़ी, लोहा, भैंसों से संबंधित व्यापार या काली चीजों के व्यापार से नुकसान होगा। आपके घुटने में दर्द हो सकता है। आपकी आंखों की नजर और उम्र पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। ससुराल में रहना ससुराल पक्ष वालों के साथ कोयले, बिजली का धंधा करने से हानि होगी। सत्ता से परेशानियां भी रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपना भेद किसी को भी न देवें।
2. सूर्य की रोशनी नंगे सिर पर न पड़े।

उपाय :

1. सिर पर सफेद या शरबती पगड़ी या टोपी पहनें।
2. बुजुर्गी मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के पांचवें खाने में चंद्रमा है। इसकी वजह से हीरे-जवाहरात से संबंधित नौकरी-व्यापार लाभ देगा। कन्या सन्तान अधिक होने का योग है। आपको सुख के सभी साधन मिलेंगे। वन विभाग के अधिकारी हो सकते हैं। आप 9 वर्ष जीवन में यात्रा करेंगे। विदेश यात्रा से लाभ संभावित है। आपकी संतान की उम्दा परवरिश होगी। धार्मिक विचार रखने से आपके धन-दौलत की बरकत होगी। आप किसी के भी सामने नहीं झुकेंगे। आप दूसरों का इन्साफ करने में आगे रहेंगे। आप रहम दिल इंसान होंगे और किसी से बेइंसाफी नहीं करेंगे। लड़ाई-झगड़े में आप जिसका भी साथ देंगे वह जरूर जीतेगा। सरकारी काम शुभ फल देने

वाला होगा। आप सामाजिक कार्य करें तो आपकी औलाद के लिए अच्छा होगा। यात्रा का फल शुभ होगा। आपकी कभी भी बर्बादी नहीं होगी। आपको अपने जीवन की सभी मशहूर बातें हमेशा याद रखनी चाहिए।

यदि आपने धर्म विरोधी कार्य किये, गुप्त पाप किया, चकोर पक्षी का शिकार किया, अपना भेद किसी को बताया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी विद्या में विघ्न, संतान द्वारा विरोध होगा। आपका अपना भेदी तबाही कर सकता है। लालच और खुदगर्जी से नुकसान होगा। आपकी आदत हरेक को गुमराह करने वाली होगी। आपको नौकरी-व्यापार से अच्छा लाभ नहीं हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आप अपनी मर्जी से कोई कार्य न करें, किसी की सलाह जरुर लेवें।
2. किसी भी पाप कार्य में दखल न देवें।

उपाय :

1. धार्मिक कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लेवें।
2. कभी-कभी पहाड़ की यात्रा करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा। 45 वर्ष की आयु तक संतान सुख के लिए समय मध्यम रहेगा। आपकी कमांडिंग बरकरार होगी। अगर आप सरकारी सेवा में रत होते हैं तो सेना या पुलिस में उच्च पद मिलेगा। आप एक जाने-माने समाज सेवक होंगे। आप अवश्य ही धनवान होंगे। आप अच्छे या बुरे तरीके से भी धन कमा कर बड़ी जायदाद के मालिक बनेंगे। 32 वर्ष से 64 वर्ष आयु तक खूब धन का आगमन होगा। आप राज सुख से युक्त रह कर शाही जीवन बिताएंगे। आप पोते-पड़पोते का सुख भोगेंगे। आपके जन्म के बाद आपके पिता की माली हालत अच्छी होने की उम्मीद है। आप अपनी जायदाद बनाएंगे और आप कई मकान के मालिक होंगे। अपनी मेहनत से दौलत पैदा करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। गृहस्थ जीवन आराम से गुजरेगा। आप में पूरी दिलेरी रहेगी और आपका हौसला बुलंद रहेगा। आपके यहां कई मांगलिक कार्य होंगे। मिला-जुला कर आपका जीवन बहुत सुखी रहेगा।

यदि आपने पुलिस सेना विभाग से झगड़ा किया, समाज विरोधी कार्य किये, परिवार के लोगों के साथ झगड़ा किया, नमक या नमकीन चीजों का अधिक प्रयोग किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से 22वां वर्ष खुद के लिए कष्टकारक होगा। आप खानदान को तोड़ने वाले होंगे। आप सोना बेचेंगे तो इसका बुरा असर औलाद पर पड़ेगा। आपकी बदनामी हो सकती है। चोरी का

लांछन भी लग सकता हैं कभी जेल भी जाना पड़े, ऐसी आशंका है या आपको जेल विभाग में नौकरी करनी पड़ सकती है। ननिहाल में रहना आपको मंदा फल देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सोना न बेचें।
2. दूध उबल कर गैस चूल्हे/चूल्हे या अंगीठी पर न गिरे, न जले।

उपाय :
1. हिरण की पालना करें।
2. काने-काने, गंजे व्यक्ति की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में ग्यारहवें खाने में बुध पड़ा है। इसकी वजह से आपकी गुणी और संपन्न संतान होगी। आपकी संतान का विवाह उच्च कुल में होगा। आपके जीवन के 1, 23, 33, 36, 44, 57, 73 84 एवं 94वां वर्ष शुभ और लाभदायक होगा। आप स्वयं हुनरमंद तथा शर्मसार होंगे। आपकी पूरी तरह तकदीर बनने की उम्मीद रहेगी। 34 वर्ष के बाद आप अच्छी प्रकार से जीवन बिताएंगे। आपको दोस्ती करने से लाभ नहीं होगा। आपको विदेश के व्यवसाय से भी लाभ हो सकता है। बुद्धि के कामों में आपको सफलता मिल सकती है। सरकारी पक्ष से लगाव, लाभ और सम्मान प्राप्त हो सकता है। आपको कसीदाकारी, चित्रकला, कलाकारी, अध्यापन या कानूनी काम से लाभ हो सकता है। विशेष रूप से आप अपनी बुद्धि का प्रयोग कर लाभ और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आपने बुरे या बदकारी के काम किये, चौड़े पत्तों का वृक्ष आपके घर में हुआ, साधू-फकीर से धागे ताबीज आदि लिया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से जीवन के 39वें वर्ष में शारीरिक कष्ट की आशंका है। आपकी बहन अमीर घर में ब्याही जाएगी परंतु पति की वजह से दुःखी रहेगी। आपके बच्चों पर भी कुछ बुरा असर हो सकता है। आपके पांव में, कान में, जिस्म के जोड़ों पर बीमारी होने की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चौड़े पत्तों का वृक्ष घर में न लगाएं।
2. पीतल खाली बर्तन बंद न रखें।

उपाय :
1. कंठी वाला तोता पालें।

2. तांबे का पैसा या चौरस टुकड़ा सफेद धागे में डाल कर गले में पहनें।

गुरु

आपकी कुंडली के पांचवें खाने में वृहस्पति पड़ा है। इसकी वजह से आपकी संतान की वृद्धि होगी। आपकी आयु वृद्धि के साथ-साथ उन्नति होगी। 16 वर्ष की आयु में भाग्योदय होने की संभावना है। संतान पक्ष से सुखी रहेंगे। आपको साठ वर्ष की उम्र तक श्रेष्ठ फल मिलेगा। संतान पैदा होने के बाद पिता-दादा से सहायता नहीं मिलेगी। भाग्य का सितारा बुलंद होगा। आप इन्सानी सितारों के मालिक होंगे। आप इज्जत और आबरू के मालिक होंगे और ब्रह्मज्ञानी होंगे। आपके, वीरवार को जन्मे लड़के के जन्मदिन से आपका भाग्य शुभफल देने लग जाएगा उस समय आप जीवन में उन्नति करना आरंभ कर देंगे। आप व्यापार या अपनी कलम की ताकत से धन कमाएंगे। दूसरों की सहायता भी करेंगे। आपकी औलाद और धन में बहुत बरकत होगी। आप खुशहाल रहेंगे। आप हुक्मरान या सामाजिक दायरे में सरदार माने जाएंगे।

यदि आप धर्म के विरुद्ध विचार रखेंगे, लंगर या धर्म के नाम पर दान का माल खाना शुरु किया, साधू-महात्मा से झगड़ा या गाली-गलौज किया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आप क्रोध अधिक करेंगे। पत्नी के अतिरिक्त दूसरी औरत से संबंध रखना हानिकारक होगा। बर्बादी का कारण बनेगा। अफसरों से दुश्मनी से मुफ्त का माल खाने से आपका नुकसान हो ऐसी शंका है। आपका मांसाहारी होना बहुत हानिकारक होगा। आपका आलसी होना बहुत खराब है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. नाव से संबंध न रखें।
2. नास्तिक न बनें।

उपाय :
1. साधू-महात्मा की सेवा करें।
2. धर्मशाला या धर्म मंदिर की सफाई करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपकी ज्योतिष, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी। आप अपने परिवार का पोषण करेंगे। राज्य पक्ष से अच्छा लाभ मिलेगा। आप हर प्रकार से सुखी रहेंगे। स्त्री के माध्यम से जो भी कार्य संपन्न होते हैं वह आपके लिए अच्छा होगा। आपके काम के सुनिश्चित परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आड़े समय में मदद्गार होगी। आपके जीवन में तरक्की की बागडोर आपकी पत्नी के हाथ में होगी। आप औरत की इज्जत करेंगे इसका अच्छा फल मिलेगा। विवाह के बाद काफी धन मिलेगा। स्त्री का पूरा सुख मिलेगा। आप सदैव ही दूसरों की सेवा हेतु तत्पर रहेंगे। आप जवानी में अपना

समय ऐशो आराम से बिताएंगे। आपके मन में वहम समाया हुआ रहेगा। आप चित्रकला प्रिय अथवा गायन प्रिय होंगे। आप धर्माचरण करके शुभ प्रभाव को अपनाएंगे। आपको खेती-बाड़ी का लाभ भी मिलेगा। आप बेरहम होंगे फिर भी आपका मान-सम्मान बरकरार रहेगा। आपके पास बहुत जायदाद होगी।

यदि आपने पत्नी से अच्छे संबंध न रखे या पत्नी की सेहत खराब के समय देखभाल न की, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप बूढ़े होने पर दूसरे लोगों को अपने जीवन में भुगती बातों को सुना कर समय बर्बाद करेंगे। पत्नी बीमार रहा करेगी तो आपका भाग्य अच्छा नहीं रहेगा। कन्या संतान का आपके जीवन पर बुरा प्रभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. पत्नी के स्वास्थ्य का विघेष ध्यान रखें।

उपाय :

1. गाय दान करें।
2. देसी घी का दीपक जलावें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आपका भाग्योदय 48वें वर्ष में होगा। आप अपने धर्म पर अडिग रहेंगे। जीवन के 57वें, 72वें और 89वें आयु में अच्छा फल मिलेगा। आपको पूरा आराम मिलेगा और उत्तम फल प्राप्त होंगे। लोहा, कोयला, रबड़ आदि काली चीजों के व्यवसाय से लाभ प्राप्त करेंगे। दस्तकारी में भी निपुण होंगे। आप अपने धन की सुरक्षा करेंगे। आर्थिक दृष्टि से आप प्रगति करेंगे। संतान सुख अवश्य मिलेगा। यदि आप नेकी करेंगे और धर्म का सहारा लेंगे तो मिट्टी को भी छुएंगे तो सोना हो जाएगी। न्यायप्रिय, राज्याधिकारी, राजदरबार और धन-दौलत पर अच्छा असर पड़ेगा। भलाई करने से जिंदगी में सभी प्रकार के आराम मिलेंगे। बुजुर्गी संपत्ति का लाभ होगा, ससुराल वाले अमीर होंगे।

यदि आपने 55 वर्ष की आयु से पहले मकान बनाया, आपने परिवार के लोगों को हानि पहुंचाई, भाई से दूर रहे, धोखे-ठगी से धन कमाना शुरु किया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपकी शिक्षा अधूरी रह सकती है। आप गुस्सैल मिजाज के होंगे। आपके आमदनी और खर्च बराबर रहेंगे। शराब-मांस का सेवन करने से क्रोध की मात्रा बढ़ जाएगी और आप किसी की हत्या भी कर सकते हैं। आप फरेब करके पैसा बनाएंगे। बेईमानी से कमाया हुआ धन बुरा फल देगा। धोखे-ठगी से कमाया धन कैद और कफन ही देगा। विद्या में रुकावट, आपका भाई-बंधु और

मित्रों से विरोध होगा, खानदान के लिए अशुभ होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. किराये के मकान में रिहाईश न करें।
2. ठगी-धोखे से धन न कमाएं।

उपाय :
1. घर में शुद्ध चांदी की ईंट रखें।
2. नये काम पर जाते समय या नया काम शुरु करते समय पानी या दूध का भरा घड़ा कुंभ के तौर पर रखें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के बारहवें खाने में राहु पड़ा है। जिसकी वजह से आपके लिए तमाम सुख-सुविधाओं का योग रहेगा। आप योगी की तरह आचरण करेंगे। आप उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने बलबूते पर खड़े होंगे। व्यर्थ की चिंताओं से मुक्त रहेंगे। आप धनवान अपने भाई-बहन से स्नेह रखने वाले, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले और सुख के साथ जीवन को गुजारेंगे। आप कभी भी अर्थिक रूप से परेशान नहीं होंगे। आपकी कन्या जन्म के बाद लक्ष्मी की बड़ी कृपा होगी और आपको सभी सुख प्राप्त होंगे। विवाह-उत्सव आदि कामों में खूब खर्च करेंगे। अथाह धन की प्राप्ति होगी। आप अपनी पुत्री व बहन पर अधिक खर्च करेंगे। आप पर ऋण का बोझ पड़ जाये तो वह शीघ्र उतर जाएगा। शुभ समय पर कोई काम करके कामयाबी हासिल करेंगे। ससुराल पक्ष धनवान होगा, शत्रुओं से बचाव होगा।

यदि आपके लड़कियां अधिक हुई, मकान रोशनी वाला हुआ, बिना सोचे समझे काम किया, शेख चिल्ली की तरह बातें ही बातें बनाने की आदत हुई तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारणवश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप बुरे व्यसनों की आदतों के कारण या समाज में बदनाम लोगों से दोस्ती के कारण दुःखी होंगे। आपको पसलियों या आंतों के रोग की आशंका बनती है। बवासीर रोग की आशंका है। दिमागी परेशानी के कारण रात्रि शयन में बाधा की आशंका है। आप शेख चिल्ली की तरह सपने देखेंगे और अपना समय बर्बाद करेंगे। मानसिक पीड़ा से दुःखी रहेंगे। फौजदारी-दीवानी मुकद्दमों में उलझ सकते हैं। गबन करने पर इल्जाम लगेगा। बिना सोच-समझे किये कामों में हानि हो ऐसी शंका है। आपके परिवार का बोझ आप पर होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. रसोई से बाहर खाना न खावें।

2. घर के आंगन में धुआं न करें।

उपाय :

1. घर के आखिर में अंधेरी कोठरी बनावें।
2. चांदी का ठोस हाथी घर में रखें या चांदी का चौरस टुकड़ा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में छठे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप अभिमान रहित होंगे। आप एक अच्छे सलाहकार होंगे। आपकी संतान आपके कामों में हाथ बंटायेगी। आप धनवान, शत्रुओं को परास्त करने वाले ननिहाल के लिए शुभ रहेंगे। आपकी संतान आपकी सहयोगी होगी। आपका पुत्र आपकी मुसीबतों का जाल कटेगा और आपकी सहायता करेगा। आपको अपने जीवन में आराम मिलेगा। आप देश या परदेश में कहीं भी रह कर सुखमय जीवन बिताएंगे।

यदि आपने ससुराल से सोने की अंगूठी या 2 चारपाई या पलंग विवाह समय न लिये, ससुराल से मिली अंगूठी गुम हो जाये या बिक जाये तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से माता और ननिहाल में बुरा असर पड़ेगा। आपको कुत्ते से डर लगेगा। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। आपका फिजूल खर्च भी हो, ऐसी संभावना है। आपका बुढ़ापा कष्टमय रहेगा। कभी-कभी आपको बेकार की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। बिना किसी कारण के शत्रु पैदा हो सकते हैं। आपकी वृद्धावस्था सुखी नहीं रहेगी। आपका पुत्र दूसरों के लिए बदनसीब होता है। लड़कियां अधिक हो सकती हैं। पेट-चमड़ी-पांव में रोग होगा। आवारा घूमना या धन का अपव्यय अधिक होगा, बिना कारण शत्रु पैदा होते रहेंगे। मामा और माता को कष्ट की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. ससुराल से मिली सोने की अंगूठी गुम न होने देवें और न बेचें।
2. परिवार की लड़कियों से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. शुद्ध सोने की अंगूठी बायें हाथ में पहनें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे व मीनस्थ राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि द्वितीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि पंचम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि छठे सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि पंचम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकती है, जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप अपने साझेदार से संतुष्ट नहीं रहेंगे और आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए अच्छा रहेगा।

14 मई के बाद आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। शेयर बाजार से अच्छा लाभ होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे। जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप बचत नहीं कर पाएंगे। बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

14 मई के बाद धनागम में निरन्तरता बढ़ जाएगी जिससे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य में धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में कुछ विशम परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं जिसके फलस्वरूप आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य में आपकी अहम भुमिका होगी। सामाजिक रूप से यह वर्ष सामान्यतः उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे, परन्तु 14 मई से गुरुग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा।

यह समय गर्भधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा। नैसर्गिक रूप से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। यदि वे विवाह के योग्य है तो उसका विवाह सस्कार भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीय स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव भी आपके शरीर पर पड़ेगा। 29 मार्च के बाद शनि ग्रह का गोचर भी द्वितीय स्थान में हो रहा है। उस समय के अंतराल में आप अचानक रोग ग्रस्त हो सकते हैं।

गुरुग्रह के गोचर के बाद आपका समय काफी अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए इस वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः संघर्षात्मक परिस्थितियों में आपको सफलता मिलेगी।

अध्ययन के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। विद्यार्थियों के लिए 14 मई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। नौकरी के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि से विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे है। आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। 14 मई के बाद लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा, मन्त्र पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 14 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति

श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं और नित्य प्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को राटी में गुड़ डालकर खिलाएं।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभ फलों की अधिक मात्रा में प्राप्ति होगी। स्त्री वर्ग से आप लाभार्जन करेंगे तथा सौभाग्य से युक्त रहेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से धन लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा हृदय से भी पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी उन्नति करेंगे। इस समय मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा तथा वांछित पदार्थों का आप उपभोग करके प्रसन्न रहेंगे। संतति पक्ष से भी आप शुभ फल ही प्राप्त करेंगे एवं सम्बन्धियों में आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे। इस प्रकार यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदा कदा अशुभ फल भी होंगे।जिसके प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं एवं किसी कठोर कार्य को करने से सम्मान में अल्पता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही अग्नि के द्वारा धन हानि की भी संभावना रहेगी।अतः बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभाशुभ फल प्राप्त होंगे। इसके प्रभाव से आपका इस समय व्यय अधिक होगा एवं दुष्ट मनुष्यों की आपको संगति प्राप्त होगी। सामान्य रूप से आप शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही अत्यंत परिश्रम एवं पराक्रम से भी अल्प मात्रा में ही कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में उपेक्षा की भावना उत्पन्न होगी तथा अन्य प्रकार से धन हानि भी हो सकती है। साथ ही मित्रों एवं संबन्धियों से सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। इस समय आपकी नौकरी या व्यापार में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा शत्रुओं से भय एवं चिन्ता नित्य बनी रहेगी। साथ ही जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी तथा यदाकदा आप मन में बैचेनी भी अनुभव करेंगे।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे ।अतः आप पुत्र एवं स्त्री का सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्र या द्रव्यों की उपलब्धि भी हो सकती है।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे। इस समय आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा पराक्रम में भी वृद्धि होगी जिससे शत्रु वर्ग आपसे भयभीत रहेगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आपकी आय होती रहेगी जिससे आर्थिक रूप से पूर्ण रूपेण

सुदृढ़ रहेंगे। इसके शुभ प्रभाव से आप समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा भाग्य में भी उन्नति होगी एवं कोई विलम्ब हुआ शुभ एवं महत्पूर्ण कार्य भी सम्पन्न हो सकेगा। इसके, अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त होगी एवं सम्पूर्ण वातावरण प्रसन्नता से युक्त रहेगा।

साथ ही इस मास में न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इससे आप गर्मी से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रूधिर सम्बधी विकार भी हो सकता है। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए। साथ ही आग के द्वारा भी किसी प्रकार की हानि की सम्भावना हो सकती है। अतः सतर्क रहें।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने ही उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा समाज से आपको पूर्ण यश तथा मान प्राप्त होगा।साथ ही अपने समस्त बन्धुओं तथा मित्रों से आप पूर्ण प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। इस समय उच्चाधिकरी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा तथा मिष्ठान्न का अधिक मात्रा में उपभोग करने में रूचिशील रहेंगे।आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं बल की उसमें वृद्धि होगी। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास सुखोपभोग में व्यतीत करेंगे। साथ ही आपके शत्रु भी आपसे पराजित होगे एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापार मेंभी आप लाभ अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री वर्ग से पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे एवं बुद्धि में निर्मलता का भी समावेश होगा। इसके अतिरिक्त आप प्रचुर मात्रा में धनलाभ अर्जित करेंगे तथा सुखपूर्वक धर्मानुपालन करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

मई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को अर्जित करने में सफल होंगे।साथ ही समाज में आपका यश भी व्याप्त होगा।धर्म के प्रति आपके मन में आस्था होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति श्रद्धा रखेंगे तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय परोपकार की भावना भी आपके मन में उत्पन्न होगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग के आश्रय से आप पूर्ण यशार्जन करेंगे एवं आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। साथ ही भाइयों से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने मानसिक विचारों या संकल्पों को पूर्ण करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी आपको वांछित सहयोग प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी एवं सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

जून 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष के प्रबल होने से वे विभिन्न प्रकार से आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेगें। पारिवारिक जनों से भी इस समय अनावश्यक रूप से अनबन रहेगी जिससे पारिवारिक वातावरण अशान्त रहेगा। साथ ही मानसिक रूप से भी आप यदाकदा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास आपके कार्य में मंदी आ सकती है या आपका कोई कार्य छूट सकता है। आपके अन्य समाजिक जनों से विवाद भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान में न्यूनता आएगी तथा धनहानि की भी सम्भावना होगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में उपरोक्त अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे। इससे शरीर में स्वस्थता,मन में सन्तोष एवं बुद्धि की वृद्धि होगी जिससे यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा। साथ ही धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि रहेगी।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपका प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त रहेगी तथा सभी महत्पूर्ण कार्य बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। साथ ही आपको पुत्र सुख तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। इस समय आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग इसे मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही आप अनेक प्रकार के शुभ कार्यों को सम्पन्न करेंगे एवं शुभ समाचार भी प्राप्त होंगे। देवता तथा ब्राहमण के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा आप विधिपूर्वक इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनकूल लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपको समाज में मान प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी एवं मानसिक चिन्ताएं भी दूर होंगी।

साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा पदोन्नति भी मिल सकती है। इस समय आप देश विदेश की लाभदायक यात्रा भी कर सकते हैं।साथ ही अन्य प्रकार के सुखों को अर्जित करने में भी आप सफल रहंगे।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ तथा दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शत्रु भी उत्पन्न होंगे जिससे अनावश्यक चिन्ताएं तथा समस्याएं बढ़ेंगी। इस समय चोरों से भी सावधान रहना चाहिए तथा अपने उच्चाधिकारी वर्ग की भी उपेक्षा न करें अन्यथा आप दंडित हो सकते हैं। इस मास में आपको सांसारिक कार्यों में भी असफलता मिलेगी तथा धन भी अनावश्यक रूप से व्यय होगा। इसके साथ ही आप किसी गलत कार्य को करने के लिए भी प्रेरित होंगे तथा ऐसे कार्यों को करके आप बाद में पश्चाताप करेंगे। अपने सम्बन्धियों से भी आपकी अनबन हो सकती है तथा मान हानि का भी योग बनता है एवं आशाओं में भी असफलता प्राप्त होगी।

परन्तु उपरोक्त अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में अल्प मात्रा में शुभ फल भी

प्राप्त करेंगे। इससे आप स्त्री से सुखी , बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि तथा अन्य प्रकार के सुख प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा तथा किसी धार्मिक कार्य को भी सम्पन्न करेंगे।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से आप कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु की तरफ से भी चिन्ता बनी रहेगी। आप में इस समय उत्साह की न्यूनता भी परिलक्षित होगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। आप शरीर से भी अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे तथा मन में लालच के भाव की भी प्रधानता होगी। साथ ही आप अपने शरीर का पूर्ण ध्यान नहीं रखेंगे। अपने बन्धुजनों से आपके सम्बन्धों में तनाव भी उत्पन्न होगा एवं मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिससे मानसिक तनाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य जनों से भी संघर्ष होने का भय बना रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी समय समय पर घटित होंगे।अतः आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं बुद्धिमत्ता से अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

इस समय आपको शत्रुओं से भय एवं चिन्ता बनी रहेगी साथ ही घर में चोरी होने की भी सम्भावना रहेगी। इस समय आपका अनावश्यक रूप से व्यय होगा एवं धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में न्यूनता आएगी। शारीरिक रूप से भी आप विभिन्न प्रकार से कष्टानुभूति करेंगे परिणामतः आपके बल में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप घर से दूर किसी यात्रा को सम्पन्न कर सकते हैं। सांसारिक कार्यो में भी इस समय आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी के कारण बुखार आदि से भी कष्टानुभूति करेंगे। इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेगा। आपके घर में इस समय कोई धार्मिक उत्सव या कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। सन्तति से आप सन्तुष्ट रहेंगे एवं उनसे आपको सुख की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं अवसरानुसार आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे।समाज में यशार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में भी उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में भी इस समय वृद्धि होगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग

बनेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप मान सम्मान अर्जित करेंगे एवं मित्रों से मधुर संबन्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे।

साथ ही आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख तथा सन्तुष्टि भी प्राप्त करेंगे। इस मास में आप नवीन वस्त्रों तथा अन्य द्रव्यों को भी अर्जित करेंगे।अतः इससे आपको मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त होगी।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी आपसे पूर्णरूपेण प्रसन्न रहेंगे। अपने मित्रों एवं बन्धुजनों की आप पूर्ण सहायता करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके सभी शुभ कार्य भी सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं पूजा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही कई प्रकार से धन लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्थान या नवीन आवास आदि की भी प्राप्ति कर सकते हैं। इसके साथ ही सर्व प्रकार से शुभ फल होंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक आप इस मास को व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिस्त पिछले महीने की असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे।जिससे आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे प्रतिष्ठा में न्यूनता हो सकती है। इस समय अग्नि के द्वारा भी किंचित धन हानि होने की सम्भावना रहेगी।अतः सावधानी पूर्वक समय को व्यतीत करें।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वादश में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु पंचम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। अतः इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव सेआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहे हैं। अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तिओं को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। आपके उच्चाधिकारी आपको परेशान भी कर सकते हैं, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

02 जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे। जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी पर भी आपका धन खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए गर्भाधान काशुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। उस समय आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए यह समय ज्यादा खराब है। 31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट मित्र, छोटे भाईयों व जीवनसाथी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। समाज में आप का मान-सम्मान और बढ़ेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चो की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

02 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत अनुकूल नही रहेगा। लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। कभी कभी स्वास्थ्य अनुकूल रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होगा।

02 जून बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्वास्थ्य ज्यादाप्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरुजल तत्व राशि में होने के कारण कफ,खांसीया पेट से संबंधित रोग हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशमिल जाएगा। व्यावसायिक या तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को कुछ और दिन इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्राओं के भी योग बन रहे हैं।

02 जूनके बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा

करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप या तन्त्र साधना के प्रति आपकी विशेष रूचि बनी रहेगीऔरदान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।अन्न दान या पीली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्व व्यतीत करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आप पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करेंगे। आपका स्वास्थ्य इस मास अच्छा रहेगा तथा किसी भी प्रकार से शारीरिक या मानसिक अस्वस्थता नहीं रहेगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रूचि बढ़ेगी तथा मित्र वर्ग से सम्बन्धों में मधुरता रहेगी एवं उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही वांछित द्रव्य पदार्थों का उपभोग करके आप प्रसन्नता को प्राप्त करेंगेत संतति पक्ष से भी आपको शुभ फल ही प्राप्त होंगे तथा किसी प्रकार से चिन्ता नही रहेगी। मित्रों तथा सम्बन्धियों में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित होगी। फलतः आप आनंदपूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

इसके साथ ही आप पुत्र एवं स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा विद्याध्ययन में भी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या द्रव्य आदि की भी आपको उपलब्धि हो सकती है। इस प्रकार आप शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप दुष्ट मनुष्यों की संगति को प्राप्त करेंगे तथा व्यय भी काफी होगा जिससे आर्थिक एवं मानसिक रूप से आप कष्टानुभूति होगी। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे। काफी परिश्रम के बाद भी आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अल्प सफलता ही प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों को आप उचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। आपके मित्रों एवं सम्बन्धियों से तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे तथा नौकरी या व्यापारिक कार्यों में भी अनावश्यक रूप से बाधाएं या रूकावटें उत्पन्न होंगी। शत्रु पक्ष से भी आपके मन में भय तथा चिन्ता रहेगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। अतः समय समय पर मन से बेचैनी भी रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त आदि से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगे तथा रक्तविकार का भी योग बनता है अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हो सकें तथा शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुखदायक एवं आनंदवर्द्धक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं का नाश होगा तथा लाभमार्ग भी नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आर्थिक रूप से आप पूर्ण सुदृढ़ रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे।साथ ही समाजिक जनों से आप पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। यह मास आपकी भाग्योन्नति में भी सहायक रहेगा तथा कई ऐसे शुभ कार्य जो समय से सिद्ध न हो रहे हों इस समय सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्रों से संबन्धों में मधुरता बढ़ेगी तथा सांसारिक कार्यों में पूर्ण सफलता मिलेगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे तथा इनसे आप अनुकूल सहयोग होता रहेगा।

साथ ही आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा सुख पूर्वक मास को व्यतीत करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास को सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।साथ ही आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगे। समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धुओं एवं मित्र वर्ग से आप आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा सहायता भी अर्जित करेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न का भी अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस समय शत्रु वर्ग भी आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के द्वारा भी धनार्जन होगा। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही आप स्त्री का पूर्ण सुख भी प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी उचित सहयोग तथा सहायता मिलती रहेगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाजिक जनों से भी पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम रहेगा तथा इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपको यश तथा सम्मान की भी प्रप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूजा तथा सत्कार की भावना उत्पन्न होगी। आप अन्य जनों की भलाई के लिए भी तत्पर

रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसे सम्पन्न करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करके यश की प्रप्ति करेंगे। साथ ही आपकी मानप्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस मास भाइयों से आप पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही अन्य शुभ फलों के प्रभाव में भी नित्य वृद्धि होती रहेगी। इससे शरीर में आरोग्यता मन में संतुष्टि एवं बुद्धि के प्रभाव में वृद्धि होगी। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक होगा एवं मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न रहेंगे।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपके लिए मिलेजुले शुभाशुभ फल होंगे।अतः शारीरिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।साथ ही दुश्मनों से भी आपको भय तथा चिन्ता का वातावरण प्राप्त होगा फलतः मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे। इस समय पारिवारिक जनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से आपसी सम्बन्धों में तनाव का वातावरण उत्पन्न होगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में इस मास हानि या मंदी आ सकती है साथ ही कोई परिवर्तन भी हो सकता है या संबधित कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य लोगों से भी आपके संबन्धों में कटुता उत्पन्न होगी। अतः सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिकत शरीर में रोग तथा धन की हानि होने की भी सम्भावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे जिससे आप उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त करेंगे एवं कार्यों में किंचित उन्नति का भी आभास होगा। आप इस समय दूर समीप की यात्रा भी करेंगे एवं नवीन वस्त्रादि की भी प्राप्ति होगी। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का अभिवर्द्धन होगा तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही संतति पक्ष से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी हो सकता है। इस मास में आपका प्रभुत्व बढ़ेगा तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस माह में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों की भी प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों का आप पूर्ण सम्मान करेंगे तथा श्रद्धापूर्वक उनका पूजन भी केरेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल सिद्ध होंगे।साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी एवं समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी जिससे आप मन से सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य कई प्रकार से भी आवश्यक सुखों को प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी। इस प्रकार आप इस मास को पूर्ण सुख शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ एवं दुर्बलता की अनुभूति करेंगे साथ ही शत्रुपक्ष से भी अनावश्यक भय एवं चिन्ता का वातावरण रहेगा जिससे मन में अशान्ति उत्पन्न होगी। इस समय आपके घर में या अन्यत्र चोरी आदि भी हो सकती है। अतः आपको चोरों से सावधान रहना चाहिए। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का उलंघन न करें अन्यथा आप दंडित भी हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे साथ ही धन का भी अनावश्यक व्यय होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी इस समय सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। सम्बन्धियों एवं मित्रों से भी आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा समाज से उपेक्षा प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त आशाओं की पूर्ति में भी आप असफल ही रहेंगे।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे जिससे आप स्त्री से सुखी रहेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से अपने प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा एवं यत्नपूर्वक आप इसका अनुपालन करेंगे। इस प्रकार आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ एवं परेशानी उत्पन्न करने वाला होगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं की ओर से भी नित्य चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। आपके उत्साह में भी इस मास अल्पता रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा।जिससे आर्थिक परेशानी हो सकती है।साथ ही आप शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे तथा मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। स्वबन्धुजनों से भी आपके सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा एवं तनाव का भाव रहेगा जिससे मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे। अतः मानसिक तनाव से आप ग्रस्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से विवाद या संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है अतः सावधानी पूर्वक समय अनुसार चलने का प्रयत्न करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी तथा पित्तजनित दोषों से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त सम्बन्धी विकार से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा दुर्घटना से भी बचें। इस मास में अग्नि से भी किसी प्रकार की हानि हो सकती है।अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक रहेगा।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

समान्य रूप से इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार से चोरी आदि की घटना भी घटित हो सकती है।साथ ही आपका धन अधिक मात्रा में व्यय

होगा जिससे आप आर्थिक रूप से परेशानी का अनुभव करेंगे। धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में अल्पता आएगी तथा स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। इससे शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। साथ ही आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं। सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे एवं मुकद्दमे आदि के कार्य में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी पूर्वक ऐसे समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे।अतः स्त्री तथा पुत्र संतति से सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते हैं जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी एवं अन्य प्रकार से भी शान्ति की अनुभूति करेंगे।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्णरूपेण संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। साथ ही घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति प क्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही धार्मिक क्षेत्र में आपकी श्रद्धा में भी अभिवृद्धि होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप यथोचित सम्मान तथा पूजन करेंगे। समाज में इस समय आपके यश की वृद्धि होगी एवं भाग्योदय सम्बंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा एवं यात्रा से आप पूर्ण लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके सम्बन्धों में मधुरता रहेगी तथा सर्वत्र माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। जिसके कारण आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं या किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी एवं बाद में आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानीपूर्वक कार्यो को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे एवं अशुभ फल न्यून ही घटित होंगे। इसके प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे एवं वे सभी आपसे संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा उनसे सम्बन्ध भी मधुर रहेंगे।आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा उनकी सेवा एवं पूजन के कार्य को आप अवश्य सम्पन्न करेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी

रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करके मानसिक शान्ति एवं प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभ फलदायक ही सिद्ध होगा।

साथ ही यदा कदा अशुभ फलों के प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा को आंच आएगी एवं आप उसके लिए पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा धन हानि का योग भी बनता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वादश भाव में रहेंगे। वक्रीगुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लगातार प्रयास करने के बावजूद भी व्यापार में सफलता की उम्मीद कम ही रहेगी। शनि, राहु व गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रु आपके कार्यों में रूकावटें डाल जा सकते है। बड़े अधिकारी या वरिष्ठ लोगों का भी सहयोग नहीं मिलेगा। आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। उच्च अधिकारियों द्वारा आपको प्रताड़ित भी किया जा सकता है।

जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है। मित्र या पत्नी के सहयोग से लाभ प्राप्त होगा। किसी के साथ मिल कर कोई कार्य कर सकते हैं, जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। 26 नवम्बर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नही तो ज्यादा नुकसान हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरूआत से ही धनागम के सारे स्रोत प्रभावित होंगे। कुछ ऐसे खर्च आ सकते है, जिसमें पहले से संचित किया हुआ धन भी खर्च हो सकता है जिसके फलस्वरूप आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। बीमारी दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी आय के मार्ग खोल सकती है। आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में आपकी पत्नी एवं भाईयों का भी मुख्य सहयोग होगा। 26 नवम्बर के बाद फिर से समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको अपने अनावश्यक खर्च पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी हो सकती है। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें। आपको मातुल पक्ष का भी सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण होगा, जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। तृतीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से समाज में आपका मान-सम्मान और अधिक बढ़ेगा। भाइयों का भरपूर सहयोग मिलेगा। वर्ष का अंतिम माह अधिक शुभ नहीं रहेगा ।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान कास्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

जून के बाद आपके बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिल सकता है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है, परन्तु वर्ष का अंतिम माह शुभ नहीं रहेगा ।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लग्न स्थान का पाप कर्तरी योग में होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह समय आपको अधिक प्रभावित कर सकता है ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा नहीं तो परेशानी बढ़ सकती है।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है जिसके प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

जून के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग

लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है। यदि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें भी आपको सफलता मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

जून के बाद तृतीय स्थानपर शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी होगी। यात्रा करते समय पूर्ण सावधानी बरतें, क्योकि मुख्य ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। चाह कर भी आप धार्मिक कार्य नहीं कर पाएंगे। अधिक आलस्य के कारण भी आपकी नित्य क्रिया प्रभावित हो सकती है। जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन राहु का दान करें और प्रत्येक दिन राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान का शनि आपके कार्य-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा। फरवरी के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। कम समय में बेहतर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आप अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योकि एकादश स्थान का राहु अचानक लाभ कराता रहेगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। फरवरी से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है। 24 मई के बाद एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराने के प्रबल योग बना रहे हैं।

24 जुलाई के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। बच्चे या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। अतः अच्छा यही होगा की विपरीत स्थिति में आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं। फरवरी के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे एवं परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप बहुत जल्दी अच्छे हो जाएंगे। सुबह सुबह व्यायाम अथवा योगा करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। फरवरी से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत बढ़िया रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपके विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 23 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। व्यावसायिक व्यक्ति की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। फरवरी के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नती के साथ होगा। समय समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ मिलता रहेगा। आप कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। आप अपने दैनिक कार्य स्फूर्ति से करेंगे और अपने कार्यक्षेत्र कुछ विशेष करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। एकादश स्थान का राहु अचानक धन लाभ करा सकता है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे।

29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आप पर कुछ अनावश्यक खर्च आ सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। शनि ग्रह के गोचर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय बहुत उपयुक्त है तथा उनकी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। बच्चों की उन्नति के भी योग हैं।

05 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक माहौल खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना लेंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य

भी प्रभावित हो सकता है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के बारे में शुभ समाचर मिलेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। मार्च के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपको उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करनी चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक विकसित होगी। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

08 अगस्त के बाद शनि का गोचर प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें। सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप उन्नति करेंगे परन्तु करियर में सफलता पाने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुरु के गोचर के बाद समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या सोफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहता हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। उन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वालो व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह

परिर्वतन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। 25 अगस्त से आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपकी धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। 25 अगस्त के बाद गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबो की सहायता करें।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। भले ही इस वर्ष कुछ ऐसे माह भी होंगे जब आपको मामूली परेशानी का सामना करना होगा लेकिन आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस साल की शुरुआत से ही आप अपनी काबिलियत को साबित कर सकने में कामयाब होंगे। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा किन्तु आप अपनी लगन और कार्यकुशलता से सब मुश्किलों का हल सकारात्मक रूप से निकाल लेंगे।

23 सितम्बर के बाद आपके अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे

धन संपत्ति

यह साल आर्थिक रूप से अच्छा रहेगा। व्यावसायिक स्तर पर जोखिम उठाने में कोई नुकसान नहीं होगा। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो 17 अप्रैल के बाद लोन मिल जाएगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच विचार कर उसमें निवेश करें।

धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नही कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 1 मई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत शुभ है। पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग

मिलेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

17 अप्रैल के बाद चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू वातावरण में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नही रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति संतान संबंधित चिंताएं दे सकती है। पंचम भाव पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकती है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को कुछ और इंतजार करना पड़ सकता है।

1 मई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। कार्यों के प्रति सक्रिय और अति उत्साहित होने के चलते आप पूरे साल एकदम तंदरुस्त रहेंगे। सुबह-शाम टहलना व नियमित व्यायाम अभ्यास को बरकरार रखना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा।

17 अप्रैल के बाद मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। चिंता करने से जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आपका ही प्रदर्शन कमजोर साबित होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य बहुत बढ़िया रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। 1 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों का मन पढ़ाई से हट सकता है। आपको प्रतियोगिता परीक्षा एवं अपने करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। इस समय किया गया परिश्रम आने वाले समय में आपको लाभ देने वाला होगा। अतः आप अपने पूर्ण मन से

प्रतियोगिता परिक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 17 अप्रैल को शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

1 मई से आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होने के प्रबल योग बन रहे हैं। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नति कारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति की अनुभूति होगी। इस समय आप अधिक पुण्य का कार्य करेंगे। 1 मई से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे जिससे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए उत्तम रहेगा। 'जो चाहना वह पाना' वाली खासियत जो आप में है, आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आनंद भी लेंगे। अगस्त के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत अच्छा रहेगा। आपकी कुण्डली में दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। आपके आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपको कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए और उद्देश्य पूर्ति के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

9 अगस्त के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय का नया साधन मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। परिवारिक चिंताएं बढ़ सकती हैं। 9 अगस्त से घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा।

15 अक्टूबर के बाद अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हो सकता है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। समाज में भी आपके पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपका आत्म सम्मान बढ़ेगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे की शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। 18 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपकी दृढ़ निश्चयता और सशक्त इच्छाशक्ति के कारण ही आप एकदम स्वस्थ्य रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

18 फरवरी से गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने के कारण आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आएगी। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 18 फरवरी के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

राहु ग्रह का गोचर विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। 15 अक्टूबर के बाद व्यावसायिक व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष कोई विशेष यात्रा के योग नहीं बन रहे। 18 फरवरी के बाद आपकी छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

राहु के गोचर के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। मुख्यतः आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का जाप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र स्थापित कर उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु नमव भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुएकादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं एकादश में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं वह काबिले तारीफ है। 5 मार्च से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। 23 अक्तूबर से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगीपरन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए योजना निर्धारित करनी होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तमरहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 5 मार्च के बाद गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन देन के मामले में आप सावधान रहें। किसी पर भी बहुत जल्दी विश्वास न करें। आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं।

12 अगस्त से आपको भाईयों और मित्रोंकर अच्छा सहयोग मिलने के कारण फिर से धन संचय करने में लग जाएंगे। आपके संचित धन में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में आपको सभी इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होगी। 23 अक्तूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़ीयानहींरहेगा। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसी

विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

12 अगस्त से सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव होने से आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली का योग बन रहा है। आपके भाई व मित्रों के लिए समय बहुत शुभ है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा। आपको प्रेम संबंधो में भी सफलता मिलेगी।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ के दो माह आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेंगे, परन्तु 5 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके बच्चों का समय प्रभावित हो रहा है।31 मई से पंचम स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी।

उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 23अक्तूबरसे आपके बच्चों का समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यहवर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। 5 मार्च से द्वादश स्थान परगुरु के गोचरीय प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए काफी अनुकूल रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपशारीरिक आरोग्यता को प्राप्त करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकता है। 5 मार्च से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहें तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकीशिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। 5 मार्च के बाद आपकीविदेश यात्रा होंगी।

12 अगस्त के बाद आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीयस्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में

आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्य व लापरवाही के कारण आपकी दैनिक पूजा भी प्रभावित हो सकती है। 12 अगस्त से पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप मन्त्र जाप करेंगे। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं नवम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं द्वादश में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। 18 मार्च के बाद वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा और आपको बन्धु-बान्धवों का पूरा सहयोग मिलेगा।

आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान बढ़ेगा। वरिष्ठ अधिकारी आपके कार्यों से संतुष्ट रहेंगे। अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति के योग हैं। आप अपने व्यापार को ऊंचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, जिससे आपके पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चतुर और सूझ-बूझ भरे व्यक्ति हैं तो इसके चलते आप इन चुनौतियों को ही लाभकारी अवसरों में परिवर्तित कर सकते हैं।

लॉटरी, सट्टा व शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। धन संचय करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। यदि ऋण के लिए आवेदन दिया है तो वह भी मिल जाएगा। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु पैतृक संपति के लिए अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वितीयस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे। परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगा। जिससे आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा। आपके

मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा।

धर्मपत्नी के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। अतः आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का शनि आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं वे गलत संगत में पड़ सकते हैं जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ध्यान से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं। आपके बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो अपने लक्ष्य से उनका मन भटक सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गैस, अपच व पेट संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना प्रारम्भ हो जाएगा।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या पर ध्यान दें। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। वाहन चलाते समय व यात्रा करने समय सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च से व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

वर्ष के मध्य में एकादश स्थान का मंगल प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए काफी शुभ है। उनके करियर में सफलता के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय काफी शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के अच्छे योग बन रहे हैं। 18 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेंगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट होंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे। आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, भिखारियों को दान देना, धार्मिक स्थान पर भंडारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- राहु ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध हितकारी रहने वाला है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थिति में सुधार होगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रह गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। अष्टम स्थान का राहु आपके व्यावसायिक जीवन में कुछ परेशानी उत्पन्न कर सकता है, जिससे आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाइयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगा। अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरु हो जाएगी।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए समय बहुत ही अनुकूल है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के मार्ग खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 28 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके परिवार वालों का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 12 अगस्त के बाद सप्तम भाव में राहु ग्रह का गोचर आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। शारीरिक अनुकूलता पर धन का व्यय होगा। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। पारिवारिक सुख सुविधा के लिए अधिक धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक दृष्टिकोण से उत्तम रहेगा। 28 मार्च के बाद आपके परिवार में

सदस्य वद्धि के संकेत हैं। यह वृद्धि किसी के विवाह या शिशु जन्म से होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी ।जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

आपके छोटे भाई-बहनों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध शुभ नहीं है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

बच्चों के साथ प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम एवं सुबह-सुबह टहलना आदि
वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप सेहत पर ध्यान नहीं देंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर अनावश्यक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर योगा आदि करना आपके लिए लाभप्रद है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहने वाला है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। ज्योतिष व गुप्त विद्या के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ सकती है।

जो व्यक्ति व्यवसाय के रूप में करियर खोज रहे हैं। उनके लिए शनि ग्रह का गोचर एक सुनहरा अवसर लेकर आ रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है, जिसमें आपको अच्छी उन्नति मिलेगी।

यात्रा-तबादला

28 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। कार्य व्यवसाय से संबंधित भी यात्रएं होती रहेंगी। 13 जुलाई के बाद द्वादश स्थान पर

शनि ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास उत्पन्न करेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान-पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने पूजा घर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनि व बुधवार के दिन काली व नीली वस्तु का दान करें एवं राहु के निम्न मन्त्र का पाठ करें।

ॐ भ्रां भ्रीं भौं सः राहवे नमः।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि छठे भाव में और सिंह राशि का राहु सप्तम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे।

सप्तम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होग, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

6 अप्रैल के बाद आर्थिक लेन-देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझ कर ही धन का व्यवहार करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपनी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में तत्पर रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा जिससे पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 6 अप्रैल से आपके छोटे भाईयों के लिये समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य

भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो इस पर विशेष ध्यान दें।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष अवश्य उनका विवाह हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नहीं तो उसकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओ की वृद्धि कर रहा है। आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम या सुबह-सुबह टहलने जाना। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती है या प्रारम्भ हो सकती है। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान-पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। विद्यार्थियों का नए-नए तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यवसाय में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 6 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं

के साथ आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे।

द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। 6 अप्रैल से समय धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दुसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। जितना आप अच्छा कार्य करेंगे उतना ही आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन व पूजन करें। इसके प्रभाव से ग्रहजनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में आपको बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। अप्रैल के बाद समय और भी अच्छा हो रहा है।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आपका अच्छा खर्च हो जाएगा। 15 अप्रैल के बाद आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से भी आपको लाभ मिलेगा।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रुके हुए व फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और बढ़ेगी।

15 अप्रैल के बाद घरेलू वातावरण बहुत ही अच्छा रहने वाला है। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। परन्तु 27 अगस्त के बाद आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जो आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

अप्रैल के बाद दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही श्रेष्ठ रहेगा। वे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे समाज में आपका मान संमान बढ़ेगा। यदि आप दूसरे संतान की इच्छा रखने हैं तो गर्भाधान के लिए अच्छा समय चल रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय बहुत ही बढ़िया हो रहा है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओ की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फूर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह टहलने जाना इत्यादि।

27 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण आप समय पर अपना खान पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। रोजगार के नये नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। 27 अगस्त के बाद आलस्य की भावना आपकी सफलता में बाधक साबित हो सकती है। अतः अगस्त के बाद आलस्यता व अत्यधिक आत्मविश्वास का त्याग करें और यथार्थवादी बनें ।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 15 अप्रैल के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु, राहु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपकी अवश्य विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से आप दैनिक पूजा करते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- श्वेतार्क गणपति अपने घर में स्थापित करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष काले धागे में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में स्थानान्तरण की भी संभावना बन रही है। 26 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह सब आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके व्यापार में रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। साझेदारी में कार्य कर रहें है तो यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

सितम्बर के बाद समय और भी ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। आपके कार्यों में प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों को अचानक हानि होगी। परिवार में रोग-बीमारी अधिक होने के कारण आपका व्यय बढ़ेगा।

धन संपत्ति

वर्षारंभ में चतुर्थ स्थान का गुरु आपको भूमि, भवन, वाहन के साथ संचित धन की प्राप्ति करा सकते हैं। माता जी से धन लाभ होने का अच्छा योग बन रहा है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत तो बढ़ेंगे परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर भी ज्यादा खर्च होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं।

16 सितम्बर के बाद लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आय के मार्ग प्रभावित होंगे। किसी को उधार पैसे न दें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में आपका घरेलू माहौल अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। 26 अप्रैल से संतान व भाईयों के लिए समय बहुत

ही शुभ हो रहा है।

सप्तम स्थान का शनि आपकी पत्नी के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे परिवार में किंचित नकारात्मक परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। समाज में सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं संमान प्रदान करेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए आप श्रेष्ठ कार्य करने में रुचिशील रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा।

26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का श्रेष्ठ समय रहेगा। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो इस समय के अंतराल में उसका विवाह हो सकता है। परन्तु आपकी दूसरी संतान के लिए यह साल सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह साल अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। मौसमजनित बीमारियां भी आपको तंग कर सकती हैं। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है। अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि छठे स्थान का राहु रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान कर रहा है।

अप्रैल के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे। फिर भी आलस्य की भावना बनी रहेगी। किसी भी कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। 19 अक्टूबर के बाद अचानक आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त हो सकते हैं। परन्तु शीघ्र ही यह स्थिति भी ठीक हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ राहु के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए साल का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अप्रैल के बाद विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। लेकिन 16 सितम्बर के बाद करियर में उन्नति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु एवं राहु की संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इस वर्ष आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके लिए अनुकूल रहेगा।

26 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्रा भी अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी अधिक करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 26 अप्रैल के बाद आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रूचि बढ़ेगी। साधना, योग व ध्यान आप अधिक करेंगे। अपने गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। परन्तु इन सभी कार्यों में आपकी पत्नी का सहयोग कम ही रहेगा।

- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं और शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन तांबे की लोटे में चावल, रोली डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।)
- अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं सप्तम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

काम काज में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट उत्पन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। आपके शत्रु आपको किसी षड्यन्त्र में फंसा सकते हैं तथा आप इस परेशानी से निकालने में अपने को असमर्थ समझेंगे। 11 मई के बाद समय और भी प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। फिर भी किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह के बिना महत्वपूर्ण फैसले न लें। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण सतर्कता बरतने की जरूरत है। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। इस बात को न भूलें की जल्दबाजी में लिए गए फैसले अक्सर गलत ही होते हैं। आपका कोई करीबी या कोई अन्य आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकता है। कारोबार से संबंधित सभी कार्यों में सावधानी बरतें और जो भी लेन-देन करें लिखित रूप में ही करें तो ज्यादा बेहतर होगा।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी है। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी फिर भी आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे क्योंकि राहु के साथ गुरु की युति अच्छी नहीं होती। 11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके अच्छा संदेश नहीं दे रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऐसे में आप देन लेन के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। धर्म पत्नी एवं पुत्र का स्वास्थ्य अनुकूल करने में धन व्यय होगा। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

7 अक्टूबर से व्यापारिक व्यक्तियों को कुछ लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जो आपके लिए अच्छा नहीं है। शेयर बाजार से दूरी बनाए रखना आपके लिए लाभदायक होगा। बिना सोचे-समझे कहीं भी निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित रहने से आप चिंतित रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने का प्रबल योग बना रही है। सहनशक्ति बनाए रखें। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। मई के बाद आपके मातुल पक्ष के लोगों के लिए समय अच्छा नहीं है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान संमान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए शुभ नहीं है।

संतान

यह साल संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो आपके बच्चों के लिए अनुकूल नहीं है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिसका असर उनकी शिक्षा दीक्षा पर भी पड़ेगा। 11 मई के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों का संतान हानि (गर्भपात) हो सकता है। अतः उस समय आपको संतान पर विशेष ध्यान देना होगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपकी दूसरी संतान की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय काफी शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करना ज्यादा पसंद करेंगे, जिससे आपके मन में अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपको मौसमजनित बीमारियों से परेशान कर सकता है। लग्न स्थान पर पाप ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी हो सकती है। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। इस समय के अंतराल में अचानक कोई बड़ी बीमारी होने का प्रबल संकेत दिख रहा है। हालांकि अक्टूबर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है। फिर भी अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। तुला दान या महामृत्यंजय जाप करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। पंचम स्थान में राहु एवं गुरु की युति आपकी उन्नति को रोक रही है। मई के बाद नौकरी के लिए प्रयासरत अभ्यार्थियों को प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है क्योंकि आने वाले समय में यही परिश्रम आपकी सफलता का द्वार खोलेगा।

7 अक्टूबर के बाद समय में कुछ सुधार हो रहा है तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को सफलता मिल सकती है। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए भी समय शुभ है। नौकरी वांछित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि लम्बी यात्रा का योग बना रही है। धार्मिक यात्रा का भी आनन्द ले सकते हैं। व्यवसाय से संबंधित भी आपकी यात्राएं होती रहेंगी।

11 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। सांस्कृतिक उत्सवों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। आपके धर्म के अनुसार जितने भी पर्व होते हैं उन सभी पर्वों को हर्षोल्लास के साथ मनाएंगे। मई के बाद आप दान पुण्य में ज्यादा रुचि लेंगे- जैसे मन्दिर निर्माण, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। अक्टूबर के बाद आपके दैनिक पूजा-पाठ में सुधार होगा। अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष यज्ञ अनुष्ठान करेंगे, जिससे आपको अत्यधिक मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगा।

- दुर्गा कवच का प्रत्येक दिन पाठ करें तथा सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें ।
- अपने बजन के बराबर अन्न का दान (तुला दान) करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित कर नित्य उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक स्थिति के लिए सामान्य रहेगा। आपके अंदर काम करने का जुनून तो होगा परन्तु कोई शुभ अवसर नहीं मिलने के कारण आपका मनोबल कमजोर हो सकता है। 5 अप्रैल के बाद आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे।

साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा नहीं है, आपको धोखा मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है। 2 जून के बाद सफलता की कुछ उम्मीद दिख रही है। व्यापारिक वर्गों से आपको कुछ लाभ होगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे, जिसमें आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभाववित हो रहा है। कोर्ट कचहरी व किसी कानूनी प्रक्रिया में फंस सकते हैं। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में रुचि से अधिक दबाव की स्थिति बन सकती है।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आर्थिक स्थिति में सुदृढ .ता बनी रहेगी। 3 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगा। धनागम के मार्ग प्रभावित होंगे। बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

अप्रैल के बाद पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। कुछ अनाावश्यक खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। धन विनियोजन को प्रबल करने के लिये आपको पराक्रम से काम लेना होगा। इस अवधि में आपका सकारात्मक बने रहना बेहतर होगा। 4 नवम्बर से वित्तीय विषयों के लिए समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ तो उत्तम रहेगा, परन्तु 3 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकता है। 7 अप्रैल को चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह की उपस्थिति अचानक घरेलू महौल को खराब कर सकती है। आपकी रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद-विवाद करने से परहेज करें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। सप्तम स्थान में शनि की स्थिति आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छी नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें।

सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह साल अच्छा नहीं है। अतः आपको सभी के साथ अच्छा संबंध बना कर रखना चाहिए। छोटी-मोटी बातों को अनदेखा कर देना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के लिए भी यह समय शुभ नहीं है। 4 नवम्बर के बाद माता पिता के लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उनके स्वास्थ्य पर आपको ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

संतान

पंचम स्थान में राहु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपको अपनी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। भाग्य थोड़ा कम ही साथ देगा।

2 जून के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय बढ़िया रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशनी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि 2 जून से समय किंचित अच्छा हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। लेकिन वर्षान्त में समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

4 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य सुख में कमी आ सकती है। यदि आपने छोटी मोटी बीमारियो को अनदेखा किया तो यह बड़ी चिंताजनक बनकर सामने आ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए समय

समय पर चिकित्सक की सलाह का लाभ उठाना लाभकारी रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस साल आपको परिश्रम के अनुसार परिणाम नहीं मिलेंगे। आप अपने लक्ष्य के पथ पर अग्रसर रहेंगे तथा सफलता की उम्मीद को ले आगे बढ़ते रहेंगे। 2 जून से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपका रूझान राजनैतिक, तन्त्र, यन्त्र, मन्त्र, विद्या, सिद्धि एवं चमत्कारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक होगा।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनके लिए यह समय शुभ नहीं है। परन्तु विदेश में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अच्छी उन्नति करेंगे। 4 नवम्बर से समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घ ार से दूर भी हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। मोटी-माटी यात्राएं होती रहेंगी। लम्बी यात्रा का योग इस वर्ष कम ही बन रहा है। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी।

2 जून से सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यवसायिक यात्रा होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 4 नवम्बर के बाद दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्य के कारण कर नही पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होंगे। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्मो को ही पूजा समझेंगे। 2 जून से धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में शुभ ग्रह का प्रभाव होने से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएंगे।

- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा आठ मुखी रूद्राक्ष धारण करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। मुख्यतः सारे ग्रहो का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यापार में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ शनि एवं गुरु के कारण गुप्त शत्रु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। वर्ष के प्रारम्भ में आपको किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास नहीं करना चाहिए। उच्चाधिकारियों का सहयोग समय पर न मिलने के कारण परेशानियां बनी रहेंगी। आप अधिकारों व शक्तियों का दुरुपयोग करने से बचें। व्यावसायिक तथा सामाजिक स्तर पर उत्थान के लिए प्रयास लगन से करें क्योंकि 6 अप्रैल के बाद आपको सफलता मिल सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। व्यापार में हानि या साझेदारी में धोखा मिल सकता है। उन्नति के मार्ग भी प्रभावित होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट रहेंगे। 3 दिसम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके कार्यों में किंचित लाभ होगा तथा उन्नति के मार्ग भी खुलेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु एवं शनि के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें तथा अपनी आत्मशक्ति बढ़ाएं क्योंकि 6 अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। एकादश स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेगी, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक मामलों के लिए और ज्यादा खराब रहने वाला है। चोरी, दुर्घटना व सट्टा इत्यादि के माध्यम से आपको हानि हो सकती है। रोग-व्याधि, कोर्ट कचहरी इत्यादि में भी आपका धन व्यय होगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारी में शादी इत्यादि मांगलिक कार्यों में अधिक व्यय होगा। यदि आप कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो 3 दिसम्बर के बाद समय शुभ हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू विषयों को लेकर चिंताएं बनी

रहेंगी। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता के स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद विवाद सामने आ सकते हैं। किसी के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपको जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आएंगे। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

साल का उत्तरार्द्ध आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित परेशानी बढ़ेगी। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है इसलिए जितना हो सके पारिवारिक मतभेदों से दूर रहें। 3 दिसम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई व उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। आपको बच्चों के रहन सहन व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा। 6 अप्रैल से 28 जून तक का समय आपकी दूसरी संतान के लिए अच्छा रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि गर्भवती स्त्रियों के लिए खराब है। उनको अपने खान पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से आप ज्यादा प्रभावित रहेंगे। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप ज्यातर बीमार ही रहेंगे कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेंगी, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

साल का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति की कमी होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती है। तुला दान या महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः प्रतिकूल रहेगा। अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। पढ़ाई में भी अरुचि पैदा होने की संभावना है। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने की संभावनाएं बहुत कम हैं।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ नहीं है। वर्षान्त में बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। सामुद्रिक या दर्शनीय स्थलों की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप संतुष्ट नहीं रहेंगे।

नौकरी व व्यवसाय से संबंधित देश विदेश की यात्राएं होती रहेंगी। यात्रा व वाहन चलाते समय हमेशा सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना इत्यादि का प्रबल योग बन रहा है क्योंकि इस वर्ष मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्य व दीर्घसूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। आपके आस्था एवं विश्वास में कमी आ सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथसालय या गरीब बच्चे के पढाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ .ाएं।
- महामृत्यंजय का पाठ करना या तुला दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सामान्य रहेगा। कार्य-स्थल में अपने काम को लेकर असमंजस की स्थिति बनी रहेगी। क्योंकि इस वर्ष अष्टमस्थ शनि आपको परेशान कर सकते हैं। वैसे मानसिक और शारीरिक रूप से आप काफी ऊर्जावान रहेंगे। नौकरी या व्यवसाय में आप काफी व्यस्त रहेंगे व आपका यह कड़ा परिश्रम ही आपकी सफलता में सहायक होगा। जहाँ तक हो सके अपने कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारियों को समय पर पूरा करने की कोशिश करें। क्योंकि 6 मई के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे।

25 सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। सफलता के उम्मीद दिख रही है। व्यापारिक वर्गों से आपको लाभ होगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे जिसमें आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कोर्ट कचहरी व कानूनी प्रक्रिया से दूर रहना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करने वाले हैं। ध्यान रखें वैसे भी सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है। थोड़ी सूझ-बूझ और अवसर को पहचान कर आप मनचाहा धन कमाने में सफल रहेंगे। जुलाई के बाद आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार देखने को मिलेगा। साथ ही कोई पुराना फँसा हुआ पैसा भी वापस मिलने की उम्मीद है, जिससे आप काफी राहत महसूस करेंगे। शेयर बाजार में सोच समझकर ही निवेश करें। लॉटरी व सट्टेबाजी में धन न लगाएं।

25 सितम्बर के बाद आपकी आय में वृद्धि होगी। बैंक से आसानी से कर्ज प्राप्त हो सकेगा। पत्नी एवं भाईयों से भी लाभ प्राप्त होगा। किसी प्रभावशाली व उच्च पदस्थ व्यक्ति की मदद से आपको आर्थिक लाभ होने की संभावना है। जो जातक व्यवसाय करते हैं, उनके टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी। व्यावसायिक यात्राएँ धन अधिक खर्च करवाएंगी परंतु आपको आर्थिक लाभ भी होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परिवार में सुख-शान्ति का माहौल बना रहेगा। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपके भाईयों का पूर्ण सहयेाग बना रहेगा। लेकिन 6 मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस अवधी में पारिवारिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्ट कारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद करने से परहेज करें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा।

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता मिलेगी। तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। यदि आप संतान की इच्छा रखते है तो यह समय श्रेष्ठ है। प्रथम संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

6 मई से जुलाई पर्यन्त समय प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। परन्तु 6 मई से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ शारीरिक परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं।

शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक चिंताएं भी बढ़ेंगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि जुलाई के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। अष्टमस्थ शनि के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। अतः वाहनादि चलाते समय ज्यादा सावधान रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता मिलेगी। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त

होगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। परन्तु 6 मई से जुलाई तक का समय प्रभावित रहेगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। यह समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष शुभ नहीं है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी। 6 मई के बाद आप विदेश यात्रा करेंगे ।

इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के कारण दुर्घटना या चोट-चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है। 25 सितम्बर के बाद शनि भी शुभ हो जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि का प्रभाव होने से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक पर्वों को खुशी के साथ मनाएंगे तथा सभी सत्कर्मों में पत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगी। 6 मई के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा। उस अवधि में आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा शनि मन्त्र का पाठ करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।
- मंगलवार का व्रत करें तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं नवम भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य क्षेत्र में इस वर्ष आपको एक नई दिशा मिलेगी। जोखिम लेने से न घबराएं और अपने कम्फर्ट जोन से बाहन निकलें। आपकी कार्यक्षमता और रचनात्मक ऊर्जा बहुत अच्छी बनी रहेगी। इसका सदुपयोग करें। आय के नए स्रोत खुलेंगे। अवसर का पूरा फायदा उठाएं। कार्यक्षेत्र में आपके विचारों की सराहना होगी। बड़े अधिकारी आपके काम से प्रसन्न रहेंगे। यदि अपना व्यवसाय आरम्भ करना चाहते हैं तो यह उचित समय है। अवसर और साधन आसानी से प्राप्त होंगे। नए कारोबारियों से आपका संपर्क बनेगा। उनके साथ काम करके आप एक नई ऊँचाईयों को प्राप्त करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध नौकरी वाले लोगों के लिए अनुकूल रहेगा। दशमस्थ गुरु के कारण नौकरी बदलने के ढेरों नए अवसर मिलेंगे। मनचाही नौकरी मिलगी और पदोन्नति भी होगी। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ परेशानियां आएंगी। लेकिन इस मुसीबत से निकलने में आप सफल रहेंगे। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं। इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। भूमि, भवन व वाहन का सुख प्राप्त होगा। संचित धन की वृद्धि होगी। आभूषण एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे तथा आय के मार्ग में आने वाली सारी बाधाएं दूर होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु आपके दूसरे भाव में प्रवेश करने वाले हैं। उस समय आपको आर्थिक मामलों को लेकर बहुत ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत है। दूसरों की बातों में न आएं और दूसरों के ऊपर पैसे खर्च करने से भी परहेज करें। आपके खिलाफ साजिश रची जा सकती है लेकिन घबराने की आवश्यकता नहीं है। गलत कार्य में धन निवेश न करें नहीं तो धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम

भूमिका होगी। आपके भाईयों की उन्नति होगी। तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

22 जून को द्वितीय स्थान का राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंच सकती है तथा परिवार में कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यहीं रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनके दिल में स्नेह, आदर्श व सम्मान का भाव बढ़ेगा। आप लोगों के बीच भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

10 जून को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों की उन्नति में सहायक होगा। आपके बच्चे अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत को सुधारने वाला रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसम जनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप योग क्रियाओं के द्वारा मन को एकाग्र करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी।

22 जून के बाद द्वितीयस्थ राहु के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। 10 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। इस अवधि में आपको इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो यह समय उत्तम है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

यात्रा-तबादला

इस अवधि में आपकी छोटी-बड़ी यात्राएं खूब होंगी। नौकरीपेसा व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी। नवमस्थ शनि के कारण लम्बी यात्राओं का आनन्द लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा में व्यवधान आ सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। इस अवधि में आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगा।

- शनिवार या बुधवार के दिन नीली वस्तु का दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- चिड़ियों, चींटियों व मछलियों के लिए दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। पूरे वर्ष शनि तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की मात्रा और बढ़ जाएगी। व्यापार में आपके भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। इस अवधि में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है तथा इस ब्राण्ड नेम से आपको भविष्य में अत्यधिक लाभ मिलेगा। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। लेकिन आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे।

30 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले लोगों का पदोन्नति के साथ अनुकूल स्थान पर तबादला होगा। समय समय पर आपको बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा तथा कार्यस्थल पर सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। सितम्बर के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय के अंतराल में व्यापार के साथ साथ स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के कारण धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। रोग बीमारी इत्यादि में आपका व्यय ज्यादा होगा। द्वितीय स्थान का राहु अनावश्यक खर्च बढ़ा सकता है। अतः अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका अधिक व्यय होगा। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है।

30 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। निवेश या आर्थिक मामलों में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर पूरे वर्ष प्रतिकूल रहेगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। 30 जुलाई

तक विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं। जुलाई के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। माता पिता के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्टकारक रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा व सबका सहयोग मिलेगा। सितम्बर के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपकी दूसरी संतान का चौमुखी विकास होगा। विवाह भी हो सकता है। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद पुनः अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें। 19 सितम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है।

वर्षान्त में अत्यधिक आलस्य के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे तथा मानसिक तनाव भी बना रहेगा। नियमित रूप से व्यायाम करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा कहा जा सकता है। तकनीकी शिक्षा व विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में सफलता के योग हैं। करियर में उन्नति के अवसर मिलेंगे। व्यापार में महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अधिकारी वर्ग से तनाव होने की संभावना है। व्यापार में आप नई टैक्नोलॉजी व मशीनों का इस्तेमाल कर सकते हैं। सितम्बर के बाद आपकी परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध में नौकरी में स्थानान्तरण के योग हैं यह स्थानान्तरण आपके हित में होगा। इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा प्रभावित होगी।

30 जुलाई के बाद व्यवसाय या शैक्षणिक कार्यों हेतु आपकी यात्रा समीपवर्ती क्षेत्रों में होगी। साथ ही परिवार सहित प्रसिद्ध क्षेत्रों की यात्राएं होंगी एवं सगे संबंधियों के घर में विवाह इत्यादि शुभ कार्यों में जाने का अवसर मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका मन पूरी तरह से धार्मिक कार्यों में संलग्न होगा एवं इसमें आपको अपने परिवार का भी पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

सितम्बर के बाद आपके धार्मिक कार्य किंचित प्रभावित होंगे। लग्न स्थान का राहु आपके दैनिक पूजा पाठ में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। मानसिक अस्थिरता के कारण भी आप कोई विशेष पूजा पाठ नहीं कर पाएंगे। गणेश जी का मन्त्र पाठ आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदन सूर्य को जल दें।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहने वाला है। सहयोगी तथा उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो पदोन्नति अथवा कार्यक्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होगी। व्यापार में नीति निपुणता से काम लेना आपके लिए लाभकारी रहेगा। 16 फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक मेहनत करनी होगी।

गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से व्यापार में व्यवधान व परिवर्तन को दिखा रहा है। व्यवसाय में आपका निवेश अधिक होगा परंतु लाभ कम मिलेगा। हालांकि चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि पिता या किसी बड़े सम्मानित व्यक्ति की सहायता से आपको लाभ मिलेगा जो आने वाले समय के लिए बहुत ही अनुकूल है। साझेदारी में व्यापार शुरु करना आपके लिए शुभ नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे, परन्तु 16 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं लग्नस्थ राहु के कारण शारीरिक व्याधि दूर करने में अधिक व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है तथा अपने खर्चे पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कुछ ऐसे कामों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। कुछ बेकार के कामों में आप पैसे बर्बाद कर सकते हैं। कुछ ऐसे खर्चे भी सामने आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। केस, मुकद्दमा व कानूनी प्रक्रिया में भी आपके कुछ अनावश्यक खर्चे हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं है। परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। इस वर्ष परिवार में एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग

हो सकती है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं तथा अपने बौद्धिक शक्ति के द्वारा पारिवारिक विषमता को अनुकूल बनाने की कोशिश करें।

सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि पत्नी के स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। अतः उनको स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापवाही नहीं करनी चाहिए। इस वर्ष आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा सामान्य रहेगा।

संतान

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष संतान के लिए कष्टप्रद रहने वाला है। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है तथा आपके प्रथम बच्चे की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी बीमारियां होती रहेंगी। अतः आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान तथा रहन सहन पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग तथा इंफेक्शन के कारण होगा।

आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इस सब का नकारात्मक प्रभाव आपकी सेहत पर पड़ेगा, जिससे आपका स्वास्थ्य और प्रभावित हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण पेट, मोटापा व लीवर संबंधित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवारी को गुरु ग्रह का गोचर विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। पढ़ाई लिखाई में कमी या प्रतियोगिता में व्यवधान आ सकते हैं। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। प्रतियोगिता में प्रतिद्वंदियों द्वारा रुकावट डाली जा सकती है।

जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह साल श्रेष्ठ रहने वाला है। विदेशी शिक्षा प्राप्त करने वालों को वांछित सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष आपकी सारी यात्राओं में व्यवधान आने की संभावना है। पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं कर पाएंगे। अचानक व्यवसाय से संबंधित यात्राएं हो सकती हैं। इस यात्रा के अंतराल में आपको शरीरिक कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर तबादला होगा। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपके विदेश यात्रा होगी तथा इस यात्रा से आपको विशेष लाभ होने वाला है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा तथा मानसिक अस्थिरता के कारण आप पूजा-पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। तन्त्र मन्त्र व साधन के प्रति आपकी रुचि ज्यादा बढ़ेगी। धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा भी इस वर्ष प्रभावित रहने वाली है।

- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- बुधवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- वीरवार के दिन केला व बेसन के लड्डू किसी धार्मिक स्थान पर दान करें।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(23/09/2024 - 23/09/2041)

बुध की अन्तर्दशा 23/09/2024 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 23/09/2041 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध एकादश भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या तथा साझेदारी में बाधा हुई होगी और विरोधी उत्पन्न हुए होंगे। बुध की वर्तमान दशा में आपको सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ मिलेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, स्फूर्तिवान, स्वस्थ तथा शक्तिशाली होंगे। विषाणुजन्य ज्वर तथा संक्रामक बीमारी, चर्मरोग और स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है। स्वयं को अनावश्यक मानसिक या शारीरिक कष्ट न दें। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति भी होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश में लाभ होगा। आप दिन ब दिन तरक्की करेंगे और आपको सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ मिलेगा। जीविका और व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को प्रतिस्पर्धा में सफलता और उच्चाधिकारियों या सरकार से लाभ मिलेगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी औश्र सहकर्मियों तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, आय में वृद्धि, व्यापार की उत्तम संभावना तथा जीवन में तरक्की होगी । आर्थिक प्रगति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको जीवन का आनन्द और वाहन का सुख मिलेगा। आप गाड़ी की खरीद और विक्री कर सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपको अचल सम्पत्ति का अचानक लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और चन्द्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी जो लाभदायक होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। सामूहिक गतिविधियों से आपको लाभ होगा। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यापार तथा अन्तरराष्ट्रीय व्यापार के विषयों में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि होगी। आप सभी बौद्धिक कार्यों में बहुत अच्छा

करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा और वे आपकी खुशी के स्रोत होंगे। आपके जीवन साथी को सट्टे तथा निवेश में लाभ, अचानक धन की प्राप्ति तथा बच्चों से सुख मिलेगा। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उन्हें जमीन-जायदाद और सुख की प्राप्ति होगी। आपको पिता की सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, उनकी यात्रा होगी और व्यवसाय-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को ख्याति, सम्पत्ति और पिता से लाभ मिलेगा। आपके बड़े भाई-बहनों को सुख, यश और ख्याति मिलेगी और उनकी यात्रा होगी। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपको सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, आपके मित्र प्रभावशाली होंगे और आपकी मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के कारण आपको लाभ वाहन तथा सुख की प्राप्ति होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा होगी तथा जीवन में प्रगति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और कुछ परिवर्तन होगा। शनि की अन्तर्दशा में कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

अंर्तदशा :- बुध - बुध
(23/09/2024 - 19/02/2027)

आपके लिए बुध की महादशा 23/09/2024 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 23/09/2024 को प्रारंभ होकर 19/02/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी। बहुत मित्र होंगे। बुद्धिमत्ता उत्तम होगी। कल्पनाशक्ति और उत्साह उत्तम होंगे। आविष्कारों और नये कार्यों के लिए उत्तम समय है। ज्ञान-विज्ञान और लेखन में रुचि होगी। दैनिक दिनचर्या की व्यवस्था कुशलता से करेंगे।

आपके जीवनसाथी को निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। आपके पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं; व्यापार से लाभ हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा ; धनागम होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, सब कार्यों में सफलता, ज्ञान-विज्ञान में रुचि का संकेत है। आपकी संतान को शिक्षा में सफलता मिलेगी; सामूहिक कार्यों में लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार से लाभ होगा या नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को कई माध्यमों से धनागम होगा। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ऊँ बुं बुधाय नमः

अंर्तदशा :- बुध - केतु
(19/02/2027 - 17/02/2028)

आपके लिए बुध की महादशा 23/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/02/2027 को प्रारंभ होकर 17/02/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप कृतसंकल्प रहेंगे। विरोधियों पर विजय होगी। स्पर्धी परास्त होंगे। कार्यालय इच्छानुकूल होगा। अदालत में विजय होगी। प्रतियोगिता परीक्षा में सफल होंगे। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। यात्राएं होंगी; शुभ कार्यों पर खर्चे बढ़ सकते हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं; कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। आपके

पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। माता के धन में वृद्धि होगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, अप्रत्याशित लाभ, अध्यात्म में रुचि और साझेदार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल होगी, सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो जीवन सुख-सुविधाओं से पूर्ण रहेगा, हर प्रकार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल होगी, सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो जीवन सुख-सुविधाओं से पूर्ण रहेगा, हर प्रकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में वातावरण हर्षमय रहेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनागम उत्तम होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उदर रोग और संक्रमण से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए तेल, उड़द की दाल और सतनजा दान में दें।

अंर्तदशा :- बुध - शुक्र
(17/02/2028 - 17/12/2030)

आपके लिए बुध की महादशा 23/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 17/02/2028 को प्रारंभ होकर 17/12/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ेंगे, मगर सीमा में रहेंगे। धन की बचत होगी। आप दयालु और धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे। सब सुख और सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। शत्रुओं पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा। खेती और बागबानी से अच्छी आय हो सकती है। पालतू जंतुओं से सुख मिलेगा। मुकदमे में जीत होगी।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धियों पर विजय होगी। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय करेंगे, धनी बनेंगे। आपकी माता भाग्यशाली होंगी, यात्राएं करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, अच्छी आय, उत्तम जीवन, विभिन्न माध्यमों से आय, भोग-विलास की वस्तुओं की प्राप्ति का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कोई अप्रत्यशित घटना घट सकती है। धन का लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भागीदारी से लाभ होगा, व्यस्तता बढ़ेगी। परामर्शदाताओं की लघु यात्राएं हो सकती हैं, मार्केटिग और बारीकी के कार्य में लाभ होगा। व्यापारी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नेत्रों और शरीर के निचले अंगों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

अंर्तदशा :- बुध - सूर्य
(17/12/2030 - 24/10/2031)

आपके लिए बुध की महादशा 23/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/12/2030 को प्रारंभ होकर 24/10/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी; स्पर्धियों पर विजयी होंगे। उच्चाधिकारियों से सहयोग और लाभ प्राप्त होंगे। माता-पिता से संबंध मधुर रहेंगे ; उनसे लाभ होगा। तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। प्रोन्नति संभव है। रिश्तेदारों से संबंध मधुर रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति और वाहन प्राप्त होंगे, शत्रुओं पर विजय होगी, गृहसुख नसीब होगा।

आपके पिता को विभिन्न प्रकार से लाभ होगा, साख बढ़ेगी, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है, अचानक लाभ हो सकता है; वसीयत, उपहार आदि से धन कमा सकते हैं, खर्चे बढ़ेंगे, यात्रा हो सकती है।

आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शिक्षा अच्छी रहेगी, सफल होंगे। स्पर्धियों पर विजयी होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे; उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनागम होगा। परामर्शदाताओं को सफलता और सम्मान का योग है। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

अंर्तदशा :- बुध - चन्द्र
(24/10/2031 - 24/03/2033)

आपकी बुध की महादशा 23/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 24/10/2031 को प्रारंभ होकर 24/03/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे। समाज में सफलता मिलेगी, आमोद-प्रमोद में खुशी मिलेगी। धन का लाभ होगा। कला और खेलकूद में रुचि होगी। धनागम होगा। संतान से सुख मिलेगा। शिशु का जन्म हो सकता है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आपके बहुत से मित्र होंगे, स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे।

आपके जीवनसाथी को हर प्रकार से लाभ होगा, लक्ष्य प्राप्त करेंगे, धन का संचय होगा। आपके पिता भाग्यशाली रहेंगे और धनी बनेंगे।

माता का घरेलू जीवन सुखी रहेगा, धनागम होगा, सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी।

आपके भाई-बहन सुखी होंगे, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, साहित्य से लाभ होगा, साझेदारी अच्छी रहेगी, विवाह हो सकता है, कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे, घरेलू जीवन सुखी होगा।

आपकी संतान को सफलता, प्रसिद्धि और उत्तम शिक्षा का संकेत है। अगर वे सेवारत हैं तो धन और सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है या कुछ परिवर्तन, मामूली बाधाएं आ सकती हैं। परामर्शदाताओं को अचानक लाभ हो सकता है, जबकि व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली उदर रोग हो सकता है। शुभत्व में वृद्धि के लिए श्वेत वस्त्र, चावल और दूध दान में दें।

अंर्तदशा :- बुध - मंगल
(24/03/2033 - 22/03/2034)

आपके लिए बुध की महादशा 23/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 24/03/2033 को प्रारंभ होकर 22/03/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। कार्यक्षेत्र में, खास तौर पर तकनीकी विषयों में सफलता मिलेगी। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। सत्कार्य करेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, शिक्षा उत्तम होगी, जायदाद से आय में वृद्धि होगी, संतान से सुख मिलेगा। बाधाओं को पार करने के लिए आत्मविश्वास, इच्छाएं और प्रतिरोधक शक्ति मौजूद रहेंगे। वांछित कार्य पूर्ण होंगे और उत्साह उत्तम रहेगा। आपके जीवनसाथी की आय उत्तम होगी; जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। आपके पिता को धनलाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, परिवार में खुशियां और सब सुविधाएं होंगी। माता को निवेश से लाभ होगा, उत्साह उत्तम होगा।

आपके जीवनसाथी की आय उत्तम होगी; जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। आपके पिता को धन का लाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, परिवार मं खुशियां और सब सुविधाएं होंगी। माता को निवेश से लाभ होगा, उत्साह उत्तम होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ, वसीयत से लाभ, सेवानिवृत्ति से धनागम, उत्तम कार्यक्षमता, अनावश्यक खर्चे और यात्रा का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजयी होगी, तकनीकी और बारीकी के कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो मातहतों का सहयोग मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय अच्छी होगी। परार्शदाता आत्मविश्वास के साथ प्रगति करेंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(22/03/2034 - 08/10/2036)

आपके लिए बुध की महादशा 23/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 22/03/2034 को प्रारंभ होकर 08/10/2036 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपके अप्रत्याशित खर्चे हो सकते हैं। धन की बचत में मुश्किलें आएंगी। कार्यों में निराशा हाथ लग सकती है। नये लोगों से जान-पहचान बढ़ेगी; उनसे फ़ायदा हो सकता है। विदेश में निवास हो सकता है। व्यापार में संतोषजनक प्रगति होगी। शत्रुओं और विरोधियों पर विजय होगी। मुकदमे में जीत होगी। नौकरी में वातावरण अच्छा रहेगा। मामा पक्ष के लोगों से जान-पहचान बढ़ेगी; उनसे फ़ायदा हो सकता हे। किराये से अच्छी आमदनी होगी।

आपके जीवनसाथी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे, उस से आय अच्छी होगी। माता के पास सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, समाज की भलाई के कार्य, धन का संचय, सुख-सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान के वातावरण या शिक्षा में परिवर्तन आ सकता है; उन्हें अचानक लाभ या पदोन्नति संभव है। अगर वे कार्यरत हैं तो अचानक लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो संयुक्त उपक्रम से लाभ हो सकता है; आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों को कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, आय बढ़ेगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। खास तौर पर नेत्रों के रोग, गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए रात्रि में दूध से हवन करें।

अंर्तदशा :- बुध - गुरु
(08/10/2036 - 14/01/2039)

आपके लिए बुध की महादशा 23/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 08/10/2036 को प्रारंभ होकर 14/01/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप ज्ञानार्जन करेंगे, परीक्षा में सफलता मिलेगी। वरिष्ठजन आपसे प्रसन्न रहेंगे। सम्मान में वृद्धि होगी। सौभाग्य और समृद्धि का योग है। आपके प्रभावशाली मित्र होंगे; कला में रुचि होगी। व्यापार और सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। बोनस, सेवानिवृत्ति धन आदि से अचानक लाभ हो सकता है। पराविद्या, तंत्र-मंत्र आदि में रुचि हो सकती है। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी, आध्यात्मिक उन्नति होगी, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी, धनी बनेंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता का मानसिक विकास होगा; सुअवसर मिलेंगे। माता धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए मानसिक विकास, साझेदारी में लाभ, व्यापार में लाभ, यात्रा का संकेत है।

आपकी संतान के आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो समृद्धि में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला या परिवर्तन हो सकता है; स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। परामर्शदाताओं के सकारात्मक परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र की मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली दाल, पीले वस्त्र और शहद दान में दें।

अंर्तदशा :- बुध - शनि
(14/01/2039 - 23/09/2041)

आपके लिए बुध की महादशा 23/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 14/01/2039 को प्रारंभ होकर 23/09/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे, भूमि और वाहन का सुख भोगेंगे। आप बुद्धिमान हैं। समझ-बूझ से किये निवेश से लाभ होगा। शिक्षा उत्तम होगी, संतान से सुख मिलेगा। सब कार्य पूर्ण होंगे, समाज में प्रभाव बढ़ेगा, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रोन्नति होगी, प्रसिद्धि मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा। साझेदार या जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है। अचानक लाभ होगा। वसीयत, उपहार, सेवानिवृत्ति निधि, बोनस आदि से धन आ सकता है। अध्यात्म, धर्म या तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे, उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता सफल होंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, धन का लाभ, आत्मविश्वास में वृद्धि, कार्यों की सफलतापूर्वक समाप्ति, जनता में लोकप्रियता का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों में लाभ होगा, जनता में लोकप्रियता बढ़ेगी।

महादशा :- केतु
(23/09/2041 - 23/09/2048)

केतु की महादशा को 23/09/2041 आरम्भ और 23/09/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु छठे भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको यश और ख्याति की प्राप्ति और प्रगति हुई होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहा होगा। केतु की वर्तमान दशा में शत्रुओं पर विजय, सौभाग्य, यश तथा अधिकार मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में किसी बीमारी से लड़ने की क्षमता होगी। आपको छूत की बीमारी, बुखार, अल्सर, चर्मरोग, घाव और मूत्राशय में पीड़ा हो सकती है। कुछ सावधानी बरतकर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। आपको अपने विरोधियों से लाभ मिलेगा। ननिहाल पक्ष से लाभ मिल सकता है। सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। केस-मुकदमे में निर्णय आपके पक्ष में होंगे। जीविका-व्यवसाय के लिए भाषा, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक, शरीर-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, ज्योतिष, परा-चिकित्सा सेवा अथवा समाज सेवा के क्षेत्र का अध्ययन कर सकते हैं। चिकित्सा उपकरण, द्रव इंजीनियरी, लोहा-इस्पात, दवा, रेडियो के पुर्जे, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक के पुर्जे, रत्न, खनिज आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में माहौल अनुकूल रहेगा। आपको सहयोगियों-सहकर्मियों से सहयोग और वरिष्ठ कर्मचारियों से सदभाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को कार्य में सफलता, अच्छी आय और लाभ होगा। कार्य के सिलसिले में आपकी यात्रा हो सकती है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको आराम मिलेगा। आप गाड़ी बदल सकते हैं या नयी गाड़ी ले सकते हैं। आप जमीन-जायदाद की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। आवास में परिवर्तन हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और सूर्य की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

शिक्षा उत्तम होगी और आप प्रतियोगिताओं और परीक्षाओं में अच्छा करेंगे। तकनीकी विषयों में आपकी रुचि होगी। कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग, भाषा, भौतिक शास्त्र, वायु-सैनिक के कार्य, दवा, विज्ञान, तत्त्वमीमांसा, प्रसारण, गुप्त विद्या तथा अन्य

विषय आदि में भी आपकी रुचि हो सकती है। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे और सभी परीक्षाओं प्रतियोगिताओं में सफल होंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा समृद्धि मिलेगी। आपके जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, अनावश्यक खर्च होगा तथा व्यर्थ की यात्रा होगी। आपकी माता के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा, छोटी यात्रा होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि पिता को यश, ख्याति और अधिकार प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, उत्तम शिक्षा तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी जबकि बड़ों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ तथा हानि होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान विरोधियों पर विजय मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मंगल की अन्तर्दशा में सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लोकप्रियता मिलेगी और विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा तथा स्वास्थ्य-समस्या होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा तथा विवाह होगा। शनि के कारण बच्चों से सुख और विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि बुध की अन्तर्दशा में यश और ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति तथा कार्यों में सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :- केतु - केतु
(23/09/2041 - 19/02/2042)

आपके लिए केतु महादशा 23/09/2041 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 23/09/2041 को प्रारंभ होकर 19/02/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्यप्राप्ति के लिए दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। स्पर्धियों से कष्ट हो सकता है। रिश्तेदारों से अच्छे संबंध रहेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी, कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी, नौकरी में मालिकों से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे। आपके पिता सफलता प्राप्त करेंगे। माता में स्पर्धियों पर विजय पाने की संकल्पशक्ति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, उत्तम शिक्षा और माता से मधुर संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, उन्हें सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, मित्रों और भाइयों से मधुर संबंध होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन संचित होगा, प्रसन्न रहेंगे, सहकर्मियों से उत्तम संबंध रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो पर्याप्त आत्मविश्वास होगा, आय बढ़ेगी, सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के काम में कुछ परिवर्तन हो सकता है, यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, कंबल और तेल दान में दें।

अंर्तदशा :- केतु - शुक्र
(19/02/2042 - 21/04/2043)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी ।

इस अवधि में आप भोग-विलास की सामग्री क्रय कर सकते हैं। द्वादश भाव में स्थित शुक्र भाग्यशाली समझा जाता है। अध्यात्म और दया-धर्म में रुचि होगी। शत्रुओं की संख्या में कमी आएगी, या उन पर विजय होगी। कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। दिया धन वापस आ जाएगा। किराये आदि से आमदनी बढ़ सकती है। मुकदमे में जीत होगी। स्पर्धा में सफल होंगे।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा। आपके पिता का पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। माता धनी बनेंगी, उनकी यात्राएं होंगी, अध्यात्म में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, विभिन्न माध्यमों से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकता है। उनका धनार्जन उत्तम होगा, परिश्रम अधिक करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, विरासत या साझेदार के

माध्यम से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों के माध्यम से लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को स्वयं के प्रयास से लाभ होगा। व्यापारियों को सहकर्मियों और कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा।

नेत्रों का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- केतु - सूर्य
(21/04/2043 - 27/08/2043)

आपके लिए केतु महादशा 23/09/2041 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 21/04/2043 को प्रारंभ होकर 27/08/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। तीर्थयात्रा कर सकते हैं; अध्यात्म में रुचि होगी। नेकी के कार्य करेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, वाहन सुख रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी, बहुत से मित्र होंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है। घरेलू सुख रहेगा; माता से उत्तम संबंध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता धनी बनेंगे, इच्छाएं पूर्ण होंगी। माता को साझेदार के माध्यम से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ, खर्चे, यात्रा और शत्रुओं पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान के सम्मान में वृद्धि होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, उच्चपद प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- केतु - चन्द्र
(27/08/2043 - 27/03/2044)

आपके लिए केतु महादशा 23/09/2041 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 27/08/2043 से प्रारंभ होकर 27/03/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न और संतुष्ट रहेंगे। सरकार के माध्यम से लाभ हो

सकता है। कला और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। आपके बहुत से मित्र होंगे; धनार्जन उत्तम होगा। संतान से सुख मिलेगा। लक्ष्य प्राप्ति में सफल होंगे। धन का संचय होगा।

आपके जीवनसाथी धनी, सफल और लोकप्रिय बनेंगे। आपके पिता धनी और भाग्यशाली होंगे। माता का धनार्जन उत्तम होगा, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा।

आपके भाई-बहनों के लिए संचार माध्यम से लाभ, लघु यात्राएं, नरम व्यवहार, साझेदारी से लाभ और कार्यक्षेत्र में सफलता का संकेत है। आपकी संतान लोकप्रिय होगी, सफल रहेगी, शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी और सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं; तबादला संभव है। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचन तंत्र की शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ऊँ सों सोमाय नमः

अंर्तदशा :- केतु - मंगल
(27/03/2044 - 23/08/2044)

आपके लिए केतु की महादशा 23/09/2041 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 27/03/2044 को प्रारंभ होकर 23/08/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। सब कार्यों में सफलता मिलेगी। निवेश या शेयरों से लाभ हो सकता है, स्पर्धियों पर विजय मिलेगी, उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। उत्साह, साहस और कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे, उनके सारे काम पूर्ण होंगे। आपके पिता की आय अच्छी होगी, पारिवारिक जीवन उत्तम होगा, खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को साझेदारी से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ, मातापक्ष से लाभ, परीक्षा में सफलता का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, सफल होंगे, तकनीकी विषयों में रुचि होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, निवेश से लाभ होगा, मुकदमे में विजय मिल सकती हैं, किराये से आमदनी बढ़ेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

अंर्तदशा :- केतु - राहु
(23/08/2044 - 11/09/2045)

आपके लिए केतु महादशा 23/09/2041 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 23/08/2044 को प्रारंभ होकर 11/09/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। नयी मित्रता लाभकारी हो सकती है। व्यापार में उन्नति होगी। कार्यों में प्रारंभ में बाधाएं आ सकती हैं। शत्रुओं पर विजय होगी, चिंताएं खत्म होंगी, कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। नौकरी में या मातहतों के माध्यम से लाभ होगा। खेलकूद आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा; सब का सहयोग प्राप्त होगा। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं; घरेलू सुख रहेगा। माता भाग्यशाली और धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, धनलाभ, धनसंचय, सुखी पारिवारिक जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को अचानक लाभ हो सकता है या परिवर्तन आ सकता है। उन्हें सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला या अन्य परिवर्तन संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे, उत्साह उत्तम रहेगा। व्यापारी स्पर्धियों पर सफलता प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, सतनजा और नीले वस्त्र दान करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

एस्ट्रोग्राफ - 2025

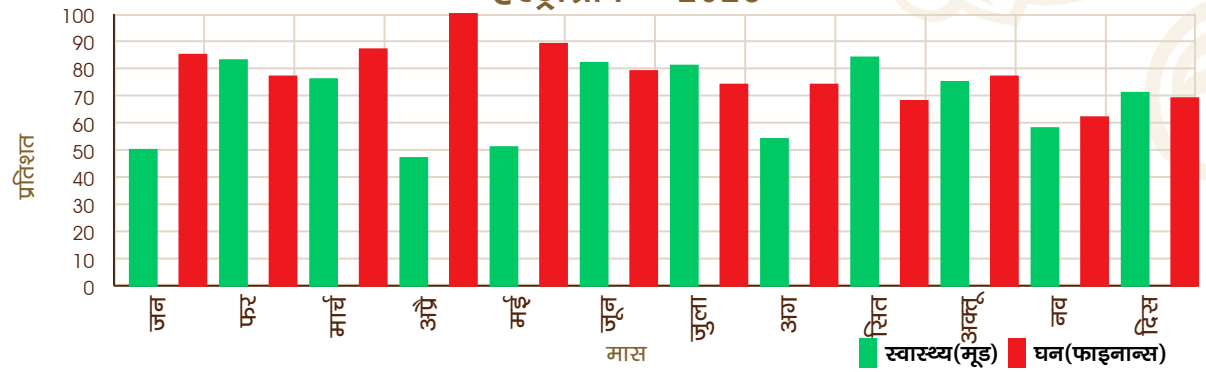

एस्ट्रोग्राफ - 2026

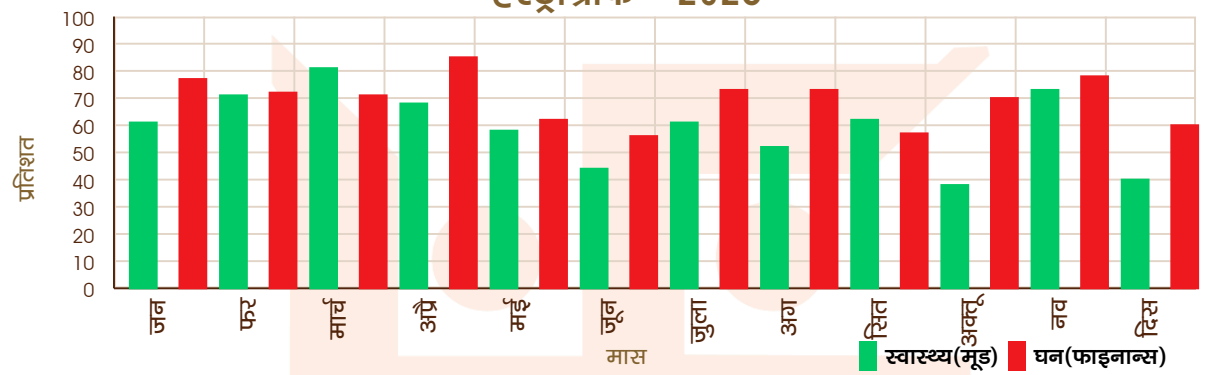

एस्ट्रोग्राफ - 2027

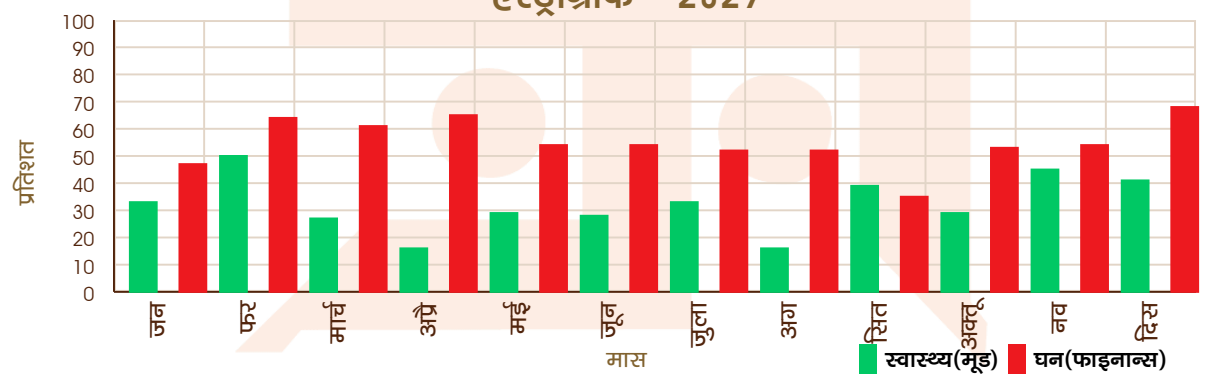

एस्ट्रोग्राफ - 2028

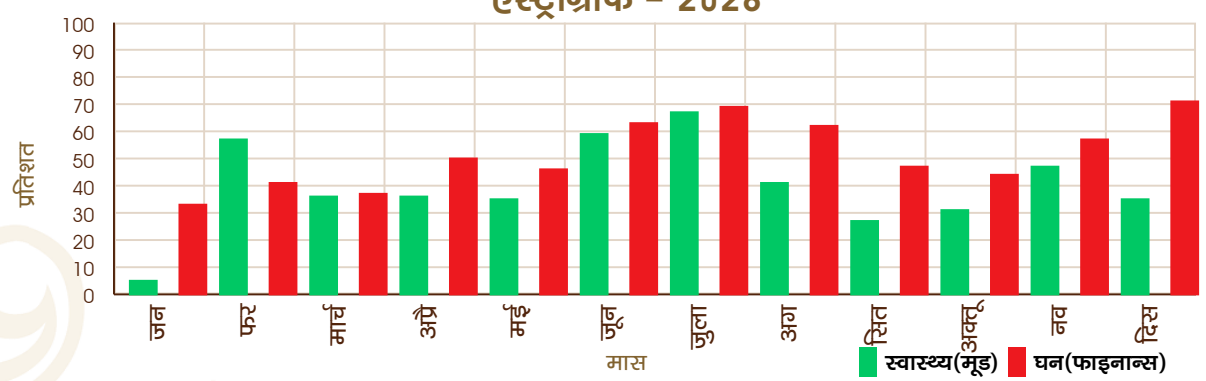

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

एस्ट्रोग्राफ - 2029

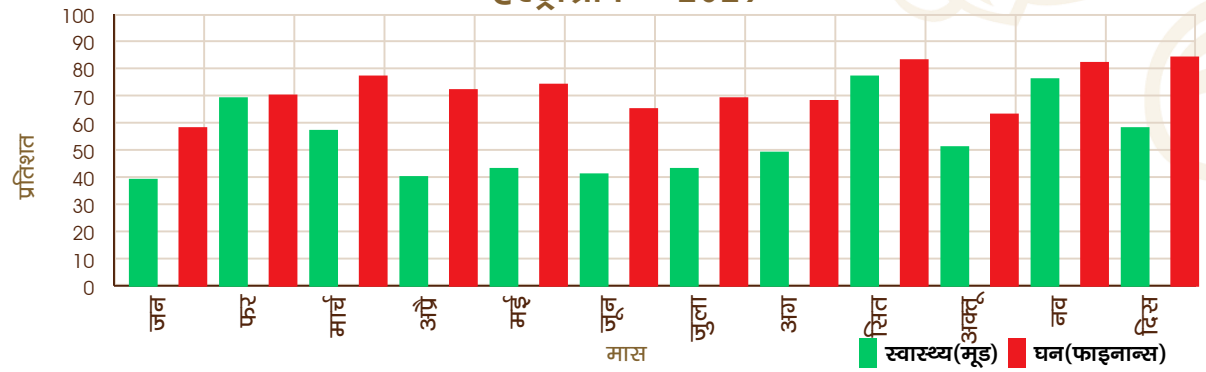

एस्ट्रोग्राफ - 2030

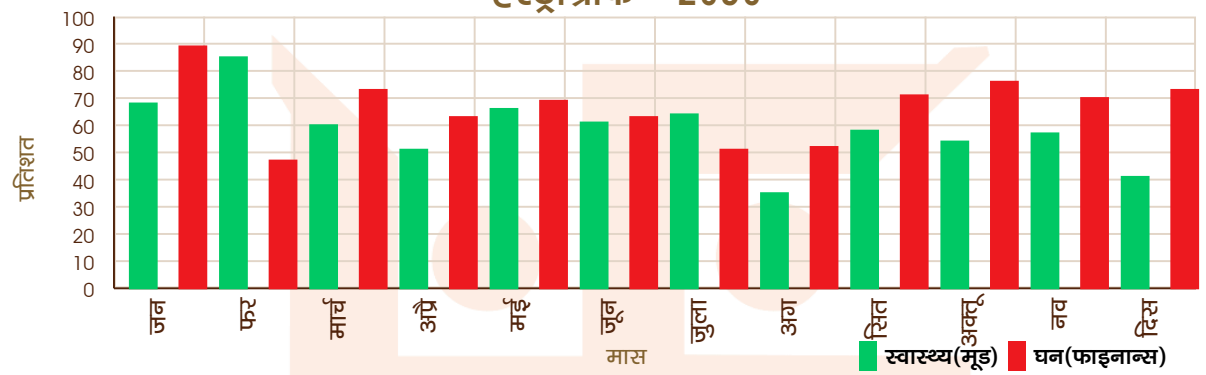

एस्ट्रोग्राफ - 2031

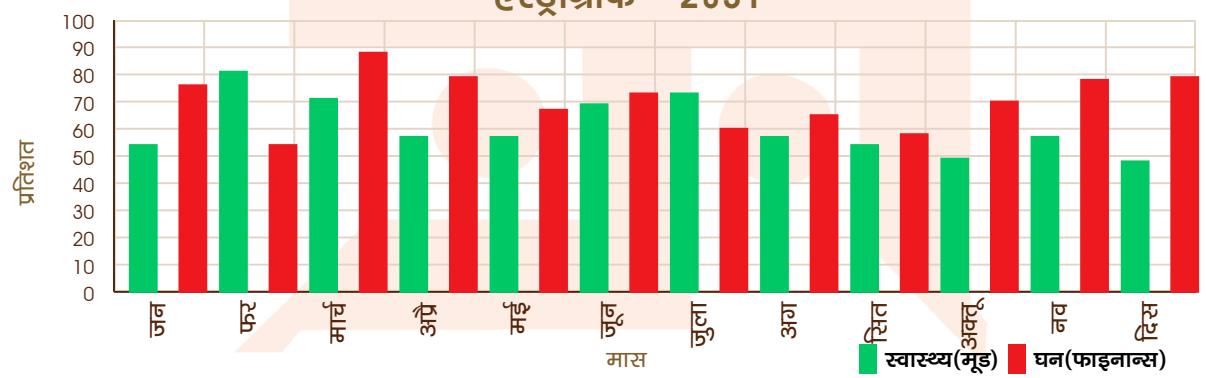

एस्ट्रोग्राफ - 2032

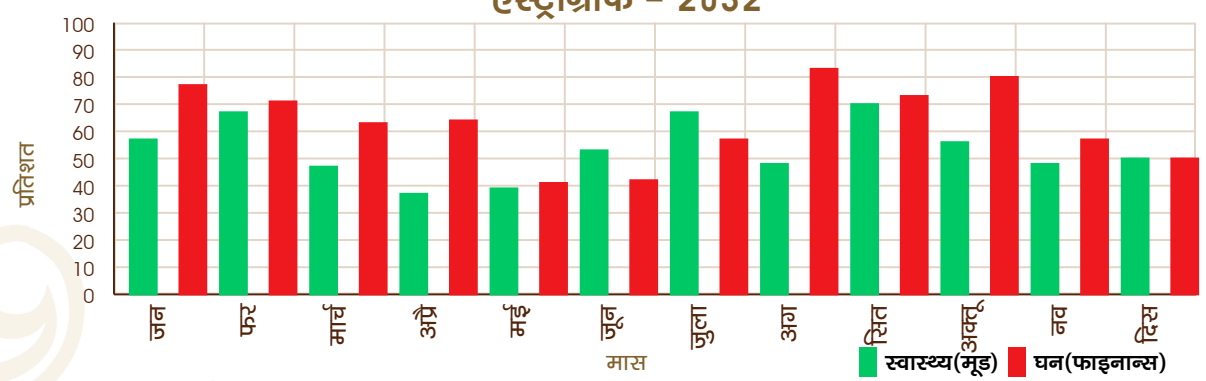

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

एस्ट्रोग्राफ - 2033

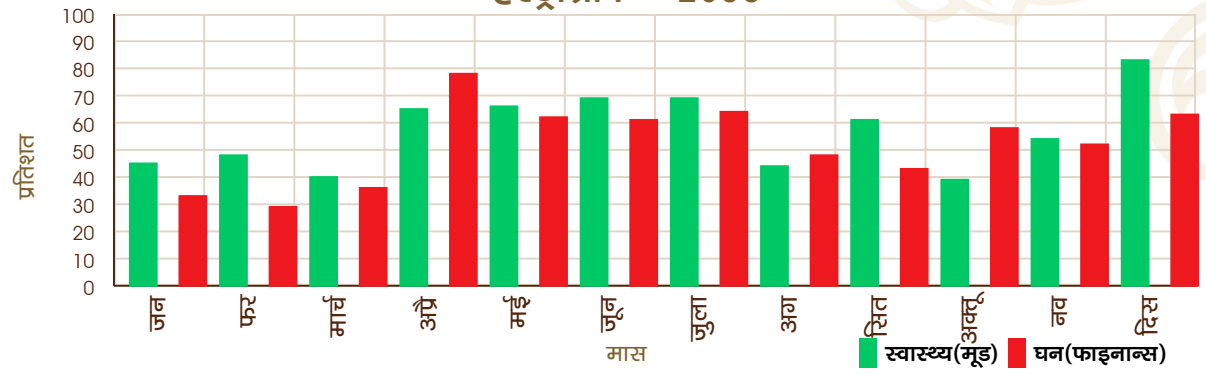

एस्ट्रोग्राफ - 2034

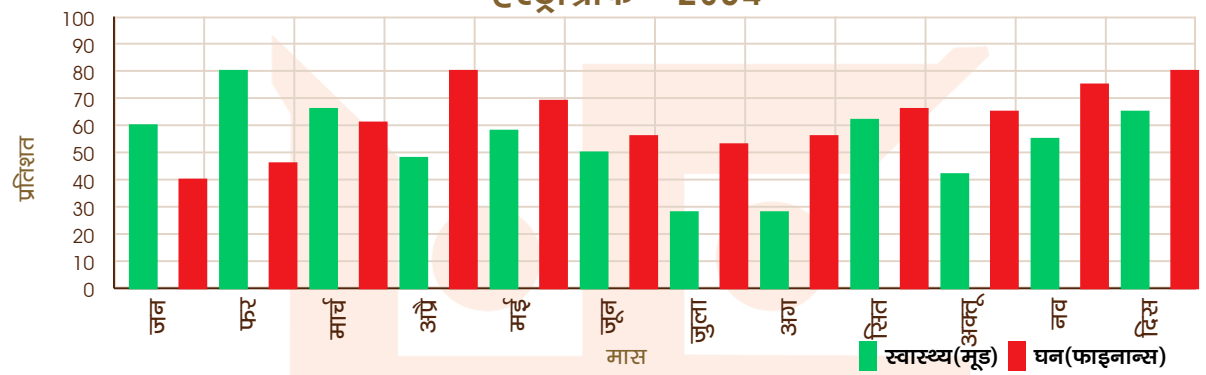

एस्ट्रोग्राफ - 2035

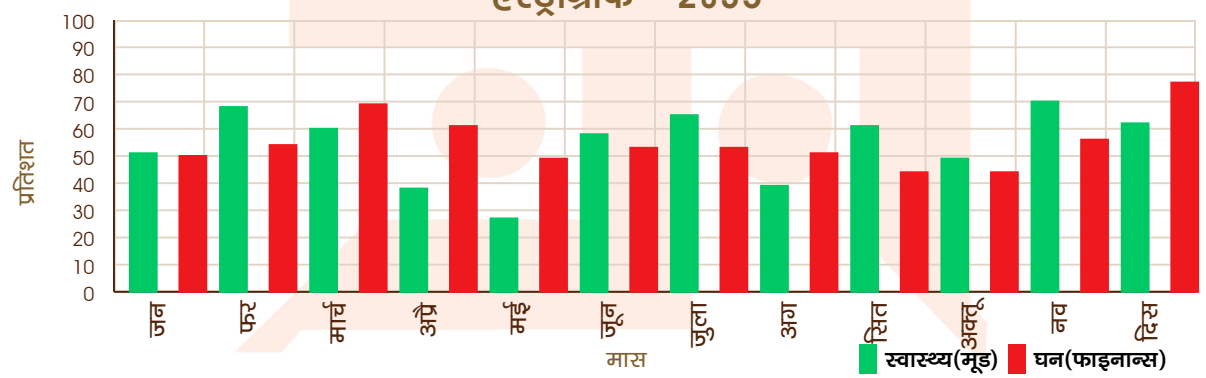

एस्ट्रोग्राफ - 2036

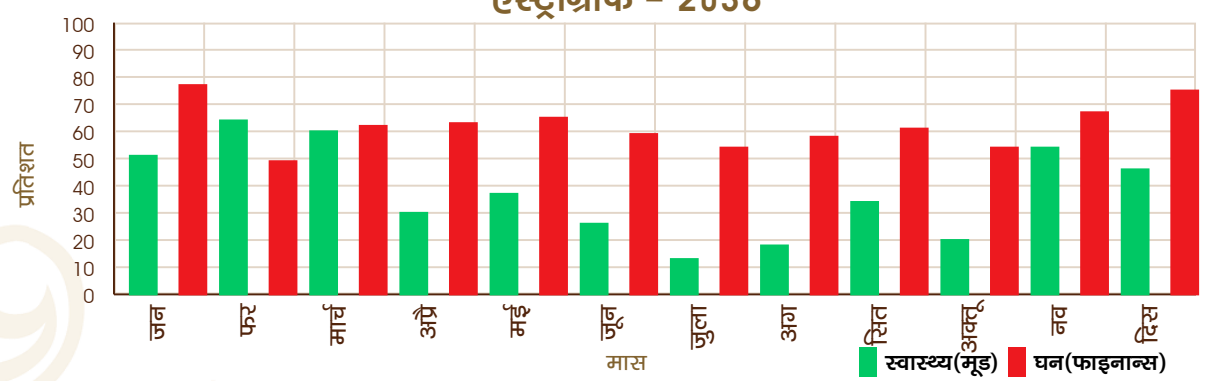

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

एस्ट्रोग्राफ - 2037

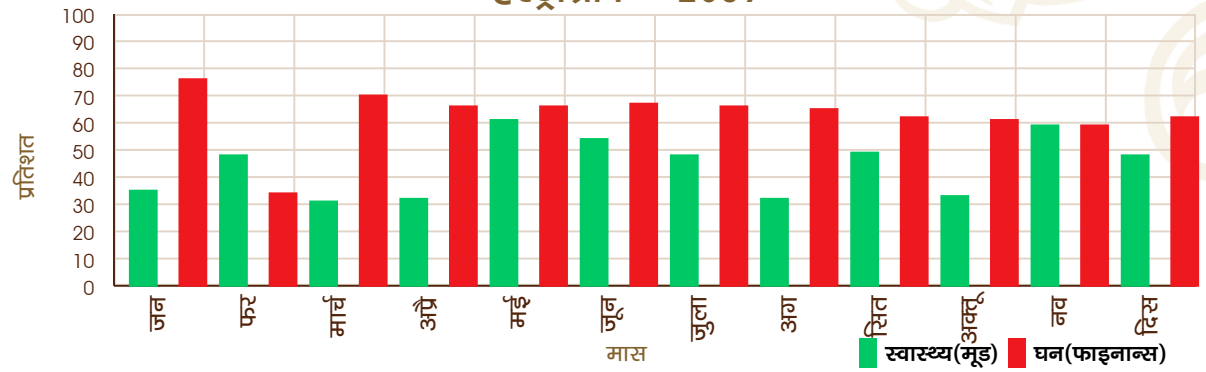

एस्ट्रोग्राफ - 2038

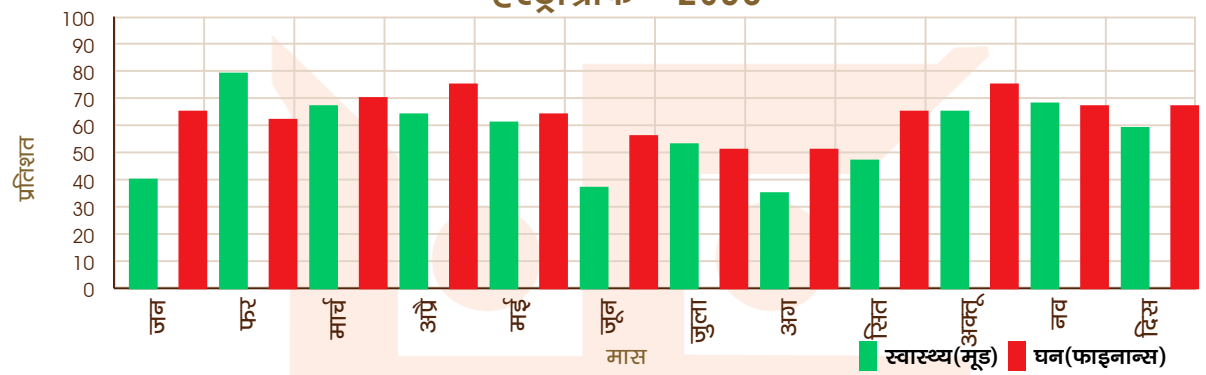

एस्ट्रोग्राफ - 2039

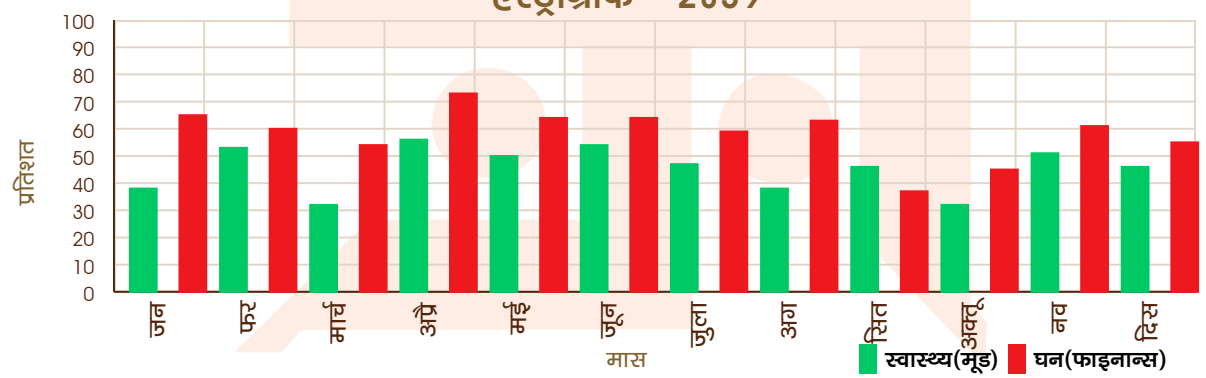

एस्ट्रोग्राफ - 2040

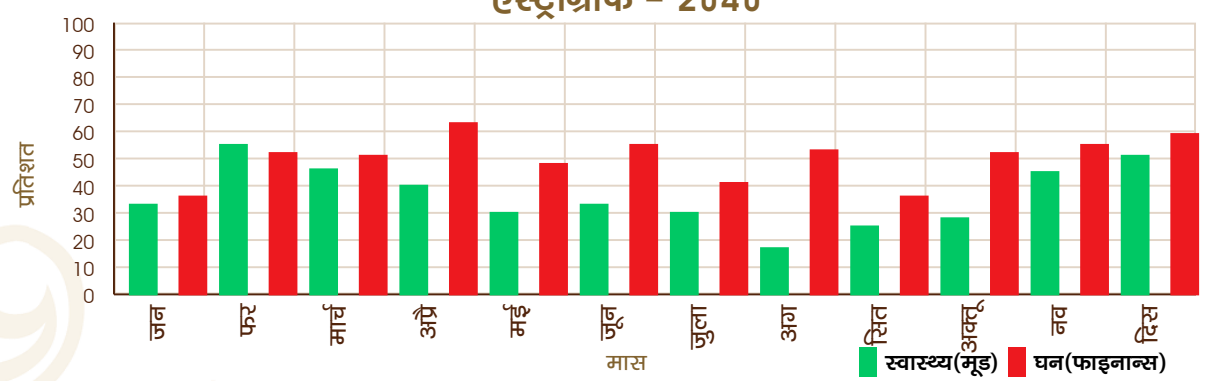

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

एस्ट्रोग्राफ - 2041

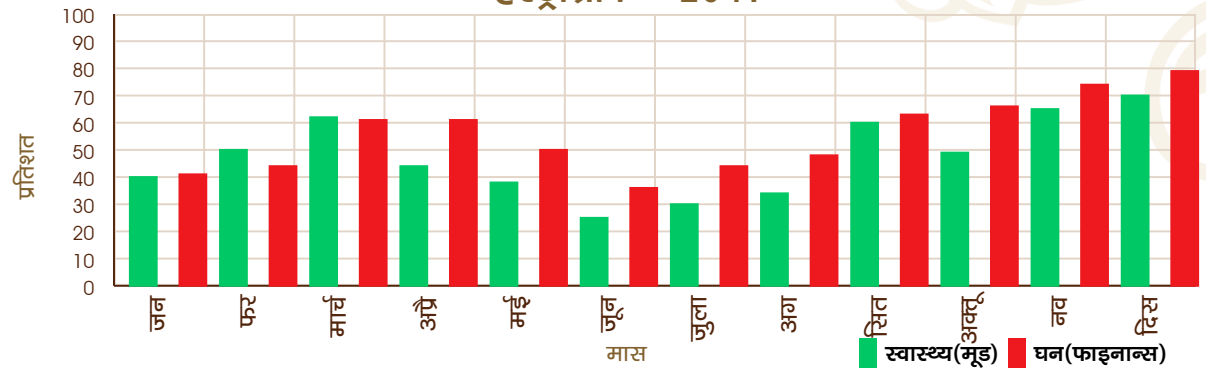

एस्ट्रोग्राफ - 2042

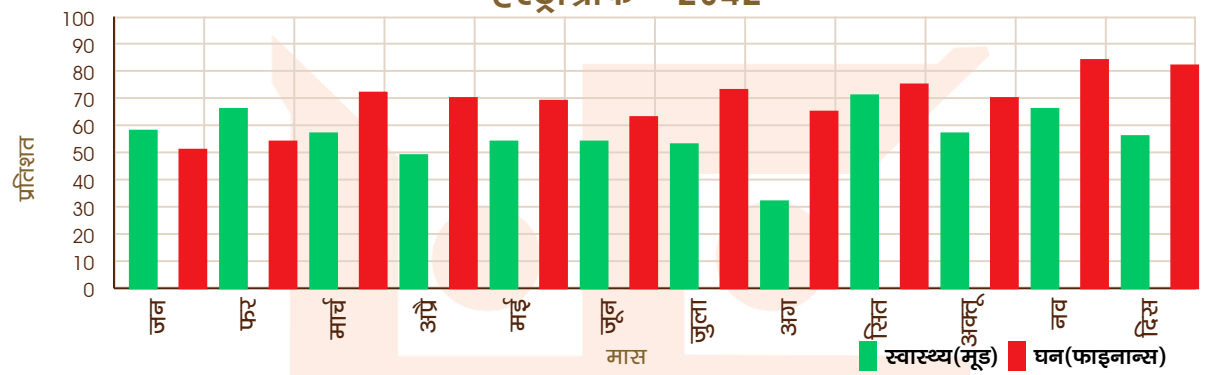

एस्ट्रोग्राफ - 2043

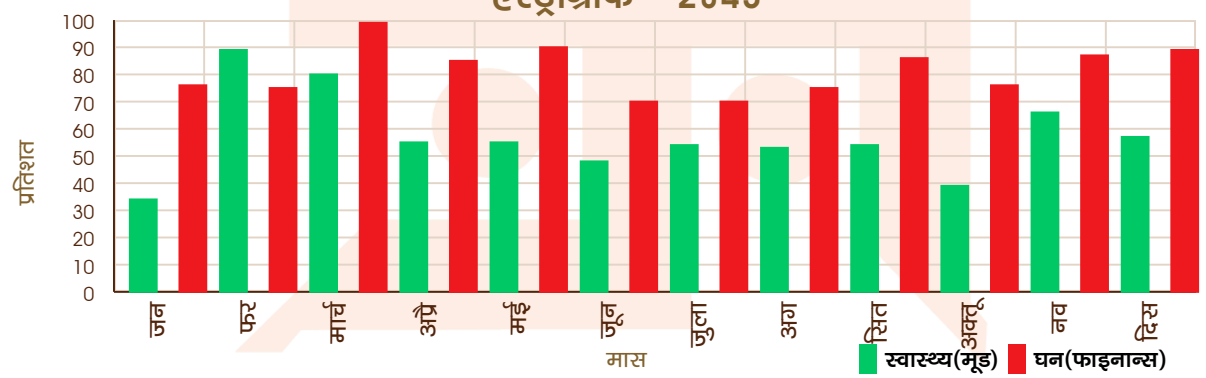

एस्ट्रोग्राफ - 2044

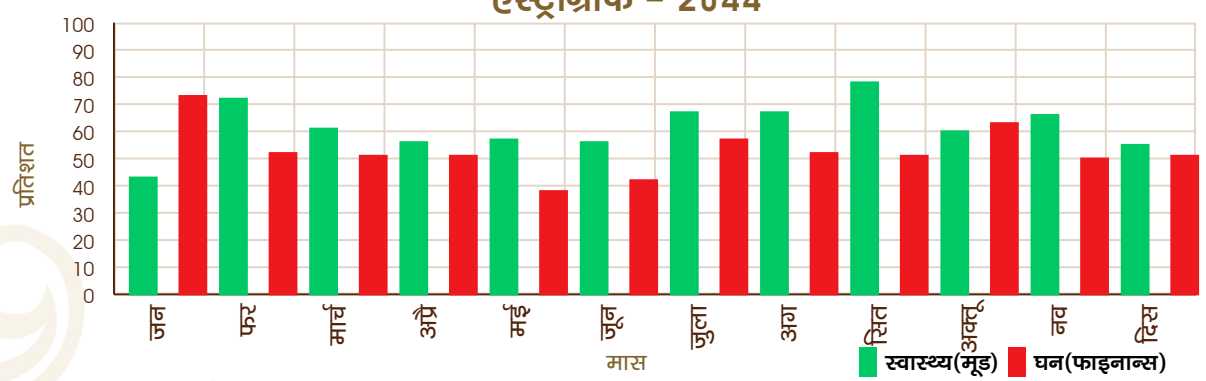

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

योग

रुचक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
दीर्घाः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरवलः साहसप्राप्तसिद्धि-
श्चारुभ्रूनीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्त्तिः।
रक्तःश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः ।
क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः।।
खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवाणा-
विज्ञाङ्कहस्तचरणः सरलाङ्गुलिः स्यात्।
मन्त्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं
मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्ध्यतुल्यम्।।
सह्यास्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिरायुरस्य।
शास्त्राग्निचिह्नोरुचकाभिधाने देवालयान्ते निधनं प्रयाति।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 3-5 ।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर मंगल केन्द्र में हो तो रुचक नामक योग बनता है।

इस योग वाला जातक दीर्घायु होता है। वह सुन्दर कान्ति, शक्तिशाली, साहसी, यश प्राप्त करने वाला, महावीर, मन्त्रवेत्ता, शत्रुओं को भय दिखाने वाला, क्रूरप्रकृति वाला, गुरु वर्गो के समक्ष विनम्र, हाथ पैरों में खट्वाङ्ग (शिव अस्त्र विशेष), पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा, विद्या आदि रेखा होती है, ये चिह्न भाग्यशाली मनुष्यों के द्योतक हैं। अच्छी सम्मति देने वाला, युद्धादि अथवा मारणादि प्रयोगों में कुशल होता है। शस्त्राग्नि चिह्न से युक्त जातक देवस्थान के समीप मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में रुचक नामक महापुरुष योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। यह योग अत्यंत ही उत्तम माना जाता है। फलस्वरूप आप एक प्रभावशाली, पराक्रमी, विख्यात् एवं धनेश्वर्य से युक्त होंगे, तथा पराक्रम से उच्चराज योग की प्राप्ति करेंगे। आप सेना, इन्जीनियरिंग, मेडिकल, होटल एवं भवन निर्माण सम्बंधी क्षेत्र में उच्चस्तर प्राप्त कर सकते हैं।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।

।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,केतु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

भवन नाश योग

गेहाधिपे नाशगते यदि स्यात्पापेक्षिते तद्गृहनाशमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सुखभाव का स्वामी द्वादश भाव में पाप ग्रह से युत हो तो भवन नष्ट हो जाता है।

योग कारक ग्रह : राहु,शुक्र योग की संभावना : 48 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको भवन सुख से वंचित होना पड़े ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु,बुध योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-10 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,सूर्य,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप

पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-30 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,चंद्र,बुध,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

देवतुल्य अति दीर्घायु योग

न च केन्द्रगताः पापा न त्रिकोणे न नैधने।
तस्यायुरमरप्रख्यं निश्चयेन च कीर्त्यते।।
।। सारावली ।। अ.10/श्लो.-97।।

यदि जन्मपत्रिका में केन्द्र त्रिकोण या अष्टम भाव में पाप ग्रह न हों तो जातक की देवतुल्य आयु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे ।
शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-4 ।।

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।